बुन्देली गीत गोविन्द

पद्यानुवाद - पं. बाबूलाल द्विवेदी
संकलन - डॉ. राकेश नारायण द्विवेदी

वंदे महत्पुरुषस्तेचरणारविंदम्

महाकवि जयदेव विरचित

गीत गोविंदम्

का

बुंदेली पद्यानुवाद

अनुवाद

पं0 बाबूलाल द्विवेदी

मानस मधुप साहित्य रत्न आयुर्वेद रत्न

ग्राम छिल्ला (बानपुर जिला ललितपुर

मो0 9838303690

संकलन–संशोधन एवं प्राक्कथन

डॉ राकेश नारायण द्विवेदी

isbn 9788190891240

publisher Janki Publication] Neerajanam] Rawatyana] Lalipur Uttar Pradesh Mob- 9838303690

Rs- 200

Copyright: Publisher

Bundeli Geet Govind

Poetry translation from Geet Govindam of Jaidev from Sanskrit to Bundeli

Translated by pt- Babulal Dwivedi

Contributed by Dr Rakesh Narayan Dwivedi

Senior Asstt. Professor in Hindi

Gandhi Mahavidyalaya, Orai (Jalaun) up

Mob. 9236114604

Email. rakeshndwivedi@gmail.com

प्राक्कथन

भौतिकवादी संस्कृति की चकाचौंध के बीच साहित्य में रमना जितनी बड़ी साधना है उससे बड़ी साधना लोक–भाषा के साहित्य की साधना करना है, क्योंकि इसमें व्यापक ख्याति मिलना अत्यंत दुर्लभ होता है। साहित्यकार को एक छोटे से दायरे में सीमित रह जाने का क्षोभ रहता है, अतिसीमित संसाधनों में रहकर इसका प्रकाशन विरल होता है, क्योंकि क्षेत्रीय भाषा में गंभीर पाठकों का अभाव जो होता है। बुंदेली लोक भाषा में जो साहित्य रचा जा रहा है, उसके प्रोत्साहन और साहित्यकारों का उत्साहवर्धन करने वाले व्यक्ति और संस्थाएं इस अंचल में कार्य कर रही हैं।

राजनीतिक रूप से देश के दो बड़े प्रांतों में विभक्त, किंतु सांस्कृतिक इकाई के रूप में चिर–परिचित बुंदेलखंड की संस्कृति और समाज पर पाश्चात्य सभ्यता का प्रभाव अभी भी उतना नहीं पड़ सका है, जितना अन्य बोली–क्षेत्रों के समाजों पर। कदाचित् विकास के आधुनिक पैमानों पर खरा न उतरने के कारण ही इस क्षेत्र को पिछड़ा माना जाता है, अन्यथा बुंदेलखंड में पंजाब का–सा शौर्य, राजस्थान का–सा पुरातत्व और महाराष्ट्र की–सी कला–संस्कृति की समृद्धि दिखाई देती है। इस समृद्ध सांस्कृतिक विरासत के साहित्यिक पक्ष को अपने मूल रूप में संरक्षित और जीवंत करने का कार्य यहां के लोक अध्येता बिना प्रलोभन कर रहे हैं, जिनमें से एक बाबूलाल द्विवेदी हैं। लोक अध्येता होने की बुनियादी शर्त है कि वह लोक में रमण करे, बिना इसके उसका लोक अध्ययन वायवी और एकांगी होगा उसमें प्रामाणिकता और अनुभूति की सघनता नहीं होगी। लोक का मूल स्वरूप आज भी गांव में ही देखा जा सकता है । एक जुलाई छियालीस को जन्मे श्री द्विवेदी शहरों में निवसित अपने पुत्र–पुत्रियों और उनके परिवारों के साथ न रहकर ललितपुर जनपद के लघु ग्राम छिल्ला (बानपुर) में रहकर ही साहित्य–साधना में लीन हैं। शायद ऐसे लोक अध्येताओं के लिए आधारभूत सामग्री के स्रोत आज भी ये गांव ही हैं। श्री द्विवेदी साहित्य के साथ–साथ कर्मकांड, दर्शन–आध्यात्म, पुराण–उपनिषद और आयुर्वेद चिकित्सा के भी मर्मज्ञ हैं। आपकी मनीषा नाना पुराण, निगमागम और स्वांतः सुखाय की तुलसी परंपरा की सतत प्रवाही है। आयुर्वेद से संबंधित आलेख धन्वंतरि इत्यादि पत्रिकाओं में तो बुंदेली और हिंदी भाषा के आलेख मनन, चिंतामणि तुलसी साहित्य–साधना सुधानिधि, कल्याण और उसके विशेषांकों में प्रकाशित हुए हैं। क्योंकि आपका प्रमुख कर्मक्षेत्र शुद्ध, सात्विक और संतोषी स्वभाव का पौरोहित्य है, पौरोहित्य में कोई अनुष्ठान और विधि क्यों संपन्न की जाती है, इसकी सचेष्टता के कारण आपने इस क्षेत्र में भी नई उद्भावनाएं की हैं। इसलिए संस्कृत भाषा का संस्कार

स्वाभाविक रूप में आपकी भाषा–शैली में परिलक्षित होता है। उच्च शिक्षा की विभिन्न उपाधियों से आप वंचित रहे, पर स्वाध्याय और सत्संग से ज्ञान, वक्तृता, शोध और अनुभूतियों की जिन ऊंचाइयों को आपने उपलब्ध किया, उसे देखकर अच्छे पारखी और विद्वान आपकी नवनवोन्मेषशालिनी प्रतिभा का लोहा मानते हैं।

इन पंक्तियों के लेखक के आप पिता हैं। यों, हो हर पुत्र को अपने पिता पर गर्व होता है या होना चाहिए, यह स्वाभाविक है किंतु मै अपने को विशेष सौभाग्यशाली मानता हूं, क्योंकि शिक्षा उपाधि संपन्न होने के बावजूद अद्यावधि मैं सर्वदा आपके दिए मार्गदर्शन से लाभान्वित होता रहता हूं। संस्कृत और उर्दू भाषा का जो तनिक संस्कार और हिंदी का किंचित् परिष्कार मेरे अंदर मौजूद है, उसमें सर्वप्रमुख योगदान आपका ही है।

आपके बुंदेली साहित्य, इतिहास एवं संस्कृति से संबंधित विविध लोक विषयों पर लिखे गए आलेख और कविताएं विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं, अभिनंदन ग्रंथों में और आदिवासी लोककला अकादमी भोपाल से प्रकाशित हुए हैं। कविताएं और वार्ताएं दूरदर्शन केंद्र भोपाल और आकाशवाणी छतरपुर से प्रसारित हुईं हैं। पराशर संहिता का संस्कृत से हिंदी में किया गया आपका अनुवाद हिंदी में अप्राप्त साहित्य को उपलब्ध कराने की दृष्टि से स्तुत्य है। यह प्रकाशित भी हो चुका है।

बुंदेली में गीतगोविंद अभी तक आया नहीं था, जिसकी लहरी में विद्यापति, सूरदास और अष्टछाप के मूर्धन्य साहित्यकारों का अभ्युदय हुआ। हिंदी साहित्य का स्वर्णयुग माने गए भक्तिकाल का एक बड़ा हिस्सा गीतगोविंद की भावभूमि पर ही अवलंबित है। गीतगोविंद में श्रंगार और भक्ति का जो मणिकांचन संयोग हुआ है, उसे किसी अन्य बोली या भाषा में उतारना कवि के लिए अत्यंत दुष्कर है। भक्ति के विविध प्रकार हैं। भक्ति श्रंगार की ही अन्य रूप है और इसीलिए गीतगोविंद मुख्य रूप से श्रंगारी रचना है। इसमें श्रंगार रस के जिन संचारी भावों का वर्णन हुआ है, उसे किसी व्यक्ति द्वारा अभिव्यक्त करना भी लोकरीति के अनुकूल नहीं समझा जाता। गीतगोविंद के कवि जयदेव ने सैकड़ों–हजारों वर्ष पूर्व अपने इष्ट राधा–कृष्ण के रास–रूप के अंग–प्रत्यंग, भाव–अनुभाव को जो वाणी दी, उसे आज का समाज प्रचलित लोकरीति के कारण व्यक्त नहीं करता। अनुवादक ने इस लोकरीति का निर्वाह अपने उपास्य–उपासक भाव में रहते हुए मर्यादापूर्ण शब्दों में व्यक्त करते हुए किया है। जहां यदि रचना के मूल भाव को संरक्षित करने की विवशता के चलते कहीं शब्दों में खुलापन आया भी है तो उसमें उपास्य–उपासक भाव की प्रतिष्ठा पूर्णरूपेण सुरक्षित बनी हुई है।

हिंदी गीत काव्य अपनी परंपरा के लिये संस्कृत साहित्य का ऋणी है । वैदिक साहित्य के पश्चात् हमें जयदेव के गीत गोविंदम् में सर्वप्रथम गीतकाव्य का उन्नत एवं परिष्कृत रूप दिखाई देता है । यह ग्रंथ विद्यापति की पदवल्लरी और सूरदास एवं कृष्णकाव्यधारा के कवियों

और भक्तों का प्रेरक बना । यही नहीं, वर्तमान में जो स्त्री विमर्श मुख्यधारा का साहित्य बना हुआ है, उसका उत्स भी इस ग्रंथ में पूर्ण काव्यत्व और लालित्य के साथ दृष्टव्य है

कनकनिकषरुचिशुचिवसनेन ।

श्वसिति न सा परिजनहसनेन ।।

सखि या रमिता वनमालिना ।।७—६।।

सोनें सौ पीतांबर हरि कौ मुरली तानें दै रइ।

पिय के संग संभोग खों सुनकें सखियां तानें दै रइं ।

तानें और मसखरी सुन कें आली तौउ हरस रइ।

बनमाली के संगै रैकें का हम घाइं तरस रइं।।

मुझे विश्वास है कि इस कृति के परंपरागत गीत और संगीत की लहरियों में कविर्मनीषी न केवल भावनिमग्न होंगे, अपितु वे इसे समसामयिक साहित्यिक स्थापनाओं और विमर्शों के आलोक में भी परखेंगे ।

दीपावली 2014 **राकेश नारायण द्विवेदी**

अनुवादकस्य निवेदनम्

रसभाव वल्लभोकृष्णः श्रंगस्य आरः स्वयम्। नमः आत्मानुरूपाय राधायै माधवाय वा।।

विष्णुस्वामी समारंभाम् जयदेवादि मध्यमा। श्रीमद् वल्लभपर्यंतास्तुमो गुरु परंपराम्।।

सामोद दामोदरश्चादौ, सर्गश्चाक्लेश केशवः। मुग्ध मधुसूदनश्चौव स्निग्धः मधुसूदनः।।

साकांक्ष पुंडरीकाक्षः धन्यबैकुंठ कुंकुमः। नागर नारायणप्रोक्तः विलक्षण लक्ष्मीपतिः।।

नवमोमुग्ध मुकुंदस्यात् दशमें चतुर चतुर्भुजः। सानंद गोविंदस्यांते सुप्रीत पीतांबरः।।

गीत गोविंद काव्येषु सर्गाः द्वादशमुत्तमाः। बुंदेली पदमयी टीका मधुपस्य मनमोदिका।।

अखण्डानन्दवोधायै , शिष्य संताप हारिणे।

सच्चिदानन्दरूपाय , तस्मै श्री गुरुवे नमः।।

उस समय इस अकिंचन की लेखनी द्वारा आन्ध्र प्रदेश के तिम्म समुद्रम् यूनिवर्सिटी में संस्कृत विभागाध्यक्ष डॉ0 अन्नदानं चिदम्बरं शास्त्री द्वारा संकलित प्राचीन संस्कृत ग्रन्थ पराशर संहिता (हनुमच्चरितम्) का हिन्दी अनुवाद 'हनुमत साधना' पत्रिका में धारा वाहिक रूप से प्रकाशित हो रहा था। 'बुन्देली शब्दकोश' के प्रणेता विद्यागुरु डॉ0 श्री कैलाश बिहारी जी द्विवेदी ने उस अनुवाद के साथ दास की **'भइया अपने गाँव में'** प्रति का अवलोकन करते हुये कविवर पं0 जयदेव द्वारा लिखित 'गीतगोविन्दम्' का बुन्देली में अनुवाद करने की जिज्ञासा प्रकट की। आज्ञा शिरोधार्य कर उनके द्वारा प्रदत्त गीतगोविन्द को पढा। इससे पूर्व पुस्तक का सिंहावलोकन मात्र ही किया था।

श्री मद्भागवत पुराण तथा महाभारत में कृष्ण की कथा के साथ राधा का उल्लेख नहीं मिलता है। उनतीस उप पुराणों में महत्वपूर्ण 81 अध्यायों में गुम्फित मात्र 4460 श्लोकों वाले महा भागवत (देवीपुराण) में एक आख्यामिका वर्णित है। एक बार भगवान शिव ने एकान्त में पार्वती जी से नारी जन्म की सार्थकता और सुन्दरता की प्रशंसा करते हुये अभिलाषा प्रकट की; कि हे देवी! अब की बार तुम पृथ्वी पर कहीं भी पुरुष रूप में अवतार लो, और मैं स्त्री रूप में अवतार लूँगा।

अम्बा पार्वती ने स्वीकार करते हुये वसुदेव–देवकी नन्दन श्री कृष्ण के रूप में तथा शंकर जी ने बृज में ही वृषभान–कीर्ति की सुता श्री राधा के रूप में अवतार लिया।

पुं रूपेण जगद्धात्रि प्राप्तायां कृष्णतां त्वयि।

वृषभानो सुता राधा, स्वरूपाहं स्वयं शिवो।। *महाभागवत 49–20*

परवर्ती कतिपय उपनिषद,संहिता पुराणादिकों में इसी आधार पर कृष्ण (पार्वती) की परमाराध्या राधा (शिव) को स्वीकार किया है।

कृष्णेन आराध्यात् इति राधा। कृष्णं समाराधयति सदेति राधिका।। *राधिकोपनिषद*

ब्रह्म वैवर्त्तक पुराण में परमात्मा श्री कृष्ण तो प्राणाधिष्ठातृ राधा को प्राणों से भी अधिक– प्राणेम्योऽपिगरीयसी मानते हैं। श्री मद्भागवत में अनयाराधितोनूनम् की व्याख्या करते हुये रासेश्वरी राधा को श्री कृष्ण की प्रेयसी भी और आराध्या भी विद्वान स्वीकार करते हैं।

वैष्णव चतुः सम्प्रदायों में एक निम्वार्क सम्प्रदाय है। दसमी शताब्दी में दक्षिण के हैदरावाद वैदूर्य पत्तन के पैठण (दक्षिण की काशी के नाम से प्रसिद्ध) ग्राम में ब्राह्मण अरुण की पत्नी जयन्ती के गर्भ से कार्तिक शुक्ल पूर्णिमा को पं0 निगमानंद का जन्म हुआ। वही वर्तमान नीमगाँव (ब्रज) में आकर निम्वार्काचार्य के नाम से प्रसिद्ध हुये। गुरू परम्परा में क्रमशः राधा राधा नाम (राधे राधे) संकीर्त्तन प्रवर्तक माने जाते हैं। इसी सम्प्रदाय में दीक्षित पं0 जयदेव जी भी हुये। जिन्होंने संस्कृत में ''गीतगोविन्दम'' तथा बँगला भाषा में ''राधा कृष्ण गीत'' का प्रणयन किया। किन्दुविल्व ग्राम निवासी पं0 भोजदेव की पत्नी (रामा देवी) राधा देवी के गर्भ से जन्म लेने वाले, वाणी के गुम्फ वैशद्य के परम पारखी, वाक्य सन्दर्भ शुद्धि के जानकार, पद्मावती के पति पं0 जयदेव तत्कालीन बंगाल नरेश लक्ष्मण सेन (तेरहवीं शताब्दी के पूर्वाद्ध) के आश्रित कवि थे।

गीतगोविन्द–वारह सर्गों और 24 प्रबन्धों में राधा–माधव और सखी (दूती) इन तीन पात्रों के विचारों का सन्धान– विचित्र कविता रूपी महाधन का निधान–सरस कृष्ण क्रीडा लीला वितान– संसार ताप संतप्त कवि जनों का विश्राम स्थान– इस गीति काव्य की अष्टपदी दक्षिण एवम् उत्तर के समस्त मन्दिरों में ही नहीं संगीत सभाओं आदि में आज भी भारतवर्ष में बडे ही मनो योग से गायीं जाती हैं।

जहाँ एक और समूचे इस काव्य में अलंकारों की सजी सी प्रदर्शनी सुपाठकों को दर्शनानन्दन की रूप सुधा का पान कराती है, तो वहीं इस सर्वोत्कृष्ट क्रत्स्न किंवा कोमल कान्त पदावलियों का विभिन्न राग रागिनियों में गायन सुनकर श्रोताओं को श्रवणानन्द से मुग्ध कराती है। आत्मरस रसिकों को तो यह श्री मद्भागवत के दसमस्कन्ध अध्याय 29 से 33 तक में वर्णित रासपंचाध्यायी सदृंश आत्मानन्द की अनुभूति कराती है। मानो युगल गीत के 24 श्लोकों के समग्र भाव ही हमें गीतगोविन्द के 24 सर्गों में मिलते है।

'विद्यार्णव' तन्त्र ग्रन्थ में वर्णित काम के– अनंग, स्मर, मन्मथ, मार और काम इन पाँचों रूपों का तथा– रति, विरति, प्रीति, विप्रीति, मति, दुर्मति, धृति, विधृति, तुष्टि और वितुष्टि का एवम् काम काम की इन दसों वल्लभाओं और की – अनंगरूपा, मदनातुरा, पवनवेगा, भुवनपाला, सर्वसिद्धिदा, अनंग मदना और अनंग मेखला इन काम की समस्त शक्तियों का अतिरेक में वर्णन विरक्तों की श्लील भावनाओं वर वरवरा बज्राघात सी करती हुयी अश्लीलानुमोदित वर्तमान में अनावश्यक सा लगता है। किन्तु विधि हरि हर हृदयाकर्षक

पंचकुसुम सायकाधिपति विचित्र चरित्र अनिर्वचनीय काम का (प्रद्युम्न) रूप राम (कृष्ण) तनय के रूप में वन्दनीय भी है।

शम्भुः स्वयम्भु हरियो हरिणेक्षणानां ,येनाः क्रियन्ति सततं गृहकर्मदासाः।

वाचामगोचर चरित्र विचित्रताय , तस्मै नमो भगवते कुसुमायुधाय।।

मलयज समीर सारथी तथा मंत्री बसंत के साथ मनःरथारूढ मत्स्यध्वज रतिनाथ के उत्पल (नीलकमल) अशोक, आम्र, मल्लिका एवम् पद्म (रक्तकमल) के पुष्पों से निर्मित पाँचों वाणों से यह सभी संसार घायल है उन्हीं वाणों की परिणति ही जीवन में शोषण, दीपन, सम्मोहन, तापन एवम् उत्पादन के रूप में गोचरित हो रही है।

गीतगोविन्द के गायन वादन द्वारा राधा कृष्णाराधन की प्रथा को राधा वल्लभ सम्प्रदाय प्रवर्तक श्री हित हरिवंश जी ने वर्तमान ऊँचाईयों तक पहुँचाया। देववन्द(सहारनपुर) निवासी पं0 व्यास मिश्र की पत्नी तारा देवी के गर्भ से मोहिनी एकादशी को जन्म लेने वाले यह भक्त कवि पापांकुशा एकादशी तक 79 वर्ष की पूर्णायुपर्यंत जीवन के उत्तरार्द्ध के 24 वर्षों (सं. 1609 वि.) तक वृन्दावनमें भावुक रसिकों को आनन्द प्रदान करते रहे। उन्होंने 170 छन्दों में गुम्फित 'राधा सुधानिधि' स्वलिखित पुस्तक में गीतगोविन्द का प्रथम शार्दूलविकीर्डित छन्द 'मेघैर्मेदुरमम्बरे0.....' अपने मंगलाचरण में यथावत रख काव्य की महनीयता को अक्षुण्ण रखा।

भारतीय ही नहीं विश्व की विभिन्न भाषाओं में इसकी अनेकों टीकायें विद्वानों ने की हैं। *SONGS OF SONGS* नाम से पाश्चात्य विद्वान आरनाल्ड द्वारा आँग्ल भाषा में भावानुवाद के भाव तो अत्यन्त ही मोहक हैं।

इस प्रबन्ध गीति काव्य की प्रख्यात टीकाओं में रस मँजरी–रसिक प्रिया, सँजीवनी, पद द्योतनिका– बालबोधिनी– दीपिका– भावप्रकाशिका आदि प्रमुख हैं।

बुन्देली भाषा में भावानूदित यह मनः रंजनी टीका रसिक भावुक भक्तों, उपासकों के कर कंजो एवम् श्रृंगार रस सुधासार वृन्दाबिपिन बिकुंज बिहारी युगुल सरकार के श्री चरणों में मन के समस्त भाव कुभाव विकारों के परिमार्जन प्रार्थना सहित सादर समर्पित है।

श्री राधामाधव स्वयं मूर्तिमान श्रृंगार। सब श्रृंगारन को प्रगट, इनहीं सों श्रृंगार।।

गूढभाव अंकुर सोइ,श्रृंग नाम विख्यात। आर नाम रस कौ कहो, सो श्रृंगार कहात।।

प्रथम नाम आनंद है पाछे परमानंद। पूर्णानन्द आनंद श्री कृष्ण सच्चिदानन्द।।

छिल्ला–बानपुर

15 दिसंबर 2014

कस्मिश्चित्

विदुषामनुचरः

पं0 बाबूलाल द्विवेदी

प्रथम सर्ग–

सामोद दामोदरम्

मेघैर्मेदुरमम्बरम् वनभुवः श्यामास्तमालद्रुमैः

नक्तम् भीरुरयम् त्वमेव तदिमम् राधे गृहम् प्रापय।

इत्थम् नन्दनिदेशितश्चलितयोः प्रत्यध्वकुञ्जद्रुमम्

राधामाधवयोर्जयन्ति यमुनाकूले रहःकेलयः १–१

बंसीवारे! आ तौ जारे सुना जाओ बैसइ बंसुरी।

बजत ऐन सुनि मिटत ठैन दिन रैंन मनइ मन में बसरी।।

जीनें सुनी बेउ भओ घायल कबै सुनें हम बा बाँसुरी।

फटकत ते हरकत ते तरकत गुरा गुरा पसुरी पसुरी।।

धन्न भाग हो जात सुनत जो मन रमजात मुकुंद में।

राधा माधव की छवि देखौ 'मधुप' गीत गोबिंद में।।1।।

वसंततिलकावृत्तम्

वाग्देवताचरितचित्रितचित्तसद्मा पद्मावतीचरणचारणचक्रवर्ती।

श्रीवासुदेवरतिकेलिकथासमेतम् एतम् करोति जयदेवकविः प्रबन्धम् १–२

सखियन संगै राधाजू के कृष्ण कन्हैया खेलत ते।

संगै उतइ बगीचन में के सखा जौन संगइं रत ते।।

दिन छूबे तब कई नंद ने ओ राधा बादर मड़रात।

ताड़ बिरछ कारें धुंअरारे इंदयारे में स्याम डरात।।

गैल बताकें घरै पठा दो सुन भए हरि आनंद में।

राधा माधव की छवि देखौ 'मधुप' गीत गोबिंद में।।2।।

द्रुतविलंबितेन

यदि हरिस्मरणे सरसम् मनो यदि विलासकलासु कुतूहलम्।

मधुरकोमलकान्तपदावलीम् शृणु तदा जयदेवसरस्वतीम् १–३

नँद बाबा की अग्या पाकें राधा हरि के संगै गइं।

जमुना तट की गैल बगीचन गुच्छन गुच्छन बौलें नइं।।

ताड़ रमन्ना फूले फर रए देखत कौनउं कौपें लइं।

बौंर झौर देखत मनमोहन खेलें जैजै बोले मइं।।

सबहो नित्त नई लीला की जै बोलो आनंद में।

राधा माधव की छवि देखौ 'मधुप' गीत गोबिंद में।।3।।

शार्दूलविक्रीडितेन

वाचः पल्लवयत्युमापतिधरः सन्दर्भशुद्धिम् गिराम्

जानीते जयदेव एव शरणः श्लाघ्यो दुरूहद्रुते।

शृङ्गारोत्तरसत्प्रमेयरचनैराचार्यगोवर्धन

स्पर्धी कोऽपि न विश्रुतः श्रुतिधरो धोयी कविक्ष्मापतिः १–४

कजन चाआं बानी के देउता अंतस भीतर आवें।
सरसुतिजू चरनन जस गाथा पदमावती सुनावें।।
वासुदेव रति खेल कथा खों एकउ ठौरें पावें।
और कितउं नइं जाय तलासन चित्त चितैबे जाबें।।
पड़ें सुनें उर मगन होंय ई कबि जैदेव प्रबंध में।
राधा माधव की छवि देखौ 'मधुप' गीत गोबिंद में।।4।।

हरि सुमरन में लगो रबै मन इतै उतै नइं भटकै।
कै रस कला विलास कुदाऊं जावे खों मन अटकै।।
कोमल कांत कवित कउं नौने कनसुर हो नइं खटके।
कबि जैदेव जीब की सरसुति सुनत रसइ रस टपकै।।
छंदहीन नइं सबद जितै नइं सबदहीनता छंद में।
राधा माधव की छवि देखौ 'मधुप' गीत गोबिंद में।।5।।

विद्यापती उमापति धर कबि कोकिल सुनतन अच्छे हैं।
सरन कवी सुनतन बजनी पै असर डारवे कच्चे हैं।।
छमा पती कै मिश्र पक्छ धर का कै रए सुनतन भूलत।
गोबरधन धो देत मस्त वे सिंगारइ में भूले रत।।
सभा पांच रतन के मुखिया रस जैदेव के छंद में।
राधा माधव की छवि देखौ 'मधुप' गीत गोबिंद में।।6।।

मालवरागे रूपकताले अष्टपदी– 1

प्रलयपयोधिजले धृतवानसि वेदम् । विहितवहित्रचरित्रमखेदम्

केशव धृतमीनशरीर जयजगदीशहरे अ प १–१

महाप्रलय में धरती भर पै जबइ जलई जल हो गव।

सबइ समुंदर इक दिल होकें एक समुंदर बन गव।।

मच्छराज शफरी कौ धर कें भेस बेद मौं चांपे।

जिनके चरित सुनत दूरइ सें दुख हल–हल कें कांपे।।

जै जगदीश हरे हे केशव! हम न परें दुख दंद में।

राधा माधव की छवि देखौ 'मधुप' गीत गोबिंद में।।1।।

क्षितिरतिविपुलतरे तवतिष्ठतिपृष्ठे ।धरणिधरणकिणचक्रगरिष्ठे

केशव धृतकच्छपरूप जयजगदीशहरे अ प १–२

भूमी भर कौ भारी भरकम जी की पीठ धरो है भार।

धरती धरें घिसी करयाई भइ चकार आकार।।

रतन काड़बे मथो समुंदर मँदराचल कौ सादो भार।

सबकौ दुक्ख मिटाबे आ गए धरकें जो कछवा औतार।।

वासुकि नाग कड़ैनियां खेंचत देव दनुज आनंद में।

राधा माधव की छवि देखौ 'मधुप' गीत गोबिंद में।।2।।

वसति दशनशिखरे धरणीतवलग्ना ।शशिनि कलङ्ककलेव निमग्ना

केशव धृतसूकररूप जयजगदीशहरे अ प १–३

हिरन्याक्छ दानों नें धरती जब समुंद में डारी।

जीव जंतु उकलान लगे ते मच गइ हाहाकारी।।

धरें सुअर कौ भेस चांप धरती दांतन में ल्या रए।

लगो डठूला चंदा में कालिख सी कला दिखा रए।।

जै जगदीश हरे हे केशव! सूकर रूप पसंद में।

राधा माधव की छवि देखौ 'मधुप' गीत गोबिंद में।।3।।

तव करकमलवरे नखमद्भुतशृङ्गम् । दलितहिरण्यकशिपुतनुभृङ्गम्

केशव धृतनरहरिरूप जयजगदीशहरे अ प १–४

खुद बन गव भगवान हठीलौ कइ न काउ की मानें।

भोंरा बनो हतो हिरनाकुस पर तिरियन के लानें।।

बिन हतयार देह दुस्टी की चीर हांत सें डारी।

लामी नोंक अनोखें नौंकें नारसींग अवतारी।।

जै जगदीश हरे हो रइ है तीन लोक नौ खंड में।

राधा माधव की छवि देखौ 'मधुप' गीत गोबिंद में।।4।।

छलयसि विक्रमणे बलिमद्भुतवामन । पदनखनीरजनितजनपावन

केशव धृतवामनरूप जयजगदीशहरे अ प १–५

हतो दानवन कौ राजा बलि दान करत तो भारी।

पै ऊकी सेना के डर सें सब कोउ हते दुखारी।।

छलबे उए बने बामन हरि बिरमाजू नें जाकें।

परकम्मा कर चरन पखारे गंगाजू मइ आकें।।

जै जगदीश हरे, बामन जग पावन भव आनंद में।

राधा माधव की छवि देखौ 'मधुप' गीत गोबिंद में।।5।।

क्षत्रियरुधिरमये जगदपगतपापम् । स्नपयसि पयसि शमितभवतापम्।

केशव धृतभृघुपतिरूप जयजगदीशहरे अ प १–६

जिन राजन के रकत में भर गव अत्याचारी पाप हतो।

करें उपद्रे संसारी खों देन लगे संताप हतो।।

उनके खून सें धो लव फरसा कटे पाप जग साफ सबइ।

भले हते बे राजा सुख में हो गए अपने आप सबइ।।

फरसराम भगवान भजो जगदीश हरे आनंद में।

राधा माधव की छवि देखौ 'मधुप' गीत गोबिंद में।।6।।

वितरसि दिक्षु रणे दिक्पतिकमनीयम् । दशमुखमौलिबलिम् रमणीयम्

केशव धृतरामशरीर जयजगदीशहरे अ प १–७

दस मौ को राक्छस भव राजा रावन जी कौ नांव।

देउता तक दहलात हते ते देखत क्रूर सुभाव।।

दसइ दिसाएं हल–हल कंपबें करकें जी कौ ख्याल।

बनकें राम दसइ मौं बलि दै खुसी करे दिगपाल।।

जै जगदीश हरे हे केशव राम रूप नौ खंड में।

राधा माधव की छवि देखौ 'मधुप' गीत गोबिंद में।।7।।

वहसि वपुषिविशदेवसनम् जलदाभम् । हलहतिभीतिमिलितयमुनाभम्

केशव धृतहलधररूप जयजगदीशहरे अ प १–८

नौने तन पै बादर जैसे सांवरे उन्ना मानो।

हर के डर सें डारें होबें जमुना पनो मुहानों।।

हरधर कौ तन नौनों जैसो जमुनाजी कौ पानी।

बलदाऊ की जै बोले सें होय सुद्ध मन बानी।।

जै जगदीश हरे बोलौ रओ मगन रोहिनी नंद में।

राधा माधव की छवि देखौ 'मधुप' गीत गोबिंद में।।8।।

निन्दति यज्ञविधेरहह श्रुतिजातम् । सदयहृदयदर्शितपशुघातम्

केशव धृतबुद्धशरीर जयजगदीशहरे अ प १–९

बेदमंत्र पड़ रए पसुअन की कर रए हिंसा भारी।
देखत ऐसे जज्ञ तामसी सो निंदा कर डारी।।
हिरदें दया देख कें पसु जिउ बुद्ध रूप औतारी।
सुद्धोदन माया घर जन्मे जग में भइ जैकारी।।
भगत उबारे परे न फिर बे कभउं जगत के फंद में।
राधा माधव की छवि देखौ 'मधुप' गीत गोबिंद में।।६।।

म्लेच्छनिवहनिधने कलयसिकरवालम् । धूमकेतुमिव किमपिकरालम्
केशव धृतकल्किशरीर जयजगदीशहरे अ प १–१०

नास मलेच्छन कौ करबे लओ कलकी कौ औतार।
पुच्छल तारे घाइं हांत लै लफलफात तरवार।।
सत्रु साल करबाल काल सी देखत दिपै कराल।
कल्कि सरीर भओ जगदीसुर मन के मिटे मलाल।।
जै जगदीश हरे हे केशव भजो रहो आनंद में।
राधा माधव की छवि देखौ 'मधुप' गीत गोबिंद में।।१०।।

श्रीजयदेवकवेरिदमुदितमुदारम् । शृणु सुखदम् शुभदम् भवसारम्।
केशव धृतदशविधरूप जयजगदीशहरे अ प १–११
इति श्रीगीतगोविंदे प्रथमः प्रबंधः

बन्न बन्न के रूप धरे दस उन केशव की जै हो।
कबि जै देव उदार भाव सुखदाता हरि की जै हो।।
तत्त रूप संसार सार हे भगतो! है जे गीत सुनो।
सुख दैबे मन मोद भरें नित भलौ करें हरि गुनहिं गुनौ।।
इस्तुति दस औतार चरित सुन सुखी रओ आनंद में।
राधा माधव की छवि देखौ 'मधुप' गीत गोबिंद में।।११।।

वेदानुद्धरते जगन्निवहते भूगोलमुद्दिबभ्रते
दैत्यम् दारयते बलिम् छलयते क्षत्रक्षयम् कुर्वते।
पौलस्त्यम् जयते हलम् कलयते कारुण्यमातन्वते
म्लेच्छान्मूर्च्छयते दशाकृतिकृते कृष्णाय तुभ्यम् नमः १।।

बउत जात धरनी खों काड़ो बेदन कौ उद्धार करो।
आतंकी छत्रिन खों मारे दइतन कौ संघार करो।।
हर खों देख हिलुर रइं जमुना, रावन, कंस मलेच्छ मरे।
सूकर, नरसिंग, मच्छ, कच्छ, बलि छलबे बामन रूप धरे।।
राम, कृष्ण, बलदाउ, फरसुधर, बुद्ध, कल्कि दस छंद में।
राधा माधव की छवि देखौ 'मधुप' गीत गोबिंद में।।१।।

गुर्जररागे प्रतिमंठताले अष्टपदी– 2

श्रितकमलाकुचमण्डल धृतकुण्डल ए ।

कलितललितवनमाल जय जय देव हरे अ प २ १

लक्छमीजू के कुच मंडल कौ लएं आसरौ बैठे जो।
देखत नीके लगें सुहाने कान कनोठी ऐठें जो।।
उमदा कोरैं फूलन की बनमाल सुहानी पैर गरें।
तुलसी मूंगा कमल चमेली फूल अकउवा बीच वरें।।
भै को भूत भगै सुमरन सें जै बोलें जग जाल जरें।
जनम सुफल हो जाय 'मधुप' जैदेव देव हे देव हरे।।1।।

दिनमणीमण्दलमण्डन भवखण्डन ए ।
मुनिजनमानसहंस जय जयदेव हरे अ प २ २

दिन महाज के कुटुम के ढकना दिनकर के दिल के गाने।
भजै जो ऊखों भौंतेरे में भूल भरमवे नइं जाने।।
मुनीजनन के मन मानस के हंसा मन की पीर हरौ।
हे दिनकर कुल कमल दिवाकर सरन तुम्हारी आन परौ।।
कबि जैदेव जाने के निजजन सुन बिनती दुख दूर करौ।
जनम सुफल हो जाय 'मधुप' जैदेव देव हे देव हरे।।2।।

कालियविषधरगञ्जन जनरञ्जन ए ।
यदुकुलनलिनदिनेश जय जय देव हरे अ प २ ३

कालीदह में रैकें कालिय जल खों दूसित कर रओ तो।
जीनें पियों बेउ भओ घायल जमना में बिस भर गओ तो।।
खेलत गेंद खूंद गरवीले नाग खों दूर भगा दओ तो।
जल कौ मिटा प्रदूसन जन जन में सुख आनँद भर दओ तो।।
बे जदुकुल कुल कमल कनइया मन की मंसा पूर करें।
जनम सुफल हो जाय 'मधुप' जैदेव देव हे देव हरे।।3।।

मधुमुरनरकविनाशन गरुडासन ए ।
सुरकुलकेलिनिदान जय जय देव हरे अ प २ ४

मधु खों मारो माधव बन गए मुर खों मार मुरारी।
नरक मार भए नरक निकंदन गरुडासन गिरधारी।।
दानौ दइत राक्छसन मारे धरती करी सुखारी।
देउतन के कुल मगन भए हँस खेलें रास बिहारी।।
मोहन मदन मुरारी माधव नरक निसूदन नांव परे।
जनम सुफल हो जाय 'मधुप' जैदेव देव हे देव हरे।।4।।

अमलकमलदललोचन भवमोचन् ए ।
त्रिभुवनभवननिधान जय जय देव हरे अ प २ ५

जैसें कमलन के दल होवें ऐसे निरमल नैंना।

उन नैंनन नें जीखों देखो बौ जगजाल फँसै ना।।

तीन लोक के रूप जौंन बे एकउ घर सें आए।

ऊ घर खों रुच रुच कें जिननें पैलउं पैल बनाए।।

तिभुवन भवन आदि कारन वे निसदिन हम पै दया करें।

जनम सुफल हो जाय 'मधुप' जैदेव देव हे देव हरे।।

जनम सुफल हो जाय 'मधुप' जैदेव देव हे देव हरे।।5।।

जनकसुताकृतभूषण जितदूषण ए ।

समरशमितदशखण्ठ जय जय देव हरे अ प २ ६

जनकसुता सें सोभा जिनकी सपने तकी न पर नारी।

मौसेरे भइया राउन के मारे खर दूसर भारी।।

गरवीले राउन के दस मौ रन में धूर चटा डारी।

दया करें भगवान राम वे बिस्नू के जो औतारी।।

भोंतेरे में परें न वौ जो सांसे मन से ध्यान धरे।

जनम सुफल हो जाय 'मधुप' जैदेव देव हे देव हरे।।6।।

अभिनवजलधरसुन्दर धृतमन्दर ए ।

श्रीमुखचन्द्रचकोर जय जय देव हरे अ प २ ७

जैसें नए जल भरे बादरा बैसउ सुंदर भेस धरें।

भाँत भाँत के रूप धरे उर देवतन के दुख दूर करें।।

श्रीजू कौ चंदा जैसौ मौं बने चकोर निहार करें।

ग्यान निधान जान अनजाने मन में आन विहार करें।।

भलौ करें भगवान आन भोरे भगतन की भीर हरें।

जनम सुफल हो जाय 'मधुप' जैदेव देव हे देव हरे।।7।।

तवचरणे प्रणतावयमिति भावय ए ।

कुरुकुशलम् प्रणतेषु जय जय देव हरे अ प २ ८

चरन सरन कौ तको आसरौ बिनती कर रए चरन परे।

सरन परे खों कभउं न त्यागो जेइ जान हम सरन परे।।

अपनों जान नाथ अपना लो अपनइं अपने भरे धरे।

आपौ छोड़ आपनो आऔ उऐ अपुन नें आप करे।।

कुसर राख दो जीवात्मा की परमातमा दोउ एक करे।

जनम सुफल हो जाय 'मधुप' जैदेव देव हे देव हरे।।8।।

श्रीजयदेवकवेरिदम् कुरुते मुदम् ए ।

मङ्गलमुज्ज्वलगीतम् जय जय देव हरे अ प २ ९

इति श्री गीतगोविंदे द्वितीयः प्रबंधः

कबि जैदेव सलोनी बानी नौनी लिखी गीत गोबिंद।

आनंदइ आनंद मन भरो जीनें पड़ो गीत गोबिंद।।

मनसा पूरी रय न अधूरी जीनें सुनो गीत गोबिंद।
पछयाने हरि फिरत रात दिन सुनवे ललक गीत गोबिंद।।
धरनी पै ढूंड़ें नइं मिलने ऐसे मंगल रहस भरे।
जनम सुफल हो जाय 'मधुप' जैदेव देव हे देव हरे।।1।।

पद्मापयोधरतटीपरिरम्भलग्न काश्मीरमुद्रितमुरो मधुसूदनस्य ।
व्यक्तानुरागमिव खेलदनङ्गखेद स्वेदांबुपूरमनुपूरयतु प्रियम् वः १।।

लक्छमीजू के कुच की केसर लगी कृष्ण की छाती में।
बन गओ प्रेम बाँट दव हरि ने मिलो जगत खों थाती में।।
हरि के हिरदें मुहर लगा दइ पदमावती परख मानो।
बिना लच्छमी कृपा मिलें भगवान मिलें नइं जग जानो।।
हरि खों आव पसीना सुनकें वे हरि सब के दुक्ख हरें।
जनम सुफल हो जाय 'मधुप' जैदेव देव हे देव हरे।।

वसन्ते वासन्तीकुसुमसुकुमारैरवयवैः
भ्रमन्तीम् कान्तारे बहुविहितकृष्णानुसरणाम् ।
अमन्दम् कन्दर्पज्वरजनितचिन्ताकुलतया
वलद्बाधाम् राधाम् सरसमिदमुचे सहचरी २।।

बियावान बन में बिहरत ते बने बसंत बिहारी।
सूने में राधा ढूंड़त तीं चड़ों काम जुर भारी।।

महुअन के फूलन सें कोंरी कोमल तन मतवारी।

हौलें–हौलें निगत देखकें हँसी सखी दै तारी।।

कै रइ कितै ढूंड़ रइं की खों मन में भारी आस करें।

लगो बसंत 'मधुप' सखियन सँग नच रए किसन बिहार करें।।२।।

वसंतरागे रूपकताले अष्ट पदी ३ माधव उत्सव कमलाकरम्

ललितलवङ्गलतापरिशीलनकोमलमलयसमीरे ।

मधुकरनिकरकरम्बितकोकिलकूजितकुञ्जकुटीरे ।

विहरति हरिरिह सरसवसन्ते ।

नृत्यति युवतिजनेन समम् सखि विरहिजनस्य दुरन्ते ।।ध्रुव0।। अ प ३–१

लोंगन की लांमी लांमी बौलन खों सोंधी सी कर रइ।

मलयाचल की हौले हौले हवा हिलोरें सी भर रइ।।

भौंरन की झोंरन की झौंरें बौरे फूलन पै गूँजें।

कुंजन कूकें कंठ कोयलें कुहू–कुहू सुर में कूजें।।

ज्वानी जोस भरो जोरुन में ओइ पै बिरह प्रहार करें।

लगो बसंत 'मधुप' सखियन सँग नच रए किसन बिहार करें।।1।।

उन्मदमदनमनोरथपथिकवधूजनजनितविलापे ।

अलिकुलसंकुलकुसुमसमूहनिराकुलबकुलकलापे अ प ३–२

प्रोसतपतिका अँसुआ ढारै पति परदेसै गैलारे।
मन मनमथ के हांत बिकानो मदन मनोरथ मथ डारे।।
उमड़ घुमड़ रए मौलसिरी के फूला झौरन झौंरा रे।
बिना पती के जुवती झूंकत देखत झूमत भौंरा रे।।
रती प्रीति के संगै मनमथ मनरथ चढ़ि मद मार करें।
लगो बसंत 'मधुप' सखियन सँग नच रए किसन बिहार करें।।2।।

मृगमदसौरभरभसवशंवदनवदलमालतमाले ।
युवजनह्रदयविदारणमनसिजनखरुचिकिंशुकजाले अ प ३–३

महक रईं सालन की रइं नइं कोंपें जैसें कसतूरी।
छेवले हो रए लाल लाल फूलन सें डार लदीं पूरीं।।
जैसें ज्वानन कौ जिउ चीरत चीरत हो गए लालइ लाल।
कामदेव के नुअंन घाइं वे छेउले लग रए बिन मिसाल।।
साल तमाल कोंपले छेउले फूला मन मनुहार भरें।
लगो बसंत 'मधुप' सखियन सँग नच रए किसन बिहार करें।।3।।

मदनमहीपतिकनकदण्डरुचिकेसरकुसुमविकासे ।
मिलितशिलीमुखपाटलिपटलकृतस्मरतूणविलासे अ प ३–४

सो नोनों नोनों सोने को डंडा जी में लग रओ।

केसर के फूलन से गो कें छत्ता सीस सुहा रओ।।

मदन महीपत के तरकस में पांच बान गरवीले।

आम असोक चमेली फूला कमल लाल उर पीले।।

मइं गुलाब के फूलन पै रस लोभी भौंरा भौंर भरें।

लगो बसंत 'मधुप' सखियन सँग नच रए किसन बिहार करें।।4।।

विगलितलज्जितजगदवलोकनतरुणकरुणकृतहासे ।

विरहिनिकृन्तनकुन्तमुखाकृतिकेतकदन्तुरिताशे अ प ३–५

देख मानसन खों इठला रए नए नए गुरजा वरनावंद।

बरछी जैसी हूलत ही में सोंदी सोंदी केउड़ा गंध।।

लजा लजा कें जग जग तक रए बरना रूख भरें मन सौंक।

बिरही मन खों कितउं लौंच रए केवड़ा जैसें बल्लम नोंक।।

जोगी संजोगी कान्हा खों देख वियोगी आह भरें।

लगो बसंत 'मधुप' सखियन सँग नच रए किसन बिहार करें।।5।।

माधविकापरिमललिते नवमालिकजातिसुगन्धौ ।

मुनिमनसामपि मोहनकारिणि तरुणाकारणबन्धौ अ प ३–६

बन्न बन्न के नए नए फूलन की सुगंध अलवेली।

मतवारी जीवंती बौलें संगै बास चमेली।।

मुनियन के मन खों मो लै रइं ज्वानन की का काने।

रितु बसंत तौ मीत होत है ज्वान जनिन के लानें।।

रति अरु प्रीत अनंग संग मनरथ चढ़ि मलय बयार करें।

लगो बसंत 'मधुप' सखियन सँग नच रए किसन बिहार करें।।6।।

स्फुरदतिमुक्तलतापरिरम्भणमुकुलितपुलकितचूते ।

बृन्दावनविपिने परिसरपरिगतयमुनाजलपूते अ प ३–७

आमन के पेड़न से बौलें लिपड़ीं जां जीवंती की।

जमना कौ जल भरे हिलोरें हाली फूलीं दोउ ढी कीं।।

मतवारी सुगंध खों पाकें पुलकित डार डार वन की।

जमना के जल से भइ पावन जा धरती बिंद्रावन की।।

तरनीजा के तट पै तरुनी तरु तरु तर तरतार तरें।

लगो बसंत 'मधुप' सखियन सँग नच रए किसन बिहार करें।।7।।

श्रीजयदेवभणितमिदमुदयति हरिचरणस्मृतिसारम् ।

सरसवसन्तसमयवनवर्णनमनुगतमदनविकारम् अ प ३–८

इति तृतीय प्रबंधः

हरि चरनन के सुमरन कौ जो लिखो सार कौ सार।

सरस समइया बन कौ बरनन और न कउं सिंसार।।

श्री जैदेव महाकबि कइए सरसुति के औतार।

मनरथ बैठे काम संग मंत्री बसंत असवार।।

'मधुप' गीत गोबिंद काव्य कौ आदर जग बिस्तार करे।

लगो बसंत 'मधुप' सखियन सँग नच रए किसन बिहार करें।।१।।

दरविदलितमल्लीवल्लिचञ्चत्पराग प्रकटितपटवासैर्वासयन् काननानि।

इह हि दहति चेतः केतकीगन्धबन्धुः प्रसरदसमबाणप्राणवद्गन्धवाहः १।।

अदखिले चमेली के फूलन को उड़रओ जौंन पराग हतो।

ऊ पराग की बास भरे उन्नन खों पैरें चलत हतो।।

मिंत केउड़न के फूलन कौ मलयाचल से चलो समीर।

बै रओ पवन लगत छाती में बन कें कामदेव कौ तीर।।

बन उपवन वन पवन झकोरें विरहिन जिउ बेजार करें।

लगो बसंत 'मधुप' सखियन सँग नच रए किसन बिहार करें।।1।।

उन्मीलन्मधुगन्धलुब्धमधुपव्याधूतचूताङ्कुर

क्रीडत्कोकिलकाकलीकलकलैरुद्गीर्णकर्णज्वराः।

नीयन्ते पथिकैः कथंकथमपि ध्यानानुधानक्षण

प्राप्तप्राणसमासमागमरसोल्लासैरमी वासराः २।।

मंजरियन सें कड़त बायरें जब रस के लोभी भौंरा।

हलत डुलत कँप जात छियत में आमन कौ झौरा झौरा।।

मौंर देख कोहलिया कूकें मीठे सुर बौरा बौरा।

मिल नइं पा रए मिलबौ चा रए आमन के घौरा घौरा।।

मिलबे कौ सुख सोस–सोस दिन रात 'मधुप' मन आस भरें।

लगो बसंत 'मधुप' सखियन सँग नच रए किसन बिहार करें।।2।।

अनेकनारीपरिरम्भसम्भ्रम स्फुरन्मनोहारिविलासलालसम् ।

रारिमारादुपदर्शयन्त्यसौ सखी समक्षम् पुनराह राधिकाम् ३।।

रमन बिहारी रमन लोभ में रमणी संग रमन्ना में।

कर रए रमन सखी राधा की देखत ती ठांड़ी सामें।।

ऊनें आकें कइ राधा सें करकें सेंन इसारें में।

जीव अनेक सुखी मन रै रए हरि के एक सहारे में।।

राधे नजर निसानौ सादौ दरसन कर रए नर नारी।

सोहत मोहत सखियन के संग 'मधुप' खेल रए बनवारी।।३।।

रामकरीरागे रूपकताले अष्ट पदी ४ सामोद दामोदर भ्रमर पदम्

चन्दनचर्चितनीलकलेवरपीतवसनवनमाली ।

केलिचलन्मणिकुण्डलमण्डितगण्डयुगस्मितशाली ।

हरिरिहमुग्धवधूनिकरे विलासिनि विलसति केलिपरे ।ध्रुव०। अ प ४–१

पीनपयोधरभारभरेण हरिम् परिरम्य सरागम् ।

गोपवधूरनुगायति काचिदुदञ्चितपञ्चमरागम्।

हरिरिह केलिपरे अ प ४–२

कौनउं गोपी हट्टी कट्टी भारी सी छतियन वारी।

हरि के ढिंगा पोंच कें हरि सें चिपकत जा रइ अवढारी।।

गुनगुनात कछु गाउत जात मइं मन मुस्का रए गिरधारी।

ऊंचे सुर में गाउन लगत बा पंचम सुर की उनहारी।।

भर कें नजर देख लो राधा चंदन पीतांबर धारी।

मोहित सखियन के समूह में 'मधुप' खेल रए बनवारी।।1।।

तन सें तन खों मिला तिल मिला तन कौ भार बता रइ।

नौनें स्याम सलोनें से बा तनकउ नइं सरमा रइ।।

हिलमिल तनमिल मनमिल दिलमिल सुर में सुरन मिला रइ।

बा बेसुरी बाँसुरी बा सुर सुन सुर धुन गुन गा रइ।।

रुकी बाँसुरी गाउन लगत तब ऊंचे सुर सें मतवारी।

मोहित सखियन के समूह में 'मधुप' खेल रए बनवारी।।2।।

कापि विलासविलोलविलोचनखेलनजनितमनोजम् ।

ध्यायति मुग्धवधूरधिकम् मधुसूदनवदनसरोजम् ।

हरिरिह केलिपरे अ प ४–३

आंख लड़ावें लड़या लिड़या हिन्नी से नैंनन वारी।
कौनउं चंचल मनचल बैठी अँखया रइ हरि खों भारी।।
गागौ ध्यान लगा कें देखत हरि मुख कमलहिं मतवारी।
ऐंन नैंन की सैंन काम तक कर रओ उथल पुथल भारी।।
माधव मधुरइ तक लो राधा मौं कमलन की उनहारी।
मोहित सखियन के समूह में 'मधुप' खेल रए बनवारी।।3।।

कापि कपोलतले मिलिता लपितुम् किमपि श्रुतिमूले ।
चारु चुचुंब नितंबवती दयितम् पुलकैरनुकूले ।
हरिरिह केलिपरे अ प ४–४

बड़े बड़े कूलन वारी कछू कैबो चाउत अहानो है।
कौनउं कान्हा के कानन में कैबे करत बहानो है।।
बड़े जतन सें ऊनें हरि खों अपने बस में जानो है।
कान्हा के मौंनो मौं करकें चूमत गाल सुहानो है।।
सुघर सलोनी के रस भींजत परम चतुर तन मन वारी।
मोहित सखियन के समूह में 'मधुप' खेल रए बनवारी।।4।।

केलिकलाकुतुकेन च काचिदमुम् यमुनाजलकूले ।
मञ्जुलवञ्जुलकुञ्जगतम् विचकर्ष करेण दुकूले ।
हरिरिह केलिपरे अ प ४–५

जमनाजू के दोइ ढियन की दाबें कोर मुहानी हैं।
बेंतन की बौलन की कुंजें लग रइं भौत सुहानी हैं।।
पकर दुपट्टा तानत हरि कौ देख लेओ राधा रानी।
उखरौ बूड़ौ खेलन चा रइ सिंगारी लीला जानी।।
असली खिलवइया खेलन के संगै खेलत गिरधारी।
मोहित सखियन के समूह में 'मधुप' खेल रए बनवारी।।5।।

करतलतालतरलवलयावलिकलितकलस्वंअवंशे ।
रासरसे सहनृत्यपरा हरिणा युवतिः प्रशशंसे ।
हरिरिह केलिपरे अ प ४–६

बंसीधर की बंसी बज रइ बन कौ बजन बड़ा रइ।
नचत आइ गोपी इक, हांतन चुरियां ककना खनका रइ।।
थप थप थपरी थाप देत कोउ ताल में ताल मिला रइ।
नेह निहारत नेह निहोरत बातउ पै है इठला रइ।।
कर रए खुद तारीफ नचत हरि मुस्का मुस्का गिरधारी।
मोहित सखियन के समूह में 'मधुप' खेल रए बनवारी।।6।।

श्लिष्यति कामपि चुम्बति कामपि कामपि रमयति रामाम् ।
पश्यति सस्मितचारुपरामपरामनुगच्छति वामाम् ।
हरिरिह केलिपरे अ प ४–७

कौनउं हरि सें लिपड़ जात हरि कौनउं कौ चूमा लै रए।

निहुर निहुर हरि नेह निहारत कितउं कितउं हरि मुस्का रए।।

कौनउं के संगै बिहार हरि कौनउं के पाछें जा रए।

बड़े भाग सखियन के जिनके संग रास नित नए नए।।

मधुर बिलासिनि राधा देखौ हो रए आतुर गिरधारी।

मोहित सखियन के समूह में 'मधुप' खेल रए बनवारी।।7।।

श्रीजयदेवभणितमिदमद्भुतकेशवकेलिरहस्यम् ।

वृन्दावनविपिने ललितम् वितनोतु शुभानि यशस्यम् ।

हरिरिह केलिपरे अ प ४–८

इति चतुर्थ प्रबंधः

जौन खेल खेलत हैं मोहन जानें कितने रहस भरे।

ललित ललित लीला बन उपवन सुन भगतन मन मोद करें।।

कबि जैदेव बखानें चुन चुन सबद अरथ गंभीर भरे।

पड़ें सुने बे सुखी रबें हरि सबकी मनसा पूर करें।।

नोंने नीके बन रबैं सब जै बोलो हरि दुखहारी।

मोहित सखियन के समूह में 'मधुप' खेल रए बनवारी।।8।।

विश्वेषामनुरंजनेन जनयन्नानानंदमिन्दीवर

श्रेणीश्यामलकोमलैरुपनयन्नङ्गैरनङ्गोत्सवम् ।

स्वच्छंदम् व्रजसुन्दरीभिरभितः प्रत्यङ्गमालिङ्गितः

शृङ्गारः सखि मूर्तिमानिव मधौ मुग्धो हरिः क्रीडति १।।

प्रेम और अनुराग बँटारत जो जग में आनंद भरें।

नीलकमल मौ रूप सांवरौ काम अंग मन चाओ धरें।।

ब्रजनारिन सें आँग जुड़ा सिँगरौ सिँगरौ सिंगार फिरै।

कंत सुतंत्र समंत महंत व संत बसंत कौ रूप धरें।।

खिलखिलात बे खेल खिलइया खुलकें खेलत सुखकारी।

मोहित सखियन के समूह में 'मधुप' खेल रए बनवारी।।1।।

नित्योत्संगवसद्भुजंगकवलक्लेशादिवेशाचलम्

प्रालेयप्लवनेच्छयानुसरति श्रीखण्डशैलानिलः।

किम् च स्निग्धरसालमौलिमुकुलान्यालोक्य हर्षोदयात्

उन्मीलन्ति कुहूः कुहूरिति कलोत्तलाः पिकानाम् गिरः २।।

मलयाचल चंदन के पेड़न सें भुजंग जो लिपड़े रत।

ताती सांसें लगी सपरवे बरफ कुदाऊं पवन भगत।।

हलत आम के मौर हवा सें मौलसिरी के झौंर हलत।

देख कोयलें हाली फूलीं मीठे सुर में गाउत फिरत।।

ठंडी हवा सुगंधी कौ सुख सब लै रए प्यारे प्यारी।

मोहित सखियन के समूह में 'मधुप' खेल रए बनवारी।।2।।

रासोल्लासभरेणविभ्रमभृतामाभीरवामभ्रुवाम्

अभ्यर्णम् परिरम्यनिर्भरमुरः प्रेमान्धया राधया।

साधु त्वद्वदनम् सुधामयमिति व्याहृत्य गीतस्तुति

व्याजादुत्कटचुम्बितस्मितमनोहरी हरिः पातु वः ३।।

रास विलास भौंर में भूलीं सखियन के देखत देखत।

आह प्रेम रस डूबीं राधा हरि खों अपने हांत भरत।।

मौ में इमरत भरो अपुन के जकड़त जा रइं राधा कत।

चूमें राधा हरि मुस्काबें देखत मन में मगन भगत।।

सब कौ मंगल करें समंगल चूमत झूमत गिरधारी।

मोहित सखियन के समूह में 'मधुप' खेल रए बनवारी।।3।।

इति श्री जयदेव कृतौ गीतगोविन्दे सामोददामोदरो नाम प्रथमः सर्गः

दामोदर आमोद भरे हैं डूबे आनंद सिंध में।

राधा माधव की छवि देखौ 'मधुप' गीत गोबिंद में।।एक।।

द्वितीय सर्ग

द्वितीय सर्ग– अक्लेश केशवम्

विहरति वने राधा साधारणप्रणये हरौ

विगलित निजोत्कर्षादीर्ष्यावशेन गतान्यतः।

क्वचिदपि लताकुञ्जे गुञ्जन्मधुव्रतमण्डली

मुखरशिखरे लीना दीनाप्युवाच रहः सखीम् २–१

बिंद्रावन में रहस रचा रए लीला कर रए नित नई।

सबइ गोपियन संग एक सौ हेम देख मन पीरा भई।।

तुर्त फुर्त इक सखी संग लै राधा लता कुंज में गइं।

मौं बतांव का? मोय भाग पै बौलें तक लिपड़ी हँस रइं।।

फूलन भौंरा फूलत गूँजत मोय भरोसौ है तोरौ।

हँसें विलासें कितउं हरी पै 'मधुप' उनइ पै मन मोरौ।।

गुर्जररागे रूपकताले अष्टपदी– ५ – मधुरिपु रत्न कण्ठिक

संचलदधरसुधामधुरध्वनिमुखरितमोहनवंशम् ।

चलितदृगंचलचंचलमौलिकपोलविलोलवतंसम् ।

रासे हरिमिह विहितविलासम् स्मरति मनो मम कृतपरिहासम् । ध्रुव० अ प ५–१

मो लए तीनउं लोक बाँसुरी तान भरत तानें दै रइ।

हरि ओंठन कौ इमरत पीकें बोल सुरीले सुर भर रइं।।
मोहन मुरली तौ बजाउत पै आंखें तौ चउवर चल रइं।
कानन के कुंडल मन मो रए मुकुट मनी दमकें नइं नइं।।
उनकी हँसी भले जिउ जारत उनसें लगन न मैं टोरौं।
हँसें विलासें कितउं हरी पै 'मधुप' उनइ पै मन मोरौ।।1।।

चन्द्रकचारुमयूरशिखण्डकमण्डलवलयितकेशम् ।
प्रचुरपुरन्दरधनुरनुरञ्जितमेदुरमुदीसुवेशम् अ प ५–२

सांवरे घनें बादरन जैसी केसव की जुल्फें चमकें।
ऐरावत हाँती की गैलन इंद्रधनुस जैसी दमकें।।
मोरन की भारक के चंदा रंग बिरंगे मुकुट सजे।
सखी सांवरे के सरूप हम फूले फिर रए गजे बजे।।
मारें चाय उबारें पालें राखें जौ जीवन थोरौ।
हँसें विलासें कितउं हरी पै 'मधुप' उनइ पै मन मोरौ।।2।।

गोपकदम्बनितम्बवतीमुखचुम्बनलम्भितलोभम् ।
बन्धुजीवमधुराधरपल्लवमुल्लसितस्मितशोभम् अ प ५–३

बैठ कदम के रूख छांयरे जो डारन डारन लूमत।
छरी अनौखे करयनवारी ग्वालिन के जौ मौ चूमत।।
हौलें हौलें हरि मुस्कावें ओंठ परत ऐसें भूले।

जैसें होय दुपरिया फूला नइ नइ कोंपन में फूले।।
बा मुस्कान छोड़ कें जग में ध्यान न कोउ सें मैं जोरौं।
हँसें विलासें कितउं हरी पै 'मधुप' उनइ पै मन मोरौ।।3।।

विपुलपुलकभुजपल्लववलयितवल्लवयुवतिसहस्रम् ।
करचरणोरसि मणिगणभूषणकिरणविभिन्नतमिस्रम् ५—४

नइ नइ कोंपे देख उगारें जैसे भरी पुलकत है।
हरि के हाँत हजारन गोपी फलकत कुलकत खुलकत हैं।।
माला रतन गरे हांतन पांवन में खनकत छनकत है।
उजयारौ हो जात मिटत इँदयाव जितै वे दमकत हैं।।
दरसन करौ रास के निसदिन जिउ की जोत न कउं जोरौ।
हँसें विलासें कितउं हरी पै 'मधुप' उनइ पै मन मोरौ।।4।।

जलदपटलवलदिन्दुविनन्दकचन्दनतिलकललाटम् ।
पीनपयोधरपरिसरमर्दननिर्दयह्रदयकवाटम् ५—५

उमड़त घुमड़त बीच बादरन चमकत जैसें चंदा होय।
हरि माथे चंदन कौ टीका दरसन सें दुख रहै न कोय।।
छरी छबीली छाती छी रए छतिया करैं करत किलोल।
बेउ हाँत मो पै धर देवैं जी सें चित्त न जाबै डोल।।
खुल जाबें हिय के किवार मैं तकों न औरन कौ दोरौ।

हँसें विलासें कितउं हरी पै 'मधुप' उनइ पै मन मोरौ।।5।।

मणिमयमकरमनोहरकुण्डलमण्डितगण्डमुदारम् ।

पीतवसनमनुगतमुनिमनुजसुरासुरवरपरिवारम् ५—६

मगर घांइ कानन के कुंडल मनियन जड़े कितउं पन्ना।

जगमगात उजयारे में हरि कौ पीतांबर उर उन्ना।।

मान्स देउता दईत रिसी सुर सेवा कर मेवा पावें।

गड़रा पर पर जात गाल पै जब हरि बैठे मुस्कावें।।

ऊ मुस्कान भरी मूरत पै ध्यान लगो रैबै मोरौ।

हँसें विलासें कितउं हरी पै 'मधुप' उनइ पै मन मोरौ।।6।।

विशदकदम्बतले मिलितम् कलिकलुषभयम् शमयन्तम् ।

मामपि किमपि तरन्गदनङ्गदृशा मनसा रमयन्तम् ५—७

बड़े कदंब रूख के नैचें बैठे रमन बिहारी हैं।

कलजुग के पापन के भै खों दूर करत बनवारी हैं।।

कितउं आंख से करें इसारे कितउं हँसें दै दै तारी।

अंग अनंग विकार मिटा दओ जै जै जै हे गिरधारी।।

ध्यान लगो रय हरि चरनन में मुसकिल सें नातौ जोरौ।

हँसें विलासें कितउं हरी पै 'मधुप' उनइ पै मन मोरौ।।7।।

श्रीजयदेवभणितमतिसुन्दरमोहनमधुरिपुरूपम् ।

हरिचरणस्मरणम् प्रति संप्रति पुण्यवतामनुरूपम् ५–८

इति पंचमः प्रबंधः

मधु जो हतो मधुपुरी राजा राक्छस नांव मिटा डारे।

मोहन की मन मोहक छवि नें अच्छे अच्छे मो डारे।।

कबि जैदेव लिखे हरि के गुन जी जी पै डोरा डारे।

खिंचत चलो गव बौ चरनन, बे तनक निगा मो पै डारें।।

पड़ सुन गाकें पुन्न कमा लो जग के सब नाते टोरौ।

हँसें विलासें कितउं हरी पै 'मधुप' उनइ पै मन मोरौ।।8।।

गणयति गुणग्रामम् भामम् भ्रमादपि नेहते ।

वहति च परितोषम् दोषम् विमुञ्चति दूरतः ।

युवतिषु वलस्तृष्णे कृष्णे विहारिणि माम् विना

पुनरपि मनो वामम् कामम् करोति करोमि किम् १।।

सखी देख तौ मोय छोड़ कें हरि सब के सँग रास रचा रए।

लूमत झूमत चूमत जा रए मोरे मन खों वे तरसा रए।।

मन उनकौ गुनगान करत है भूलभूल हम भूल न पा रए।

जी ने मोहन के गुन जाने मन में बे आनंद मना रए।।

स्वांसा तक आसा मिलबे की डरी डोर कैसें छोरौं।

हँसें विलासें कितउं हरी पै 'मधुप' उनइ पै मन मोरौ।।1।।

मालवरागे एकताली ताले अष्टपदी– 6

अक्लेश केशव मङ्जरी तिलकम्

निभृतनिकुञ्जगृहम् गतयानिशिरहसिनिलीयवसन्तम् ।

चकितविलोकितसकलदिशा रतिरभसभरेणहसन्तम् ।

सखि हे केशिमथनमुदारम् ।

रमय मया सह मदनमनोरथभावितया सविकारम् ।।ध्रुव०।।६ १

जुगल गीत गोपियन गाओ जो लिखे भागवत भर दए।

आद अंत सुकदेव उवाच सें पुट संपुट रस भर लए।।

एक एक इसलोकन की चौबीस अठकड़ीं कर दइं।

भए प्रबंध गीत गोबिंद बानी जैदेव सरस भइ।।

मनजरियंन मनजरे 'मधुप' कें मन सें मन मजरी मिलवा दो।

मनरथ चढ़े काम केसौ सें मो खों 'मधुप' कोउ मिलवा दो।।1।।

प्रथमसमागमलज्जितया पटुचाटुशतैरनुकूलम् ।

मृदुमधुरस्मितभाषितया शिथिलीकृतजघनदुकूलम् ।

सखि ... सविकारम् अ प ६–२

ब्रजरस कौ रस बिंद्रावन रस ऊ रस कौ रस कुंजन में।

कुंजन के रस कौ रस ढंड़ौ तौ बौ मिलै निकुंजन में।।

जो निकुंज रस कौ रस चाने तौ ढूंड़ौ निभृत निकुंज में।

निभृत निकुंज रससुधा राधा माधव रस रसपुंज में।।

रासेसुरी रसेसुर चरनन के रस कौ रसपान करा दो।

मनरथ चढ़े काम केसौ सें मो खों 'मधुप' कोउ मिलवा दो।।2।।

किसलयशयननिवेशितया चिरमुरसि ममैव शयानम् ।

कृतपरिरम्भणचुम्बनया परिरभ्य कृताधरपानम् ।

सखि ... सविकारम् अ प ६–३

मोय अकेली पा कुंजन में नांय मांय जो देखत जा रए।

बैठे दुके मंद मुस्क्या रए गालन में गड़रा पर जा रए।।

धरें काम कौ रूप सांवरे तौउ न हम उनसें मिल पा रए।

जैसें रात चाँदनी पाकें रति के मन में ललक जगा रए।।

झूलत झूलत झूल झुलइयंन उनके संगै मोय झुला दो।

मनरथ चढ़े काम केसौ सें मो खों 'मधुप' कोउ मिलवा दो।।3।।

अलसनिमीलितलोचनया पुलकावलिललितकपोलम् ।

श्रमजलसकलकलेवरया वरमदनमदादतिलोलम् ।

सखि ...सविकारम् अ प ६ ४

पैलउं पैल मिले सें सरमत मो खों बैसी लाज लगत है।

हरां हरां मुस्का कें बोलत औरए कान न सुना परत है।।

सारी तानत जांग उगारत देखत भोरे स्याम बनत हैं।

उनकी चतुराई का कइए बोलत जैसें फूल झरत हैं।।

सपनन रोज दिखात सखी पै आमों सामों आज करा दो।

मनरथ चढ़े काम केसौ सें मो खों 'मधुप' कोउ मिलवा दो।।4।।

कोकिलकलरवकूजितया जितमनसिजतंत्रविचारम् ।

श्लथकुसुमाकुलकुन्तलया नखलिखितघनस्तनभारम् ।

सखि ... सविकारम् ६–५

नई कोंपें पत्तन की सेजें संगै स्याम सजा रए होयं।

जिन ओंठन सें बजत बाँसुरी चूमत झूमत झप रए होयं।।

बातन फुला फुला कें मोखों फूलत फूल फूल रए होयं।

भूल भुलइयंन भरे भौंन वे मोमौ भूल, भूल रए होयं।।

बरौंटी में रोज आउत पै सपनौ साँसौ आज करा दो।

मनरथ चढ़े काम केसौ सें मो खों 'मधुप' कोउ मिलवा दो।।5।।

चरणरणितमनिनूपुरया परिपूरितसुरतवितानम् ।

मुखरविशृङ्खलमेखलया सकचग्रहचुंबनदानम् ।

सखि ... सविकारम् अ प ६–६

सांवरिया संगै खेलत ते आनंदी में डूबत होयं।

भइ थकान आलस के मारें आंखें खोलत मीचत होयं।।

ठांड़ो रोम पसीन आकें भीगे तन सें निचरत होय।

नौनें गाल काम सी चंचल अंखियन स्याम निहारत होयं।।

मनमन खों मन जा रओ मन की मनसा पूरी आज करा दो।

मनरथ चढ़े काम केसौ सें मो खों 'मधुप' कोउ मिलवा दो।।6।।

रतिसुखसमयरसालसया दरमुकुलितनयनसरोजम् ।

निःसहनिपतिततनुलतया मधुसूदनमुदितमनोजम् ।

सखि ... सविकारम् ६–७

बजा बजा बाँसुरी बुला लऔ पैलउं तौ मन सकुचानी।

मिलत स्याम सें कोयल जैसी मैं बोलत ती मीठी बानी।।

कामतंत्र के नियम टोर हरि सखी करें हैं मनमानी।

दोऊ भए लिथोर उर गजरा के मोती हैं बिर्रानी।।

बर्राटन बे लेत चोंटिया सा परतीती सखी करा दो।

मनरथ चढ़े काम केसौ सें मो खों 'मधुप' कोउ मिलवा दो।।7।।

श्रीजयदेवभणितमिदमतिशयमधुरिपुनिधुवनशीलम् ।

सुखमुत्कण्ठितगोपवधूकथितम् वितनोतु सलीलम् ।

सखि ... सविकारम् अ प ६–८

इति षष्ठ प्रबंधः

घुँगरू सुर में बज रइं खेलत बोरा जड़ी पांव पैजनियां।
झनकारन की भाँस भरा रइं करया पै की लर करधनियां।।
बड़ी बेर लों सखी कनइया चूमत लूमत पकर चुटइयां।
कइ ना करें करें वे मन की सुनतन मोरी हा हा दइयां।।
उत्तइ पै जौ मन नइं मानत मनहर मान जायं मनवा दो।
मनरथ चढ़े काम केसौ सें मो खों 'मधुप' कोउ मिलवा दो।।७।।

हस्तस्रस्तविलासवंशमनृजुभ्रूवल्लीमद्वल्लवी ।
वृन्दोत्सारिदृगन्तवीक्षितमतिस्वेदार्द्रगण्दस्थलम् ।
मामुद्वीक्ष्य विलज्जितम् स्मितसुधामुग्धाननम् कानने ।
गोविन्दम् व्रजसुन्दरीगणवृतम् पश्यामि ह्रष्यामि च १।।

कबि जैदेव लिखे हैं जैसे नइं कउं और जहान में।
पड़बे सुनबे उर बोले में नौनें लगत कहान में।।
ग्वालिन संगै खिलखिलात खुलकें खेलत जग खेल खिलइया।
जानन चाव गीत गोबिंद खें मन सें बाँचौ भजो कनइया।।
सुनतन सब खों सुख देबै, सो सरस सुनौ सुनकें सुनवा दो।
मनरथ चढ़े काम केसौ सें मो खों 'मधुप' कोउ मिलवा दो।।1।।

दुरालोकस्तोकस्तबकनवकाशोकलतिका ।
विकासः कासारोपवनपवनोऽपि व्यथयति ।
अपि भ्राम्यद्भृङ्गीरणितरमणीया न मुकुल ।

प्रसूतिश्चूतानाम् सखि शिखरिणीयम् सुखयति २।।

मोय देख जिनके हाँतन सें गिर गिर जा रइ बाँस मुरलिया।
नैंन बान सें घायल कर रए घालत तिरछी घाल नजरिया।।
गीले गाल पसीनन हो रए ग्वालिन गरे डार गलबइयां।
लगत लाज सो हँसत भगत हम तकत भाग सें भगत कनइया।।
बन्न बन्न के खेल खिला रए उन खों मो खों संग खिला दो।
मनरथ चढ़े काम केसौ सें मो खों 'मधुप' कोउ मिलवा दो।।2।।

नई असोक पत्तन की टानें मोसें सखी न देखी जा रइं।
ताल बगीचन फूल बास लयं हवा हिलोरें सइ नइं जा रइं।।
झौरन झौरन आम मौर रए बैरिन बैर गम्म नइं खा रइ।
मौरन कौ रस लै रए भौंरा गुंजत गूँज सुनी नइं जा रइ।।
मंजरियंन पै गाउत सिखरिनी नचत भौंरियां मइं पौंचा दो।
मनरथ चढ़े काम केसौ सें मो खों 'मधुप' कोउ मिलवा दो।।२।।

साकूतस्मितमाकुलाकुलगलद्धम्मिल्लमुल्लासित ।
भ्रूवल्लीकमलीकदर्शितभुजामूलोर्ध्वहस्तस्तनम् ।
गोपीनाम् निभृतम् निरीक्ष्य गमिताकाङ्क्षश्चिरम् चिन्तयन् ।
अन्तर्मुग्धमनोहरम् हरतु वः क्लेशम् नवः केशवः ३।।

गुबे हते सब केस बिथुल गए कारन सें मुसकाबे वारी।

बौलन सी आंखन पै लग रइं उमदा ऐसी भौंइन वारी।।

फरका–फरका हाँत बहानें छाती आँग दिखाबे वारी।

कर रइ ध्यान भाव गोपी कौ बड़ी देर लों तकत बिहारी।।

काटें बेइ कलेस चित्त के चोर चरन सें ध्यान लगा दो।

मनरथ चढ़े काम केसौ सें मो खों 'मधुप' कोउ मिलवा दो।।३।।

इति श्री जयदेव कृतौ गीतगोविन्दे अक्लेशकेशवो नाम द्वितीयः सर्गः

सब कलेस केसौ काटें नइं रओ कलेस के फंद में।

राधा माधव की छवि देखौ 'मधुप' गीत गोबिंद में।।दो।।

तृतीय सर्ग

तृतीय सर्ग – मुग्ध मधुसूदन

कंसारिरपि संसारवासनाबन्धशृंखलाम् ।

राधामाधाय ह्रदये तत्याज व्रजसुंदरी ।। १।।

दुनियां भर की विसय बासना साँकर में जो बाँदें रत।

वे राधा काटत सब बाधा हरि कौ हिरदौ सादें रत।।

ब्रजनारिन कौ मोव छोड़ दओ हरी हिए में राधे रत।

राधे आराधे अवराधे आ राधे आ राधे कत।।

कंसासुर सें बैर करें वे राधा नों भर रए पानी।

कितै रिसा कें 'मधुप' अनमनी चली गईं राधारानी।।1।।

इतस्ततस्तामनुसृत्य राधिकामनंगबाणव्रणखिन्नमानसः ।

कृतानुतापः स कलिन्दनन्दिनीतटान्तकुंज़ेविषसाद माधवः ।। २।।

स्याम बिना आदी राधा उर आदे स्याम बिना राधे।

राधे की रकार नइ होबै राधेस्याम रअत आधे।।

घायल काम बान के मारे दुखी होत मन में राधे।

जमनाजू की निभृत निकुंजन स्याम बिराजे बिन राधे।।

ढूंड़ो सबरे में नइं मिल रइं हरि के मौं कड़ रइ बानी।

कितै रिसा कें 'मधुप' अनमनी चली गईं राधारानी।।2।।

गुर्जररागे प्रतिमंठताले अष्टपदी– 7

मामियं चलिता विलोक्य वृतं वधूनिचयेन ।

सापराधतया मयापि न वारितातिभयेन ।

हरिहरि हतादरतया गता सा कुपितेव ।। ध्रुव० ।। १।।

ज्वानी जोस भरो ब्रज जुवती रास मना रए जंगल में।

गेरत हेरत टेरत कौनउं आंख नटेरत मंडल में।।

मो खों सबके माँझै देखत भाव बदल रए पल पल में।

राधा खों नइं रोक पाव नइं बुला पाव ऊ मंडल में।।

सब कोउ होत मान कौ भूँकौ है हमाइ जा नादानी।

कितै रिसा कें 'मधुप' अनमनी चली गईं राधारानी।।1।।

किं किष्यति किं वदिष्यति सा चिरं विरहेण ।

किं धनेन जनेन किं मम जीवितेन गृहेण ।।

हरि०।।२।।

भौतइ दिन कौ बिछुरन पर गव हुइएं कां राधा रानी?

कोउ बतावै उतइ जात हम हुइएं जां राधा रानी।।

कारन कौन? बता रइं हुइएं रिसा रिसा राधा रानी।

कितै? का करत? कहत सुनत वे कीसें का? राधा रानी।।

धन दौलत घर कुटुम कबीला सूनें बिन राधा रानी।

कितै रिसा कें 'मधुप' अनमनी चली गईं राधारानी।।2।।

चिन्तयामि तदाननं कुटिलभ्रु कोपभरेण ।

शोणपद्ममिवोपरिभ्रमताकुलं भ्रमरेण ।। हरि०।।३।।

जबइ मुखारबिंद राधा कौ ध्यान धरत में देखत हैं।

टेड़ी भौंह गाल पै करिया तिल भौंरा सौ लेखत हैं।।

भौंरा लग रओ गेरउं नच रओ बैठे बैठे सोसत हैं।

जौ जग सूनौ राधा के बिन अपनें भागै कोसत हैं।।

बिन राधे के स्याम अधूरे तनक न उननें जा जानी।

कितै रिसा कें 'मधुप' अनमनी चली गईं राधारानी।।3।।

तामहं ह्रदि संगतामनिशं भृशंरमयामि ।

किं वनेअनुसरामि तामिह किं वृथाविलपामि ।। हरि० ।। ४।।

ही कौ हार हिए खों हर कें हिरा गईं हेरत हेरत।

रै गइ भाँस बनइ बन ढूंड़त राधे खों टेरत टेरत।।

हार थके जे पांव सूज गए बियावान गेरत गेरत।

बिरथा नांय मांय फिरबौ है सबरे कत जे कत बेकत।।

जो साँसौ सनेव राधा सें नइं आंखन बहावं पानी।

कितै रिसा कें 'मधुप' अनमनी चली गईं राधारानी।।4।।

तन्वि खिन्नमसूयया ह्दयंतवाकलयामि ।

तन्न वेद्मिकुतो गतासि न तेनतेअनुनयामि ।।हरि० ।। ५।।

मोय लगत सुकुमार आँग पै नजर न कोउ की लग जावै।

जेइ बिचार दुकी कउं जाकें ढूंड़े सें नइं कउं पावें।।

जा नइं जानत ते हम मन में इत्ती अनबन हो जावे।

कितै जावं? कां गई राधका? कैसें उने मना पावें।।

हम बैठे उनमान लगा रए उनके मन की नइं जानी।

कितै रिसा कें 'मधुप' अनमनी चली गईं राधारानी।।5।।

दृश्यसे पुरतो गतागतमेव मेविदधासि ।

किं पुरेव ससंभ्रमं परिरंभणं नददासि ।। हरि०।।६।।

ऐसौ लगत बजत पैजनियां राधा छमक छमक आ रइं।

तनक दिखाकें फिरकइयां लै धमक धमक राधा आ रइं।।

लग रओ आउत जाउत राधा पै हमें कभउं नइं मिल पा रइं।

मुरझानों सौ डरो रअत मन मन की कली न खिल पा रइ।।

चिबक जाय छाती सें आकें तौ मन की साँसी मानी।

कितै रिसा कें 'मधुप' अनमनी चली गईं राधारानी।।6।।

क्षम्यतामपरं कदापि तवेदृशं न करोमि ।

देहि सुंदरि दर्शनं मम मन्नमथेन दुनोमि ।। हरि०।।७।।

मन की दुबधा मिटा देओ टुक दरसन तौ दै दो राधा।

मन के मीत भुलै देबें तौ मन कौ मैल करै बाधा।।

भूलें भइं वे भूल भुलै दो भूल न हुइऐ भूल कभउं।

भूल सूल की हूल भूल मनफूल खिला दो फूल कभउं।।

भगतन खों भगवान ढूंड़ रए कआत भूल हमने मानी।

कितै रिसा कें 'मधुप' अनमनी चली गईं राधारानी।।7।।

वर्णितं जयदेवकेन हरेरिदं प्रवणेन ।

किंदुबिल्वसमुद्रसं भवरोहिणीरमणेन ।। हरि०।।८।।

इति सप्तमः प्रबंधः

धरती भर की सोभा जोरी रस्सी कर लइ मनमानी।

उपमा भाव पहार मंदराचल की बनवा मथआनी।।

कृष्ण प्रेमरस सागर मथ रए राम स्याम अपने हाँतन।

किंदुबिल्व सो गांव धन्न भओ मन आनंद समात न।।

कड़ो गीत गोबिंद सौ चंदा कबि जैदेव की नइं सानी।

कितै रिसा कें 'मधुप' अनमनी चली गईं राधारानी।।8।।

भ्रूपल्लवं धनुरपांगतरंगितानि

बाणागुण:श्रवणपालिरिति स्मरेण ।

तस्यामनंगजयजंगमदेवताया–

मस्त्राणि निर्जितजगंति किमर्पितानि ।।१।।

अरे काम! तैनें राधा के भौंहन धनुस बना दए।

नैन सेंन के बान बना आंखन में ऐंन समा रए।।

कानन की लोंड़ी की डोरी नैन कटार गुजा दइ।

चलत फिरत लछमी सी राधा मोय जीतबौ चा रइ।।

जीत जाय पै दरसन कर लउं भले हार हमनें मानी।

कितै रिसा कें 'मधुप' अनमनी चली गईं राधारानी।।1।।

ह्रदि विसलताहारो नायं भुजंगमनायकः

कुवलयदलश्रेणी कंठे न सा गरलद्युतिः ।

मलयजरजो़नेदं भस्मप्रियारहिते मयि

प्रहर न हरभ्रांत्यानंग क्रुधा किमु धावसि ।।२।।

अरे काम! मोरी माला खों का तें साँप समज रओ?

कमलफूल दल की पाँतन खों बिस की चमक समज रओ??

चंदन कौ तें भसम रमाएं संकरजू सौ मानत।

एइ भरम सें बान मारबे मोरे ऊपर तानत।।

बिरहा की आँचन जिउ जर रओ तुमने मन में का ठानी?

कितै रिसा कें 'मधुप' अनमनी चली गईं राधारानी।।2।।

पाणौ मा कुरु चूतसायकममुं मा चापमारोपय
क्रीडानिर्जितविश्वमूर्छितजनाघातेन किं पौरुषम् ।
तस्या एव मृगीदृशो मनसिज प्रेंखत्कटाक्षाशुग–
श्रेणीजर्जरितं मनागपि मनो नाद्यापि संधुक्षते ।।३।।

अरे काम! अपने मन में तुम इतनी तनक बिचारौ।
आमन की मंजरियंन के तुम बना बान नइं मारौ।।
खेल खेल में तुम जग जीतत घायल खों का मारत।
मृगनैनी राधा के नैनन की ज्वाला जिउ जारत।।
मन की तपन बुजइ नइ पा रइ तुमने कौन ठान ठानी।
कितै रिसा कें 'मधुप' अनमनी चली गईं राधारानी।।3।।

भ्रूचापे निहितः कटाक्षविशिखो निर्मातु मर्मव्यथां
श्यामात्मा कुटिलः करोतु कबरी– भारोअपि मारोद्यमम् ।
मोहं तावदयं च तन्वि! तनुतां बिंबाधरो रागवान्
सद्वृत्तस्तन–मंडलं तव कथं प्राणैर्ममक्रीडति।।४।।

लचकीली सी कमर राधका नैनन बान चड़ा रइं आत।
उनके घने सांवरे केसन कामदेव की कला दिखात।।
लाल ओंठ कुँदरू के जैसे देखत धीरज र्नइं बँधात।

गोल गोल छतियन के गोला देखत प्रान सटंगै जात।।
मन की बिथा ब्रथा कएं की सें हम जानी कै तुम जानी।
कितै रिसा कें 'मधुप' अनमनी चली गईं राधारानी।।4।।

तानिस्पर्शसुखानि ते च तरलाः स्निग्धा दृशोविभ्रमा–
स्तद्वक्त्रांबुजसौरभं स च सुधास्यंदी गिरावंक्रिमा ।
सा बिंबाधरमाधुरीति विषयासंगेअपि चेन्मानसं
तस्यां लग्नसमाधि हंत विरहव्याधिः कथं वर्धते ।।५।।

देह छियत में बैसउ सुख है बैसी इमरत सी बानी।
अधरन की मिठास कुँदरू सी बा मिठास मन नें जानी।।
मन में ध्यान धरो राधा कौ जौन रूप है लासानी।
तौउ न पर रओ पतौ बिरह की बिथा करत है नादानी।।
बिरह ज्वाल झंडाल छूट रइ बुझै कौन डारै पानी।
कितै रिसा कें 'मधुप' अनमनी चली गईं राधारानी।।5।।

तिर्यक्कंठविलोलमौलितरलोत्तंसस्य़ वंशोच्चरद्
दीप्तिस्थानकृतावधानललनालक्षैर्न संलक्षिताः ।
संमुग्धे मधुसूदनस्य मधुरे राधामुखेंदौ सुधा–
सारेकंदलितांश्चरं दधतु वः क्षेमं कटाक्षोर्मयः।।६।।

नइं दिखात औरन सखियन खों राधा के मौ कौ चंदा।

स्याम चकोर बने देखत हैं कैसौ जौ गोरखधंधा।।

नैंन सेंन लख मुरलीधुन सुन राधा जब मुसकाबें।

हलें मुकुट कुंडल माधव के मुगध मगन हो जाबें।।

भगतन मन आनंद बड़ै सुनि जीनें रास रहस जानी।

कितै रिसा कें 'मधुप' अनमनी चली गईं राधारानी।।6।।

इति श्रीगीतगोविंदे मुग्धमधुसूदनो नाम तृतीयरू सर्ग

मुगध होत मधुसूदन जी पै बौ न रहत दुख दंद में।

राधा माधव की छवि देखौ 'मधुप' गीत गोबिंद में।।तीन।।

चतुर्थ सर्ग

चतुर्थ सर्ग– स्निग्ध माधव

यमुनातीरवानीरनिकुंजे मंदमास्थितम् ।
प्राह प्रेमभरोद्भ्रांतं माधवं राधिकासखी ।।१।।

जमना तट बेंतन की बौलें कुंजैं सबइ उदास।
परम प्रेम की मूरत माधौ बैठे उतइ निरास।।
छलकत प्रेम बायरौ कड़ रओ उथल पुथल मन मच रइ।
तबइ आनकें राधाजू की एक सखी जें जा कइ।।
अपनी पीर 'मधुप' हरि जानों राधा की हम का कएं।
बिरह बिथा डर काम बान कौ राधा तुममें मन दएं।।

कर्नाटकरागे एकतालिताले अष्टपदी– 8

निंदति चंदनमिंदुकिरणमनु विंदति खेदमधीरम्
व्यालनिलयमिलनेन गरलमिव कलयति मलय–समीरम् ।
माधव ! मनसिज– विशिखभयादिव भावनया त्वयि लीना
सा विरहे तव दीना ।। ध्रुव० १।।

सब कत चंदन ठंडौ पै राधा खों तातौ लग रओ।
कामदेव के बानन बिंध कें सबरउ आँग झुलस रओ।।

चंदा की इमरत की किरनें आगी आँच बरस रइ।
मलयाचल की हवा साँप के बिस सी ताती लग रइ।।
'मधुप' पीर तन पीरौ पर गओ दिन जुग घांईं लग रए।
बिरह बिथा डर काम बान कौ राधा तुममें मन दएं।।1।।

अविरलनिपतितमदनशरादिव भवदवनाय विशालम् ।
स्वहृदयमरमणि वर्म करोति सजलनलिनीदलजालम् ।।
सा विरहे ० ।। २।।

हे माधौ! तुम खों राधा नें जिउ की जाँगा धर लओ।
छिद नइं जाय काम के बानन जेउ उनें डर लग रओ।।
भिंजै पुरैन के पत्ता बख्तर बना कें ऊपर धर लए।
तन छिदना हो जाय भले हरि तौ जिउ में सुख सें रएं।।
तुमसें लगन लगी राधा के कस्टन की का का कएं।
बिरह बिथा डर काम बान कौ राधा तुममें मन दएं।।2।।

कुसुमविशिखशरतल्पमनल्पविलासकलाकमनीयम् ।
व्रतमिव तव परिरंभसुखाय करोति कुसुमशयनीयम् ।।
सा विरहे ०।।३।।

काम धनइयंन फूलन के बानन की बरसा कर रए।
राधा परीं कुसुम सइया पै फूलइ फूला भर गए।।

कमल कनइया मानत राधा करकें चिबकत जा रइं।
फूल सेज पाटी हरि जानत पकर मगन मन भर रइं।।
फूल फूल कें फूल चड़ा रइं कामकला की का कएं।
बिरह बिथा डर काम बान कौ राधा तुममें मन दएं।।3।।

वहति च चलितविलोचनजलधरमाननकमलमुदारम् ।
विधुमिव विकटविधुंतुददंतदलनगलितामृतधारम् ।।
सा विरहे ० ।।४।।

माधौ तुम बिन राधा रोजउं अँसुअन धार बुआ रइं।
चंदा से मौं के ऊपर की धारें ऐसीं लग रइं।।
पकर राहु चंदा खों जैसें दाँतन बीच दबोचत।
चंदा सें अवढारी इमरत की धारा सी बरसत।।
राधा के चंदा से मौं के अँसुआ आप ढुड़क रए।
बिरह बिथा डर काम बान कौ राधा तुममें मन दएं।।4।।

विलिखति रहसि कुरंगमदेन भवंतमसमशरभूतम् ।
प्रणमति मकरमधो विनिधाय करे च शरं नवचूतम् ।।
सा विरहे० ।।५।।

कभउं अकेली कस्तूरी सें लिखत चतोरी ऐसी।
माधौ की मूरत बनाउत मइं कामदेव की जैसी।।

आम मौर के बान बनाकें हरि हाँतन पकरा कें।

हाँत जोर बिनती कर लेतीं नैचें मगर बना कें।।

राधा तरसत हरि खों हड़सत काए न तनक तरस रए।

बिरह बिथा डर काम बान कौ राधा तुममें मन दएं।।5।।

प्रतिपदमिदमपि निगदति माधव! तव चरणे पतिताहम् ।

त्वयि विमुखे मयि सपदि सुधानिधिरपि तनुते तनुदाहम् ।।

सा विरहे०।।6।।

नांय मांय सें घूमघाम कें जबइ भीतरैं आ रइं।

होत चतोरी सामें ठांड़ी हरि के पांव पकर रइं।।

बिन तुमाए चंदा की किरनन सें सब आँग झुलस गओ।

इमरत भले भरो चंदा में उनखों लगत धदक रओ।।

पीर हरइया पीर हरौ का पीर न पीर समज रए?

बिरह बिथा डर काम बान कौ राधा तुममें मन दएं।।6।।

ध्यानलयेन पुरः परिकल्प्य भवंतमतीव दुरापम् ।

विलपति हसति विषीदति रोदिति चंचति मुंचति तापम् ।।

सा विरहे०।।७।।

हे माधौ! मूरत के सामें राधा ठांड़ीं हँस रइं।

दुखी होत कउं रोउन लगत लै हिलकी हिलक बिलख रइं।।

छोड़ राग बैरागी बन कें त्यागी कैसी लग रइ।

चित्तै चड़ी सांवरी सूरत मूरत तऊ न पिलग रइ।।

ब्रत उपास सें मिलत 'मधुप' हरि काए न दरसन दै रए।

बिरह बिथा डर काम बान कौ राधा तुममें मन दएं।।7।।

श्रीजयदेवभणितमिदमधिकं यदि मनसा नटनीयम् ।

हरिविरहाकुलवल्लवयुवतिसखीवचनं पठनीयम् ।।

सा विरहे०।।८।।

इति अष्टमः प्रबंधः

सखी कभउं राधा कउं हरि सें मिलत गीत गोबिंद में।

कबि जैदेव मुरलिया की धुन लिखत गीत गोबिंद में।।

बिरहिन राधा हिलकत बिलखत पुलक गीत गोबिंद में।

जौ आनंद अंत नइं जैसौ मिलत गीत गोबिंद में।।

काव्व कबें कै महाकाव्व कै 'मधुप' प्रेम कौ रस कएं।

बिरह बिथा डर काम बान कौ राधा तुममें मन दएं।।8।।

आवासो विपिनायते प्रियसखी मालापि जालायते

तापोअपि श्वसितेन दावदहनज्वालाकलापायते ।

सापि त्वद्विरहेण हंत हरिणीरूपायते हा कथं

कंदर्पोअपि यमायते विरचयन् शार्दूलविक्रीडितम् ।।१।।

माधौ बिरह बिथा सें राधा खों घर बन सौ लग रओ।
हिली मिली सखियन खों देखत जाल ज्वाल सौ जल रओ।।
काम सेर सौ लगत जम बनो छाती चड़ो गरज रओ।
हिन्नी घांइं राधिका कौ तन लग रओ प्रान निकर रओ।।
हेरें हरि की बाट 'मधुप' बैठी रत हरसाँसें लएं।
बिरह बिथा डर काम बान कौ राधा तुममें मन दएं।।१।।

देशाख्य एकतालिताले अष्टपदी– 9

स्तनविनिहतमपि हारमुदारम्
सा मनुते कृशतनुरिव भारम्
राधिका तव विरहे केशव
माधव! वामन! विष्णो! ।।ध्रुवपद।।१।।

हरि के बिरह दूबरी राधा हार भार से लग रए।
सोसत केसौ कुब्जा की बिनती सुन पूरी कर रए।।
मधु रितु में माधव बन कें कउं बामन बन बलि छल रए।
बिंदा के ते बिस्नू बन कें जाके हरि दुख हर रए।।
कै रइ सखी सुनौ सांवरिया राधा तप सौ कर रइं।
केसौ माधव बामन बिस्नू कइकन नांव सुमर रइं।।1।।

सरसमसृणमपि मलयजपंकम् ।

पश्यति विषमिव वपुषि सशंकम् ।।राधिका० ।।२।।

राधा की माधौ बियोग में देह दूबरी हो गइ।
तन कौ सरस चीकनों चंदन सूखत सकल बिगर रइ।।
जिउ की जरन बुजाउत हतो बो चंदन बिस सौ सूझत।
हे गोबिंद बियोगी राधा की मनसा कब पूरत?
कै रइ सखी सुनों सांवरिया राधा तप सौ कर रइं।
केसौ माधव बामन बिस्नू कइकन नांव सुमर रइं।।2।।

श्वसितपवनमनुपमपरिणामहम् ।
मदनदहनमिव वहति सदाहम् ।। राधिका०।।३।।

अरे कनइया! बेथर मो सें ई बियोग खों पालें।
मोरे भीतर काम अगन की छूटत हैं झंडालें।।
ताती ताती लामी लामी हरसाँसें बन कड़ रइं।
ऊपर आग लगत चिक जा रए भीतर देह सिकुड़ रइ।।
भूंक प्यास की सुद नइं करकें बैठ तपस्या कर रइं।
केसौ माधव बामन बिस्नू कइकन नांव सुमर रइं।।3।।

दिशि दिशि किरति सजलकणजालम् ।
नयननलिनमिव विगलितनालम् ।। राधिका० ।।४।।

कै रइ सखी मुरारी सुन लो राधा ऐसी लग रइं।
जैसी टूट कमल की डांड़ी धरती परी तड़प रइ।।
आंखन सें अँसुआ बरसा कें गेरउं गेर चितै रइं।
सबइ दिसन में अपनें हरि खों ढूंड़त आंखें चल रइं।।
जब नइं कितउं दिखात मीच कें ध्यान उनइं कौ कर रइं।
केसौ माधव बामन बिस्नू कइकन नांव सुमर रइं।।4।।

नयनविषयमपि किसलयतल्पम् ।
कलयति विहितहुताशविकल्पम् ।। राधिका०।।५।।

बैठी बाट बियोगिन हेरें बिरह में आंखें बर रइं।
सामें सेज सजी सुमनन की राधा आग समज रइं।।
कै रइं कोउ बचा लो आकें स्याम न कउं जर जाबें।
हरि बैठे राधा के हिय में हेर हेर हरसाबें।।
राधा रहस समज नइं पा रइं 'मधुप' सखी समजा रइं।
केसौ माधव बामन बिस्नू कइकन नांव सुमर रइं।।5।।

त्यजति न पाणितलेन कपोलम् ।
बालशसिनमिव सायमलोलम् ।।राधिका०६।।

राधा एक दिना संजा की बेरां बैठीं सुनो मुरारी।

दोइ गाल हाँतन सें चाँपें ऊपर लगी निहारी।।

देखत लगत दोज कौ चंदा बिरह बावरी बन गइं।

आसमान में चंदा थम गओ हाँत उठा कें कै रइं।।

कितउं न हरी दिखात आंख खों खोलत हेरत रै गइं।

केसौ माधव बामन बिस्नू कइकन नांव सुमर रइं।।6।।

हरिरिति हरिरिति जपति सकामम् ।

विरहविहितमरणेव निकामम् ।। राधिका०।।७।।

जैसें कौनउं चलती बेरा अंतम साँसें गिन रओ।

प्रान त्यागती बेरा जिउ खों छिन छिन भारी पर रओ।।

हेर हेर हरि टेर टेर कत बेर बेर हरि हारी।

हिम्मत हारी डरी मरी सी हरी का करी बिहारी।।

हे हरि आ! हरि आ! हे हरिआ! रटन न मौ सें टर रइ।

केसौ माधव बामन बिस्नू कइकन नांव सुमर रइं।।7।।

श्रीजयदेवभणितमिति गीतम् ।

सुखयतु केशवपदमुपनीतम् ।। राधिका० ।।८।।

इति श्रीगीतगोविंदे नवम प्रबंध

कबि जैदेव लिखो जौ ऐसौ उमदा काव्व गीत गोबिंद।

पड़त सुनत आनंद मना रए गा रए जौन गीत गोबिंद।।

उतइ आन कें बैठ सुनत हरि हो रए जितै गीत गोबिंद।
हरि के चरनन करत समर्पन टीका बुंदेली सुच्छंद।।
बिना स्याम के राधा की गति 'मधुप' कई जैसी भइ।
केसौ माधव बामन बिस्नू कइकन नांव सुमर रइं।।8।।

सा रोमांचति सीत्करोति विलपत्युत्कंपते ताम्यति
ध्यायत्युद्भ्रमति प्रमीलति पतत्युद्याति मूर्च्छत्यपि ।
एतावत्यतनुज्वरे वरतनुर्जीवेन्न किं ते रसात्–
स्वर्वैद्यप्रतिम प्रसीदसि यदित्यक्तोअन्यथा हस्तक ।।१।।

चड़ो कामजुर राधा खों वे कँप कें सी सी कर रइं।
गिरत उठत बिलखत ठांड़े हो ध्यान तुमाऔ धर रइं।।
हे देउतन के बैद कनइया कौनउ रस तौ दै दो।
मर रइं हाँत इसारौ कर रइं हाँत मूड़ पै धर दो।।
नौ रस में सें एकइ रस सिंगार 'मधुप' रस चा रइं।
केसौ माधव बामन बिस्नू कइकन नांव सुमर रइं।।1।।

स्मरातुरां दैवतवैद्यहृद्य त्वदंगसंगामृतमात्र साध्याम् ।
विमुक्तबाधां कुरुषे न राधामुपेंद्र वज्रादपि दारुणोसि ।।२।।

राधा खों मन रोग भऔ जो ठीक न होने तौ लों।
राधा माधौ मिलतन उपजो इमरत पियै न जौ जों।।

देउतन खो दबाइ देबें जो राधा का बाडू भइं।

हम तौ जेइ कबें उपेंद्र में छाती बज्जर कर लइ।।

हरि दासन कौ इमरत पीबे 'मधुप' गैल जा धर लइ।

केसौ माधव बामन बिस्नू कइकन नांव सुमर रइं।।2।।

कंदर्पज्वरसंज्वरातुर तनोराश्चर्यमस्याश्चिरं

चेतश्चंदनचंद्रमः कमलिनी–चिंतासु संताम्यति ।

किंतु क्लांतिवशेन शीतलतनुं त्वामेकमेव प्रियं

ध्यायंती रहसि स्थिता कथमपि क्षीणा क्षणं प्राणिति ।।३।।

देह दूबरी चड़ो कामजुर राधा व्याकुल हो रइं।

चंदन चंदा उर गदूल खों देखत भीतर जर रइं।।

सीतल देह सांवरे सें वे मिलबे चाना कर रइं।

भली चाओ हरि उनें बचा लो बिना मौत नइं मर रइं।।

कांहो कैसें कबै आउत बे गैल बाँद कें डर रइं।

केसौ माधव बामन बिस्नू कइकन नांव सुमर रइं।।3।।

क्षणमपि विरहःपुरा न सेहे

नयन निमीलनखिन्नया यया ते ।

श्वसिति कथमसौ रसालशाखां

चिरविरहेण विलोक्य पुष्पताग्राम् ।।४।।

पैलउं राधा हरि के दरसन इकटक निगा करत तीं।
माधौ मौं चंदा चकोर सी बैठी देखत रत तीं।।
आंखन की पलकें झपबे में जियै होत ती बाधा।
मौंरे आम देख कें कैसें धीरज बाँदै राधा।।
'मधुप' भाग की मारी राधा दूरन देस बिछुड़ गइ।
केसौ माधव बामन बिस्नू कइकन नांव सुमर रइं।।4।।

वृष्टव्याकुलगोकुलावनरसादुद्धृत्य गोवर्धनं
विभ्रद्वल्लवसुंदरीभिरधिकानंदाच्चिरं चुंबितः ।
कंदर्पेण तदर्पिताधरतटीसिंदूरमुद्रांकितो
बाहुरंगोपतनोस्तनोतु भवतां श्रेयांसि कंसद्विषः ।।५।।

इंद्र भए नाराज सरग सें बादर अखम बरस रए।
गोकुल गांव बचाबे छिंगरी गिर गोबरधन धर लए।।
अधर लाल उर गाल भार हरि हाँतन गड़रा पर गए।
पै ब्रिज की बइयर बनितन खों बिरह बिथा बिन कर गए।।
गोकुल भूसन कंस निसूदन सुमरत मन पूरी भइ।
केसौ माधव बामन बिस्नू कइकन नांव सुमर रइं।।5।।

जै माधौ सुकमार चमक हर सरस चीकनें छंद में।
राधा माधव की छवि देखौ 'मधुप' गीत गोबिंद में।।चार।।

इति श्रीगीतगोविंदकाव्ये स्निग्ध माधवो नाम चतुर्थः सर्गः

पंचम् सर्ग

पंचम सर्ग– साकांक्ष पुंडरीकाक्ष

अहमिह निवसामि याहि राधा–

मनुनय मद्वचनेन चानयेथारू

इति मधुरिपुणा सखी नियुक्ता

स्वयमिदमेत्य पुनर्जगाद राधाम्।।१।।

राधा बिरह बिथा के पन्ना सखी ने ढिक धर खोले।

सुनकें भाव समज कें माधव ओइ सखी सें बोले।।

राधा से मिलवाबे खों तुम दूती बन कें जाओ।

बैठे इतइ कुंज में तौ लों समजा कें लै आओ।।

राधा ढिंगा सखी जा पौंची पारें दोइ सँभाली।

हे राधा तुमसें मिलबे खों खुद तड़पत बनमाली।।

देशवराडिरागे रूपकताले अष्टपदी– 10

वहति मलयसमीरे मदवमुपनिधाय ।

स्फुटति कुसुमनिकरे विरहि ह्रदयदलनाय ।।१।।

तव विरहे वनमाली सखि ! सीदति ।।ध्रुवपद।।

कामदेव कौ बनौ सहायक मलयाचल कौ पौंन।

फूलन कलियां खिलीं हला रओं हौलें हौलें जौन।।
बिरह बिथा वे डूबे बैठे हवा हिलोरें पाकें।
'मधुप' करेजे फटफट जा रए रै रै जात सुसा कें।।
ऐसी हालत तुम बिन अपनी हरि ने आज बना ली।
हे राधा तुमसें मिलबे खों खुद तड़पत बनमाली।।1।।

दहति शिशिरमयूखे मरणमनुकरोति ।
पतति मदन विशिखे विलपति विकलतरोति ।।
तव विरहे० ।।२।।

बिना तुमाए सांवरे कौ जिउ चंदा किरन जला रइं।
प्रान कड़त जैसइं पीरा सें तन उनकौ तड़पा रइं।।
काम ओइ पै बिरह बिस बुजे तीखे बान चला रए।
बिरह बेदना बिथा बिहारी व्याकुल बेमन बन गए।।
हेरत आंखें अँसुआ ढारत जैसें बहन लगीं नालीं।
हे राधा तुमसें मिलबे खों खुद तड़पत बनमाली।।2।।

ध्वनति मधुपसमूहे श्रवणमपि दधाति ।
मनसि कलितविरहे निशि निशि रुजमुपयाति ।।
तव विरहे० ।।३।।।

फूलन पै गुंजारत भौंरा की की के गुन गा रए।

मूँदत कान हरी दोउ हाँतन उनसे सुन न जा रए।।
खबर करत राधा की माधौ कौ दिन तौ कड़ जाबे।
सूनी सूनी रातें लग रइं तनकउ ऊँग न आबे।।
'मधुप' बिरह की बिथा हरी ने अपने हाँत बढ़ा ली।
हे राधा तुमसें मिलबे खों खुद तड़पत बनमाली।।3।।

वसति विपिनविताने त्यजति ललितधाम ।
लुठति धरणिशयने बहु विलपति तव नाम ।।
तव विरहे० ।।४।।

बियावान बन में हरि ढूंड़त जब धरती तक सोबै।
राधा राधा टेरत टेरत बिलख बिलख हरि रोबें।।
का बतायं तुम बिना राधका माधौ ऊनें लग रए।
सरम न आउत सुनत का राधा कान तुमाए न सुन रए।।
ठल्लीं बैठीं इतै का करत बेथर बैठी ठाली।
हे राधा तुमसें मिलबे खों खुद तड़पत बनमाली।।4।।

रटति पिकसमुदाये प्रतिदिशमनुयाति ।
हसति मनुजनिचये विरहमपलपति नेति ।।
तव विरहे० ।।५।।

झौर झौर मिल कुहू कुहम कर जां कोहलिया बोलत।

'राधा बोलीं' जेइ जान हरि मंइ मिलबे खों धौरत।।
हरि खों देख हँसो जो ऊखों बिरह भेस में मानत।
मौंगे रइयौ बात न करियौ कै कै कें फटकारत।।
जैसें भुते फिरत हरि पागल 'मधुप' सुनत तुम खाली।
हे राधा तुमसें मिलबे खों खुद तड़पत बनमाली।।5।।

स्फुरति कलरवरावे स्मरति भणितमेव ।
तवरतिसुखविभवे बहुगणयति गुणमतीव ।।
तव विरहे० ।।६।।

पंछी जौन सुरीले बोलत ऊखों राधा जानत।
राधा की बोली के गिन गिन गुन गुन गुनत बखानत।।
मिलन प्रेम आनंद मनई मन सोसत घोकत जा रए।
अपनइ सें अपने गुन गाना मन आनंद समा रए।।
होरी चाय दिवारी अपने मन में मान मना ली।
हे राधा तुमसें मिलबे खों खुद तड़पत बनमाली।।6।।

त्वदभिधशुभदमासं वदति नरि शृणोति ।
तमपि जपति सरसं परयुवतिषु न रतिमुपैति ।।
तव विरहे० ।।७।।

चौत और बैसाख के पैलउं नांव हते मधु माधव।

जी मौं निकरो हरि ने मानी कै रओ राधा माधव।।

ठांड़े होकें ऊके संगै राधा राधा जप रए।

राधा छोड़ और कोऊ के नांव न नौनें लग रए।।

माधौ राधा पति पतनीब्रत सम्पूरन बिध पाली।

हे राधा तुमसें मिलबे खों खुद तड़पत बनमाली।।7।।

भणति कविजयदेवे विरहविलसितेन ।

मनसि रभसविभवे हरिरुदयति सकृतेन ।।

तव विरहे० ।।८।।

हास बिलास बिरह रस बरसत कबि जैदेव सुबानी।

राधा माधै के बियोग की बिथा जौन नें जानी।।

मन आनंद समा रओ ऊकौ फूलो भीतर बारौ।

ऊके हिदरें बैठ मँजन सें नच रओ बंसी बारौ।।

जीवन कौ रस मिलत गाउत जो बजा बजा कें ताली।

हे राधा तुमसें मिलबे खों खुद तड़पत बनमाली।।8।।

पूर्वं यत्र समं त्वया रतिपदेरासादिताः सिद्धय–

स्तस्मिन्नेव निकुंजमन्मथमहातीर्थे पुनर्माधवः ।

ध्यायंस्त्वामनिशं जपन्नपि तवैवालापमंत्रावलिं

भूयस्त्वत्कुचकुंभनिर्भरपरीरंभामृतंवांछति । ।१।।

राधा मिलन चाव जो उनसे बता देउं सब गैलें।
कामदेव की सिद्धि करी ती माधौ के सँग पैलें।।
जमना तट पै उतइ कुंज में बैठे तुमें सुमर रए।
छाती कलस भरें इमरत तुम उनकी चाना कर रए।।
पोंचौ उतइ काम तीरथ की जीनें पदवी पा ली।
हे राधा तुमसें मिलबे खों खुद तड़पत बनमाली।।

गुर्जररागेण एकतालिताले अष्टपदी– 11

रतिसुखसारे गतमभिसारे मदनमनोहरवेषम्
नकुरु नितंबिनि! गमनविलंबनमनुसर तं ह्रदयेशम् ।
धीरसमीरे यमुनातीरे वसति वने वनमाली
गोपीपीनपयोधरमर्दनचंचलकरयुगशाली ।। ध्रुवपद।।1।।

लचकीले कूलेवारी रति! पती मदन कौ रूप धरे।
देर न करौ चलौ कुंजन में बाट तकें हिरदेस हरे।।
जमना तीर नीर हिलरें मइं बैठ हवा लयं बनवारी।
करैं हाँतन छाती दाबत दोइ कलस कुच गिरधारी।।
बन्न–बन्न के बेस बना बन बैठे वे बन में आली।
बन सी सीटी बन रखाउत बनमाली वन में बन माली।।1।।

नामसमेतं कृतसंकेतं वादयते मृदुवेणुम् ।

बहु मनुतेअतनु ते तनुसंगतपवनचलितमपि रेणुम् ।।

धीर समीरे ०।।२।।

बजा बाँसुरी धुन में टेरत मोहन ठांड़े हरसत हैं।

राधा तन की वास हवा लएं माधव मिलबे तरसत हैं।।

बन्न–बन्न के बेस बना बनमाली बन बैठे आली।

करैं चंचल हाँत कलस कुच संग खेलबे बनमाली।।2।।

पतति पतत्रे विचलति पत्रे शंकितभवदुपयानम् ।

रचयति शयनं सचकितनयनं पश्यति तव पंथानम् ।।

धीर समीरे ०।।३।।

चौकन्ने हो जात हरी जब पंछी उड़त पात खड़कात।

सेज बिछा कें राधा आ रइं हरि ठांड़े हो हेरें बाट।।

बन्न–बन्न के बेस बना बनमाली बन बैठे आली।

करैं चंचल हाँत कलस कुच संग खेलबे बनमाली।।3।।

मुखरमधीरं त्यज मंजीरं रिपुमिव केलिसुलोलम् ।

चल सखि! कुंजं सतिमिरपुंजं शीलय नील निचोलम् ।।

धीर समीरे ०।।४।।

पैजनियां बज रइं उतार दो मन अधीर चंचल भओ जात।

लीले उन्ना पैर कुंज में राधा पोंचौ हो रइ रात।।

बन्न–बन्न के बेस बना बनमाली बन बैठे आली।

करैं चंचल हाँत कलस कुच संग खेलबे बनमाली।।4।।

उरसि मुरारेरुपहितहारे घन इव तरलबलाके ।

तडिदिव पीते रतिविपरीते राजसि सुकृतविपाके ।।

धीर समीरे ०।।५।।

जैसें कारे बदरन चमकत है धौरे बगलन की पाँत।

रति विपरीत प्रीत हरि छाती जा दमकौ राधा इठलात।।

बन्न–बन्न के बेस बना बनमाली बन बैठे आली।

करैं चंचल हाँत कलस कुच संग खेलबे बनमाली।।5।।

विगलितवसनं परिह्वतरसनं जघनमपिधानम् ।

किसलयशयने पंकजनयने निधिमिव हर्षनिदानम् ।।

धीर समीरे ०।।६।।

कैसे कपड़ा का करधनियां छोड़ौ ऊपर के छलछंद।

पिया मिलन में परदा कैसी तन मन एक मिलत आनंद।।

बन्न–बन्न के बेस बना बनमाली बन बैठे आली।

करैं चंचल हाँत कलस कुच संग खेलबे बनमाली।।6।।

हरिरभिमानी रजनिरिदानीमियमपि याति विरामम् ।

कुरु मम वचनं सत्वररचनं पूरय मधुरिपुकामम् ।।

धीर समीरे ०।।७।।

हरि इच्छा सो अपनी इच्छा राधा राखौ हरि कौ मान।

रात सिरात जात मानौ कइ नइं तौ 'मधुप' बात बइ जान।।

बन्न–बन्न के बेस बना बनमाली बन बैठे आली।

करैं चंचल हाँत कलस कुच संग खेलबे बनमाली।।7।।

श्रीजयदेवे कृतहरिसेवे भणति परमरमणीयम् ।

प्रमुदितहृदयं हरिमतिसदयं नमत सुकृतकमनीयम् ।।

धीर समीरे ०।।८।।

कै रए कबि जैदेव सांवरे सुंदर हरि दयालु भगवान।

गाओ गीत गोबिंद भाव सें पाओ 'मधुप' मन कौ बरदान।।

बन्न–बन्न के बेस बना बनमाली बन बैठे आली।

करैं चंचल हाँत कलस कुच संग खेलबे बनमाली।।8।।

विकिरति मुहुः कुश्वासान्नाशाः पुरो मुहुरीणते

प्रविशति मुहुः कुंजं गुंजन् मुहुर्बहु ताम्यति ।

रचयति मुहुः शय्यां पर्य्याकुलं मुहुरीक्षते

मदनकदनक्लांतः कांते! प्रियस्तव वर्तते ।।१।।

राधा बिना कनइया तड़पत बेर बेर हरसाँसें लयं।
कुंज बायरें भीतर जाबें आबें सेज पलट तइं रयं।।
इतै उतै चारउ दिसान में चितै चितै कें देखत रएं।
कभउं न मन अधीर होबै जो 'मधुप' हरी के होकें रएं।।1।।

त्वद्वाक्येन समं समग्रमधुना तिग्मांशुरस्तं गतो
गोविंदस्य मनोरथेन च समं प्राप्तं तमः सांद्रताम् ।
कोकानां करुणस्वनेन सदृशी दीर्घा मदभ्यर्थना
त्मुग्धे विफलं विलंबनमसौ रम्योअभीसारक्षणः ।।२।।

टेड़ी निगा देख कें माधौ सूरज अस्ताचल खों गए।
थक कें हारे बिनती करकें चकवा चकवी बिलखत रए।।
जल्दी करौ अबेर करौ नइं गागए इँदयारे हो गए।
हरि इच्छा सो अपनी इच्छा 'मधुप' न अपनी औरइ कए।।2।।

आश्लेषादनु चुंबनादनु नखोल्लेखादनु स्वांतज–
प्रोद्बोधादनु संभ्रमादनु रतारंभादनु प्रीतयोः
अन्यार्थं गतयोर्भ्रमान्मिलितयोः संभाषणैर्जानतो–
र्दंपत्योरिह को न को न तमसि व्रीडविमिश्रो रसः।।३।।

सोसौ भले होयं इँदयारे बातन मिलत इसारे देत।

छतियन नुंअन चौंटियां लैकें अपने पिय के चूमा लेत।।

जगो काम खेलत लजात रस पगे हेत सों परचौ देत।

अपनन अपने मिलत बेउ सुख और कोउ सें का लै देत।।3।।

सभयचकितं विन्यस्यंतीं दृशं तिमिरे पथि

प्रतितरु मुहुः स्थित्वा मंदं पदानि वितन्वतीम् ।

कथमपि रहःप्राप्तामंगैरनंगतरंगिभिः

सुमुखि! सुभगः पश्यन् स त्वामुपैतु कृतार्थताम् ।।४।।

सखी बात सुन राधा उठकें चल दइं गेरउं हेरत जात।

चड़ो काम सबरे सरीर में थम थम रूखन टेरत जात।।

झमरयात गिर परत राधका तनक देर की रै गइ बात।

पती मदन मोहन रति राधा संकेतन तक पौंचे जात।।4।।

राधामुग्धमुखारविंदमधुपस्त्रैक्यमौलिस्थली–

नेपथ्योचितनीलरत्नमवनीभारावतारक्षमः ।

स्वच्छंदं व्रजसुंदरीजनमनस्तोषप्रदोषश्चिरं

कंसध्वंसनधूमकेतुरवतु त्वां देवकीनंदनः ।।५।।

राधा के मौं कमल कौ भौंरा नील मुकुट मनि जग प्यारे।

कंस सरीकन कौ बध करबे स्याम बनत पुच्छल तारे।।

पुँडरीकाक्छ कमल से खिल रए भगतन हित करबे वारे।

पूरी करें 'मधुप' अबलाखा राधा आकांक्छा वारे।।5।।

अपनी वांछा हरि की कांक्छा होबै जस जग पूर में।

राधा माधौ की छवि देखौ 'मधुप' गीत गोबिंद में।।पाँच।।

इति श्रीगीतगोविंदे अभिसारिकावर्णने साकांक्षपुंडरीकाक्षो नाम पंचमः सर्गः

षष्ठ सर्ग

छठा सर्ग– धन्य बैकुंठ कुंकुम

आर्या

अथ तां गंतुमशक्तां चिरमनुरक्तां लतागृहे दृष्टवा ।

तच्चरितं गोविंदे मनसिजमंदे सखीहि ।।१।।

बोल न पा रइं चल नइं पा रइं हाँतन कछू बता रइं।

राधा की जा हालत देखत सखी एक घबरा गइं।।

इँदयारे में काँटे रिपटा उपटा गिनें न दोंची।

कुंजन में कान्हां जां बैठे सखी उतइ जा पौंची।।

बिरह बिथा बौराए बिहारी सें बा बिनती कर रइ।

माधौ बचा लेओ राधा खों पीरन परी तड़प रइं।।

गुणकरीरागेण रूपकताले अष्टपदी– 12

पश्यति दिशि दिशि रहसि भवंतम् ।

तदधरमधुरमधूनि पिबंतम् ।।

नाथ हरे जय नाथ हरे सीदति राधा वासगृहे ।।ध्रुव०।।१।।

सूनर परी अकेली राधा चारउ दिसा निहारें।

बन संकेत खेल खेलत के घर में आंखें फारें।।

चड़ चड़ पवन तुरंग गंध चंदन की चल चल आबै।

चलै चौकड़ी चाल चेतबे ई कौ चित्त न चाबै।।

चूमा लेत कबै आकें हरि दरसन कौ मन कर रइं।
माधौ बचा लेओ राधा खों घर में परीं तड़प रइं।।1।।

त्वदभिसरणरभसेन वलंती ।
पतति पदानि कियंति चलंती ।। नाथ हरे०।।२।।

मोहन सें मिलबे की मंसा मनई मन मनवाबें।
उठत चार डग निगत मूरछा खाकें मइं गिर जाबें।।
तन के ताप ताप लो तप रइ अँसुअन तप फल दै दो।
दै न सकौ बरदान, जिया कौ दान जान बल दै दो।।
देह दूबरी हो रइ राधा सोसत अब मैं मर रइ।
माधौ बचा लेओ राधा खों घर में परीं तड़प रइं।।2।।

विहितविशदबिसकिसलयवलया ।
जीवति परमिह तव रति कलया ।।नाथ हरे०।।३।।

नए अखुवा कमलन की डोंड़ी गजरा गोकें पैरत।
मिलबे की आसा में जी रइ हाँतन गजरा हेरत।।
जो सुख की आसा अबलासा करें, न करौ निरासा।
पिया पिया कत रआत पपीरा, राखत उऐ पियासा।।
बाजू बँदे भुजन में हरि के बाजूबंद निरख रइं।
माधौ बचा लेओ राधा खों घर में परीं तड़प रइं।।3।।

मुहुरवलोकितमंडनलीला ।

मधुरिकुरहमिति भावनशीला ।। नाथ हरे०।।४।।

कभउं बना फूलन के कुंडल कानन पैर निहारत।

देखौ अब मैं बनी कनइया सेखी भाव बगारत।।

'मधुप' हिये हिरदेस बिराजे दरसन कर मन भर रइं।

माधौ बचा लेओ राधा खों घर में परीं तड़प रइं।।4।।

त्वरितमुपैति न कथमभिसारम् ।

हरिरिति वदति सखीमनुवारम् ।।नाथ हरे०।।५।।

जल्दी मिलबे खों राधा के मन में भाव हुलस रए।

कै रइ ठिया बताओ जाउं मइं माधव काए न आ रए।।

आंखें खेल बोल बोलत वे आ रए हरि जा कै रइं।

माधौ बचा लेओ राधा खों घर में परीं तड़प रइं।।5।।

श्लिष्यति चुंबति जलधरकल्पम् ।

हरिरुपगत इति तिमिरमनल्पम् ।।नाथ हरे०।।६।।

देखत राधा घनें बादरन के जैसौ इँदयाव।

आ गए हैं घनस्याम करों का मन कौ मिलन मनाव।।

अपनइ आप करत बतकारौ अपनौ चूमा लै रइं।

माधौ बचा लेओ राधा खों घर में परीं तड़प रइं।।6।।

भवति विलंबिनि विगलितलज्जा ।

विलपतारोदति वासकसज्जा ।।नाथ हरे०।।७।।

घर में उमदा सेज सजा कें फूलन कें सिंगारत।

जान अबेर पिया सें मिलबे ठांड़ी दोर निहारत।।

सरम छोड़ दइ बासक सज्जा जैसीं राधा लग रइं।

माधौ बचा लेओ राधा खों घर में परीं तड़प रइं।।7।।

श्रीजयदेवकवेरिदमुदितम् ।

रसिकजनं तनुतामतिमुदितम् ।।नाथ हरे०।।८।।

कबि जैदेव रूप में आकें लिखे गीत गोबिंद ने।

आनँद रस रसिकन की बानी भरी गीत गोबिंद ने।।

'मधुप' गीत गोबिंद ने सबकी मनसा पूरी कर दइ।

माधौ बचा लेओ राधा खों घर में परीं तड़प रइं।।8।।

विपुलपुलकपालिरू स्फीतसीत्कारमंत–

र्जनितजडिम काकुव्याकुलं व्याहरंती ।

तव कितव विधायामंदकंदर्पचिंतां

रसजलनिधिमग्ना ध्यानलग्ना मृगाक्षी ।।१।।

जो सिंगार समुंदर बुड़की लगा तपस्या कर रइ।
हिन्नी बिरह बावरी हँस रइ सिकत सी सी कर रइ।।
कपटी तक कै डारत हरि सें 'मधुप' सरम नइं लग रइ।
माधौ बचा लेओ राधा खों घर में परीं तड़प रइं।।1।।

अंगेष्वाभरणं करोति बहुशः पत्रेपि संचारिणि
प्राप्तं त्वां परिशंकते वितनुते शय्यां चिरं ध्यायति ।
इत्याकल्पविकल्पतल्परचनासंकल्पलीलाशत–
व्यासक्तापि विना त्वया वरतनुर्नैषा निशां नेष्यति ।।२।।

खड़खड़ात सूके पत्ता ऐरौ सुन गेरउं हेरत।
आ रए हरी सजा कें सेजे अपनें गानें पैरत।।
सोसत सोसत दिन कड़ जाबै रात न काटें कट रइ।
माधौ बचा लेओ राधा खों घर में परीं तड़प रइं।।2।।

किं विश्राम्यसि कृष्णभोगिभवने भांडीरभूमिरुहि
भ्रातर्यासि न दृष्टगोचरमितः सानंदनंदास्पदम् ।
राधाया वचनं तदध्वगमुखान्नंदांतिके गोपतो
गोविंदस्य जयंति सायमतिथिप्राशस्त्यगर्भा गिरः ।।३।।

ई भांड़ैर रूख के नैचें नइं ठैरत गैलारे।

करिया साँप बने वे बैठे राधा मन डस डारे।।

होय अबाई! स्याम मुख सुन कें राधा 'मधुप' सहम गइं।

माधौ बचा लेओ राधा खों घर में परीं तड़प रइं।।3।।

मिलबे हरि उत्कंठा मन में इतइ बने बैकुंठ में।

राधा माधव की छवि देखौ 'मधुप' गीत गोबिंद में।।छः।।

इति श्रीगीतगोविंदे वासकसज्जावर्णने सोत्कंठधन्य वैकुंठो नाम षष्ठः सर्गः

सप्तम् सर्ग

सप्तम् सर्ग– नागर नारायण

अत्रांतरे च कुलटाकुलवर्त्मपात–

संजातपातक इव स्फुटलांछनश्रीः ।

वृंदावनांतरमदीपयदंशुजालै–

र्दिक्सुंदरीवदनचंदनबिंदुरिंदुः ।।१।।

जैसें गैल छिनारन रोकी बड़ी बेर कड़ पाई।

पूरब दिसा माथ दएं चंदा सुघर नारि सी आई।।

बिंद्रावन की रौनक देखत राधा बिलखत कै रइं।

साजौ भलौ डूब कें मरबौ अपनी सखियन ठग गइ।।1।।

आर्या–

प्रसरति शशधरबिंबे विहित विलंबे च माधवे विधुरा ।

विरचितविविधविलापं सा परितापं चकारोच्चौः ।।२।।

चंदा कौ उजयारौ राधा मन में पीर जगा रओ।

छिटक जुँदइया दमकत कउं कउं मन नइं धीर बँदा रओ।।

बिरहिन राधा जोर जोर सें रो रइं बिलखत जा रइं।

साजौ भलौ डूब कें मरबौ अपनी सखियन ठग गइ।।2।।

मालवरागे एकतालीताले अष्टपदी – 13

कथित समयेपि हरिरहह न ययौ वनम् ।

मम विफलमिदममलरूपमपि यौवनम् ।।

यामि हे कमिह शरणं सखिजनवचनवंचिता ।।ध्रुव०।।१।।

सखियां हमें बता रइं तीं कै धीर धरौ हरि आ रए।

निरखत निगत तकत बन बिलखत नैना नीर बुआ रए।।

उमर उमंग जुआनी जर कें जार जार भइ जा रइ।

साजौ भलौ डूब कें मरबौ अपनी सखियन ठग गइ।।1।।

यदनुगमनाय निशि गहनमपि शीलितम् ।

तेन मम ह्रदयमिदमसमशरकीलितम् ।। यामि ०।।२।।

बियावान में मिले बिहारी मैं आकें बन बस गइ।

कस कें मारे बान काम ने तरकस खाली कर दइ।।

कसकत तरकत 'मधुप' काम की हरकत ने हद कर दइ।

साजौ भलौ डूब कें मरबौ अपनी सखियन ठग गइ।।2।।

मम मरणमेव वरमिति वितथकेतना ।

किमिति विषहामि विरहानलमचेतना ।।यामि ०।।३।।

लगी बिरह की आग आग के अँगरा बन बन जा रए।
अँगरा बन जा रए तन जारत, मन जारत मन जा रए।।
ग्याता गेय ग्यान गोबिंद बिन देह सुन्न भइ जा रइ।
साजौ भलौ डूब कें मरबौ अपनी सखियन ठग गइ।।3।।

मामहहविधुरयति मधुरमधुयामिनी ।
कापि हरिमनुभवति कृतसुकृतकामिनी ।।यामि ०।।४।।

बन बसंत मनरात–रात घबरात रअत सब रातन।
भरभरात मन फरफरात फिर बरबरात दिन रातन।।
'मधुप' भाग उनके का कइए स्याम रंग जो रँग रइ।
साजौ भलौ डूब कें मरबौ अपनी सखियन ठग गइ।।4।।

अहह कलयामि वलयादिमणि भूषणम् ।
हरिविरहदहनवहनेन बहुदूषणम् ।।यामि ०।।५।।

बड़े सौक सें पैरे हमने जिनमें रतन जड़े हैं।
स्याम न आ रए लगत देख लए गाने दोस मड़े हैं।।
बिना पती की सिंगरी नारी सिगरी सूनी लग रइ।
साजौ भलौ डूब कें मरबौ अपनी सखियन ठग गइ।।5।।

कुसुमसुकुमारतनुमतनुशरलीलया ।

स्नगपि ह्रदि हंति मामतिविषमशीलय ।।यामि ०।।५।।

गरे डरी फूलन की माला छाती चड़ी मटक रइ।
जैसें काम बान बौछारें भीतर हिए खटक रइं।।
कन्नों कोसें तकदीरन खों निठुअइं संग न दै रइ।
साजौ भलौ डूब कें मरबौ अपनी सखियन ठग गइ।।6।।

अहमिह निवसामि नगणितवनवेतसा ।
स्मरति मधुसूदनो मामपि न चेतसा ।।यामि ०।।७।।

बेंत बौल कुंजन बन बैठी जी खों मन सें ध्याबै।
निठुअइं निठुर भए नँदलाला तनकउ मोय न चाबै।।
हरि सें मिलबे होंठ हँसे पै पांवन पर गए छाले।
हियौ पसीजै कै नइं पिलगै जौ जिउ हरी हवा लै।।
का बन गइ बन के बनमाली खबर न बनमाली लइ।
साजौ भलौ डूब कें मरबौ अपनी सखियन ठग गइ।।7।।

हरिचरणशरणजयदेवकविभारती ।
वसतु ह्रदि युवतिरिव कोमलकलावती ।।यामि ०।।८।।

कबि जैदेव भाव हरि ही के सरसुति कला संवारी।
सरस सराग सरग बारा चौबीस अठकड़ीं प्यारी।।

पोरन पोरन रस बरसत सुन मन की कली बिगस रइ।
साजौ भलौ डूब कें मरबौ अपनी सखियन ठग गइ।।8।।

तत्किं कामपि कामिनीमभिसृतः किं वा कलाकेलिभ–
र्बद्धो बंधुभिरंधकारिणि वनाभ्यर्णे किमुद्भ्राम्यति ।
कांतः क्लांतमना मनागपि पथि प्रस्थातुमेवाक्षमः
संकेतीकृतमंजुबंजुललताकुंजेपि यन्नागतः ।।१।।

बेंत कुंज सूनौ कान्हा बिन कीनों कितै चले गए।
इँदयारे में गैल भूल कउं हँसी मसखरन फँस गए।।
मोरी घाइं 'मधुप' निगबे का डग डग मुसकिल पर गइ।
साजौ भलौ डूब कें मरबौ अपनी सखियन ठग गइ।।1।।

अथागतां माधवमंतरेण सखीमियं वीक्ष्य विषादमूकाम् ।
विशंकमाना रमितं कयापि जनार्दनं दृष्टवदेतदाह ।।२।।

गइ ती सखी स्याम खों लैबे रीते हाँतन आकें।
ठांड़ी हो गइ मौंगी मौंगी राधा कत घबरा कें।।
फँस गए हरी सजीवर ठांड़ी कौनउं हमें दिखा रए।
साजौ भलौ डूब कें मरबौ अपनी सखियन ठग गइ।।2।।

वसंतरागे एकतालीताले अष्टपदी– 14

स्मरसमरोचितविरचितवेशा ।

गलितकुसुमदलविलुलितकेशा ।।

कापि चपला मधुरिपुणा ।

विलसति युवतिरधिकगुणाा ।।ध्रुव०१।।

कामदेव सें लरबे जीके गानें गरे चमक रए।

बँदे केस जूरा भए ढीले फूला गुँथे बिथुल गए।।

हारी सी सकोच में ठांड़ी ऐसे लच्छन लग रए।

मो सें नौंनी को बा चंचल जीनों हरी बिलम रए।।1।।

हरिपरिरंभणवलितविकारा ।

कुचकलशोपरि तरलितहारा ।। कापि च ०।।२।।

बेर बेर हरि से मिलबे खों ही के भाव हुलस रए।

पैरे हार गरे के छाती कलसन ऊपर हल रए।।

ऐसे लगत स्याम के हाँतन मिलबे कलस मचल रए।

मो सें नौंनी को बा चंचल जीनों हरी बिलम रए।।2।।

विचलदलक लिताननचंद्रा ।

तदधरपानरभसकृततंद्रा ।। कापि च ०।।३।।

ओंठन कौ रस पियो पिया ने आंखन आलस भर गए।
चंदा से मौं पे लट लटकत सोभा और बढ़ा रए।।
'मधुप' जियै हरि हाँत संवारत ऊ के भाग बदल गए।
मो सें नौंनी को बा चंचल जीनों हरी बिलम रए।।3।।

चंचलकुंडलदलितकपोला ।
मुखरितरसनजघनगतिलोला ।।कापि च ०।।४।।

गोरे गाल घिसत कानन के कुंडल हलत रगड़ रए।
करदोनीं पैजनियां कर रइं झन झन झनन झपड़ रए।।
मनचल मचल करत छल चल चल मन आनंद छलक रए।
मो सें नौंनी को बा चंचल जीनों हरी बिलम रए।।4।।

दयितविलोकितलज्जितहसिता ।
बहुविधकूजितरतिरसरसिता ।। कापि च ०।।५।।

पिया से परदा कैसें होबै मौं सें तौ कत जा रइ।
बातें बना बना बिन बोलत सरमत जात लजा रइ।।
ऊपर सें हँस हँस कें बोलत खोलत भेद न खुल रए।
मो सें नौंनी को बा चंचल जीनों हरी बिलम रए।।5।।

विपुलपुलकपृथुवेपथुभंगा ।

श्वसितनिमीलितविकसदनंगा ।। कापि च ०।।६।।

रोंम रोंम ठांड़ौ भओं जी कौ ठांड़ी हल हल कँप रइ।
लामी लामी हर साँसन सें आंखें ऊ की झंप रइं।।
मदन मनोरथ पूरे हो गए मन आनंद उमग रए।
मो सें नौंनी को बा चंचल जीनों हरी बिलम रए।।6।।

श्रमजलकणभरसुभगशरीरा ।
परिपतितोरसि रतिरणधीरा ।। कापि च ०।।७।।

सोउत पिया की छाती चड़कें लरबे खों भइ चांड़ी।
थक गओ आँग पसीना टपकत बूँदें देखत ठांड़ी।।
माधौ के हाँतन जो पौंचो मानो 'मधुप' संवर गए।
मो सें नौंनी को बा चंचल जीनों हरी बिलम रए।।7।।

श्रीजयदेवभणितमतिललितम् ।
कलिकलुषं शमयतु हरिरमितम् ।।कापि च ०।।८।।

भरो गीत गोबिंद रसइ रस रसिकन मन ने मानी।
कलजुग के पापन खों धो रइं जै जैदेव की बानी।।
जगत भगत जग जगमग जग में मगन मनइ मन हँस रए।
मो सें नौंनी को बा चंचल जीनों हरी बिलम रए।।8।।

विरहपांडुमुरारिमुखांबुज–

द्युतिरयं तिरयन्नपि वेदनाम् ।

विधुरतीव तनोति मनोभुवः

सुहृदये हृदये मदनव्यथाम् ।१।।

मोसें बिछड़े धूसर हो गइ सोभा प्यारे स्याम की।

काम सखा चंदा की किरनें ताती जैसी घाम कीं।।

मोरे हिरदें गुप गुप जा रए काँटन कैसे लग रए।

मो सें नौंनी को बा चंचल जीनों हरी बिलम रए।।1।।

गुर्जररागे एकतालीताले अष्टपदी– 15

समुदितमदने रमणीवदने चुंबनवलिताधरे ।

मृगमदतिलकं लिखति सपुलकं मृगमिव रजनीकरे ।।

रमते यमुनापुलिनवने विजयी मुरारिरधुना ।।ध्रुव०१।।

.

जगा काम चूमा ले हरि ने लगा तिलक कस्तूरी।

चंदा बीच लिखत हिन्नी सो रय न चिनार अधूरी।।

खेल खेल में काम जीत की माल गरे में डारें।

ऐसें लगत मुरारी आजउ रम रए जमुन किनारे।।1।।

घनचयरुचिरे रचयति चिकुरे तरलिततरुणानने ।

कुरबुककुसुमं चपला सुषमं रतिपतिमृगकानने ।।

रमते ०।।२।।

काम रूप हिन्नी की चुटिया करत किसन निज हाँतन।

पीरे फूल सरइया मूथे सदाबहार सुआतन।।

घने बादरन रँगी चुटइया लगत नाग ज्यों कारे।

ऐसें लगत मुरारी आजउ रम रए जमुन किनारे।।2।।

घटयति सुघने कुचयुगगने मृदमदरुचिरूषिते ।

मणिसरममलं तारकपटलं नखपदशसिभूषिते ।।

रमते ०।।३।।

कुचन किसन आकास मान कें नुंअन कें चंदा लिख रए।

नुंअन तरइयां धरत जात माला के गुरिया लग रए।।

मुतियन कनी न मुरकन पा रइ मुरकी माला धारें।

ऐसें लगत मुरारी आजउ रम रए जमुन किनारे।।3।।

जितविसशकले मृदुभुजयुगले करतलनलिनीदले ।

मरकतवलयं मधुकरनिचयं वितरति हिमशीतले ।।

रमते ०।।४।।

गदियां पकर गदूल से हाँतन हरि ककना पैरा रए।
पन्ना जड़े कमल ककनन हरि भौंरा से मड़रा रए।।
कोमल कमल फूल से माधौ अपनी भुजा पसारें।
ऐसें लगत मुरारी आजउ रम रए जमुन किनारे।।4।।

रतिगृहजघने विपुलापघने मनसिजकनकासने ।
मणिमयरसनं तोरणहसनं विकिरति कृतवासने ।।
रमते ०।।५।।

सोनें के आसन हरि सोहत करकें काम न ठैरत।
रमतन नौनें लगे बेइ आभूसन रुच सों पैरत।।
करदौनी पैरा रए कौनउं खों निज हाँत संवारें।
ऐसें लगत मुरारी आजउ रम रए जमुन किनारे।।5।।

चरणकिसलये कमलानिलये नखमणिगणपूजिते ।
बहिरपवरणं यावकभरणं जनयति ह्रदि योजिते ।।
रमते ०।।६।।

कान्हा श्रीजू पांव पलोटत और मुदित बे हो रए।
छाती पै धर कें चरनन खों रुच रुच मांउर लगा रए।।
आधे स्याम हते राधा के बाकी 'मधुप' संवारे।
ऐसें लगत मुरारी आजउ रम रए जमुन किनारे।।6।।

रमयति सुभृशं कामपि सदृशं खलहलधरसोदरे ।

किमफलमवसं चिरमिह विरसं वद सखिविकटपोदरे ।।

रमते ०।।७।।

खलबल परी काम दल बल सें चल चल मन बल घट रओ।

बल कौ लहुरौ खल कौ बलबन खलबल करत खटक रओ।।

निरस रूख के तरें तरस रइ वे गलबइयां डारें।

ऐसें लगत मुरारी आजउ रम रए जमुन किनारे।।7।।

इह रसभणने कृतहरिगुणने मधुरिपुपदसेवके ।

कलियुगचरितं न वसतु दुरितं कविनृपजयदेवके ।।

रमते ०।।२।।८।।

कबि जैदेव रस भरे मन से रस रस रस बरसा रए।

चरन सरन रए हरि गुन गा रए सरस भगति सरसा रए।।

कलजुग कौ रस छोड़ 'मधुप' तुम पियौ सरस रस सारे।

ऐसें लगत मुरारी आजउ रम रए जमुन किनारे।।8।।

नायातः सखि निर्दयी यदि शठस्त्वं दूति किं दूयसे ?

स्वच्छंदं बहुवल्लभः स रमते किं तत्र ते दूषणम् ?

पश्याद्य प्रियसंगमाय दयितस्याकृष्यमाणं गुणै–

रुत्कंठार्तिभरादिव स्फुटदिदं चेतः स्वयं यास्यति ।।१।।

बेदरदी ठग रए जी ती खों मन के भौंरा हो रए।
मन मोरौ अकुलात न जानत कांहो कें का गो रए।।
सखी मोय मन में जा लग रइ हरि आ रए सकारे।
ऐसें लगत मुरारी आजउ रम रए जमुन किनारे।।1।।

देशवराडगे रूपकताले अष्टपदी – 16

अनिलतरलकुलवलयनेन ।
तपति न सा किसलयशयनेन ।।
सखि या रमिता वनमालिना ।।ध्रुव०।।१।।

पौंन चलत कँप जात कमल के जैसे जिनके नैना।
नइ नइ कोंपें फूलन की सेजन पै आंख लगै ना।।
बता सखी बा कौन दुखारी हरि की आंखन बस रइ।
बनमाली के संगै रैकें का हम घाइं तरस रइं।।1।।

विकसितसरसिजललितमुखेन ।
स्फुटति न सा मनसिज विशिखेन ।। सखि या० २।।

फूले कमल दलन सी हँस रइ जी की नौंनी मुइयां।

हरि सँग हँसत ग्वालिनी मिल रइ मैं जा पूंछत गुइयां।।

काम बान की आँचन कैसी बची न काए झुलस रइ।

बनमाली के संगै रैकें का हम घाइं तरस रइं।।2।।

अमृतमधुरमृदुतरवचनेन ।

ज्वलति न सा मलयजपवनेन ।।

।। सखि या० ३।।

बोल बोल रस घोल बोल रइ इतरा इतरा डोलत।

डोल डोल दिल खोल खोल कोउ ऊकी पोल न खोलत।

हरि के मीठे बोल सुनत का मलय हवा नइं डस रइ।

बनमाली के संगै रैकें का हम घाइं तरस रइं।।3।।

स्थलजलरुहरुचिकरचरणेन ।

लुठति न सा हिमकरकिरणेन ।।

।। सखि या० ४।।

धरती कमल होत जैसी बा बनी ऐंन सुकमार।

रँगी स्याम के रंग खेल रए हो गओ आँग हिमार।।

हाँत पांव गदूल से चंदा किरन न काए झुलस रइ।

बनमाली के संगै रैकें का हम घाइं तरस रइं।।4।।

सजलजलदसमुदयरुचिरेण ।

दलति न सा ह्रदि चिरविरहेण ।।

।। सखि या० ५।।

बिन घनस्याम लगत घन से घन घनघनात घुन घुन गइ।

जब होबें घनस्याम घनें घन स्याम साम समधुन भइ।।

रअत सदा घनस्याम संग का तन बियोग का कस रइ।

बनमाली के संगै रैकें का हम घाइं तरस रइं।।5।।

कनकनिकषरुचिशुचिवसनेन ।

श्वसिति न सा परिजनहसनेन ।।

।। सखि या० ६।।

सोनें सौ पीतांबर हरि कौ मुरली तानें दै रइ।

पिय के संग संभोग खों सुनकें सखियां तानें दै रइं ।

तानें और मसखरी सुन कें आली तौउ हरस रइ।

बनमाली के संगै रैकें का हम घाइं तरस रइं।।6।।

सकलभुवनजनवरतरुणेन ।

वहति न सा रुजमतिकरुणेन ।।

।। सखि या० ७।।

तन मन बानी भुवन पुरुस हरि हाँत न कर दो सुपरत।
अरथ धरम उर काम मोक्छ मिल गए सबरे पुरसारथ।।
कलपबिरछ के तरें बैठ कें की खों काम कसिस रइ।
बनमाली के संगै रैकें का हम घाइं तरस रइं।।7।।

श्रीजयदेवभणितवचनेन ।
प्रविशतु हरिरपि हृदयमनेन ।।
।। सखि या० ८।।

राधा ढूंड़े माधौ खों तो मिलत गीत गोबिंद में।
जो माधौ ढूंड़े राधा तो रमी गीत गोबिंद में।।
कबि जैदेव लिखी जो बानी भगतन के मन बस रइ।
बनमाली के संगै रैकें का हम घाइं तरस रइं।।8।।

मनोभवानंदन चंदनानिल
प्रसीद रे दक्षिण मुंच वामताम् ।
क्षणं जगत्प्राण विधाय माधवं
पुरो मम प्राणहरो भविष्यसि ।।१।।

पवन काम के संगी का उलटे दक्खन से आ रए।
सूनी देख मोए कुटिया पै प्रान काड़ लै जा रए।।
जाओ स्याम खों लुआ ल्याओ बा मूरत कितै बिलस रइ।

बनमाली के संगै रैकें का हम घाइं तरस रइं।।1।।

रिपुरिव सखी संवासोयं शिखीव हिमानिलो

विषमिव सुधारश्मिमर्यस्मिन् दुनोति मनोगते ।

ह्रदयमदये तस्मिन्नैवं पुनर्बलते बलात

कुवलयदृशां वामः कामो निकामनिरंकुशः।।२।।

सोसत सखियां संगै रत तीं सो सत्तुर सी सूजत।

अगल बगल लूगर सी लग रइ ठंडी हवा हिलोरत।।

बिस से बुझे बान सी, चंदा किरनें सब इमरत कत।

'मधुप' निरंकुस बिना नाथ की काम कला खों झूंकत रत।।

निरदादी हरि भले छोड़ दएं मैं तो उनकी परवस भइ।

बनमाली के संगै रैकें का हम घाइं तरस रइं।।2।।

बाधां विधेहि मलयानिल पंचबाण

प्राणान् गृहाण न गृहं पुनराश्रयिष्ये ।

किं ते कृतांतभगिनि क्षमया तरंगै–

रंगानि सिंच मम शाम्यतु देहदाहः।।३।।

मलयागिर की पौंन चाव तुम जौंन तौन अजमा लो।

काम! एक की कौन बान पाँचइ लो मार सता लो।।

जमना जम की बैन लहरियां ऐंन कसर नइं छोड़ौ।

डूबों बूड़ों मरों दाह सें अपनौ नातौ तोड़ों।।

स्याम मिले बिन घर नइं लौटों जा मन निच्चौ कर लइ।

बनमाली के संगै रैकें का हम घाइं तरस रइं।।3।।

सांद्रानंदपुरंदरादिदिविषद् वृंदैरमंदादरा–

दानम्रैर्मुकुटेंद्नीलमणिभिः संदर्शितेंदीवरम् ।

स्वच्छंदं मकरंद सुंदरगलन्मंदाकिनीमेदुरं

श्रीगोविंदपदारविंदमशुभस्कंदाय वंदामहे ।।४।।

देउतन के सिर मुकट रतन जिनहरि के चरन पलोटत।

जिन चरनन की रज लै गंगा सपरत पाप समोकत।।

नट नागर नागर नारायन सुख सागर गुन आगर।

जो मन भरो धरो सुन गागर ऐसे रूप उजागर।।

चरन सरन जी ने हरि की लइ ता की गती सुदर गइ।

बनमाली के संगै रैकें का हम घाइं तरस रइं।।4।।

संसारी कौ छोड़ भरोसौ मन रम जाय मुकुंद में।

राधा माधव की छवि देखौ 'मधुप' गीत गोबिंद में।।सात।।

इति श्री गीतगोविंदे नागरनारायणो नाम सप्तमः सर्गः

अष्टम् सर्ग

अष्टम सर्ग– विलक्षण लक्ष्मीपति

अथ कथमपि यामिनीं विनीय

स्मरशरजर्जरितापि सा प्रभाते ।

अनुनयवचनं वदंतमग्रे

प्रणतमपि प्रियमाह साभ्यसूयम् ।।१।।

जैसें तैसें कुलथत पुलथत राधाजू ने रात निकारी।

बड़े भुन्सरा बिनती कर रए ठांड़े जोरें हाँत मुरारी।।

राधा रस घोली बोली पै तानें घालत बोली।

बात सुनी अनबनी अनमनी ठोक ठोक घालत ज्यों गोली।।

कमल नैन जी नें दुख काटो जाओ उतइ के होलो।

ओरम के बतबनिया माधौ अब मो सें नइं बोलो।।

भैरवीरागे एकतालीताले अष्टपदी– 17

रजनिजनितगुरुजागररागकषायितमलसनिमेषम् ।

वहति नयनमनुरागमिव स्फुटमुदितरसाभिनिवेशम् ।।

हरि हरि याहि माधन याहि केशव मा मा वद कैतववादम् ।

तामनुसर सरसीरुहलोचन या तव हरति विषादम् ।।१।।

कितउं जगत रए लाल लाल भइं आंखें ऐसी लग रइं।
कौनउं कौ सिंगार भरो रओ अब अनुरागी हो रइं।।
कमल नैन जी नें दुख काटो जाओ उतइ के होलो।
ओरम के बतबनिया माधौ अब मो सें नइं बोलो।।1।।

कज्जलमलिनविलोचनचुंबनविरचितनीलिमरूपम् ।
दशनवसनमरुणं तव कृष्ण तनोति तनोरनुरूपम् ।।
हरि०२।।

कजरारी अंखियन खों चूमो लाल ओंठ भए लीले।
रँग गए दाँत सांवरे तन के उन्ना पर गए ढीले।।
कमल नैन जी नें दुख काटो जाओ उतइ के होलो।
ओरम के बतबनिया माधौ अब मो सें नइं बोलो।।2।।

वपुरनुहरति तव स्मरसंगरखरनखरक्षतरेखम् ।
मरकतशकलकलितकलधौतलिपेरिव रतिजलेखम् ।।
हरि० ३।।

रतन देह सोनें से लिखना रती नुंअन लिख डारे।
ऐसें लगत जीत गइ होबे बा, तुम लौटे हारे।।
कमल नैन जी नें दुख काटो जाओ उतइ के होलो।
ओरम के बतबनिया माधौ अब मो सें नइं बोलो।।3।।

चरणकमलगलदलक्तकसिक्तमिदं तव ह्रदयमुदारम् ।

दर्शयतीव बहिर्मदनद्रुमनवकिसलयपरिवारम् ।।

हरि० ४।।

मांउर लगे चरन छाती धर रँगे हाँत जा कै रए।

फिर से लरबे की मनसा लएं छतियन पत्ता हँस रए।।

कमल नैन जी नें दुख काटो जाओ उतइ के होलो।

ओरम के बतबनिया माधौ अब मो सें नइं बोलो।।4।।

दशनपदं भवदधरगतं मम जनयति चेतसि खेदम् ।

कथयति कथमधुनापि मया सह तव वपुरेतदभेदम् ।।

हरि०५।।

औरन नें दाँतन सें काटे लाल ओंठ जा कै रए।

मो में तो में भेद न राधा कत के भाव कितै गए।।

कमल नैन जी नें दुख काटो जाओ उतइ के होलो।

ओरम के बतबनिया माधौ अब मो सें नइं बोलो।।5।।

बहिरिव मलिनतरं तव कृष्ण मनोपि भविष्यति नूनम् ।

कथमथ वंचयसे जनमनुगतमसमशरज्व दूनम् ।।

हरि०६।।

जैसें ऊपर लगत सांवरे बैसइ भीतर कारे।
छलिया मनछल छील छील छल छल छलनी कर डारे।।
कमल नैन जी नें दुख काटो जाओ उतइ के होलो।
ओरम के बतबनिया माधौ अब मो सें नइं बोलो।।6।।

भ्रमति भवानबलाकवलाय वनेषु किमत्र विचित्रम् ।
प्रथयति पूतनिकैव वधूवधनिर्दयबालचरित्रम् ।।
हरि०७।।

करत बिलास बइयरन पचपन नारि पूतना मारी।
बन में बन बलवान अबै अबलान सताउत बिहारी।।
कमल नैन जी नें दुख काटो जाओ उतइ के होलो।
ओरम के बतबनिया माधौ अब मो सें नइं बोलो।।7।।

श्री जयदेवभणितरतिवंचितखंडितयुवतिविलापम् ।
शृणुत सुधामधुरं विबुधा विबुधालयतोपि दुरापम् ।।
हरि०२८।।

भोग और सिंगार वंचिता विसयी नारि बिलख रइ।
कबि जैदेव मधुर बानी सुरपुर ढूंड़ें नइं मिल रइ।।
कमल नैन जी नें दुख काटो जाओ उतइ के होलो।

ओरम के बतबनिया माधौ अब मो सें नइं बोलो।।8।।

तवेदं पश्यंत्याः प्रसरदनुरागं बहिरिव

प्रियापादालक्तच्छुरितमरुणद्योति हृदयम् ।

ममाद्य प्रख्यातप्रणयभरभंगेन कितव !

त्वदालोकः शोकादपि किमपि लज्जां जनयति ।।१।।

माउर लगा कें आए लाल भए ऊपर लाल दिखा रए।

मिठबोला डरवाबे आ गए काए न तनक लजा रए।।

कमल नैन जी नें दुख काटो जाओ उतइ के होलो।

ओरम के बतबनिया माधौ अब मो सें नइं बोलो।।1।।

प्रातर्नीलनिचोलमच्युतमुरः संवीतपीतांशुकं

राधायाश्चकितं विलोक्य हसति स्वैरं सखीमंडले ।

व्रीडाचंचलमंचलं नयनयोराधाय राधानने

स्वादुस्मेरमुखोयमस्तु जगदानंदाय नंदात्मजः ।।२।।

भुनसारे कें लीले माधौ पियरी हो रइं राधा।

मंद मंद सखियां मुस्का रइं दरसन काटत बाधा।।

मनचल चंचल कृसन दिगंचल राधा रूप निहारत।

राधा स्याम रूप में रँग रइ 'मधुप' ध्यान दुख टारत।।

कमल नैन जी नें दुख काटो जाओ उतइ के होलो।

ओरम के बतबनिया माधौ अब मो सें नइं बोलो।।2।।

लक्छमीजू के पती बिलक्छन मिलत जितै हर छंद में।
राधा माधव की छबि देखौ 'मधुप' गीत गोबिंद में।।

इति श्रीगीतगोविंदे खंडितावर्णने विलक्षणलक्ष्मीपतिर्नामाष्टमः सर्गः

नवम् सर्ग

नवम सर्ग– मुग्ध मुकुंद

अथ तां मन्मथखिन्नां रतिरसभिन्नां विषादसंपन्नाम् ।

अनुचिंतितहरिचरितां कलहांतरितामुवाच रहसि सखी ।।

गुर्जररागे रूपकताले अष्टपदी– 18

हरिरभिसरति वहति मधुपवने ।

किमपरमधिकसुखं सखि भवने ।।

माधवे मा कुरु मानिनि मानमये ।।ध्रुवपद।।१।।

बोलन कर अपमान पती कौ फिर जो करत निहोरे।

कलहांतरिता बनी राधिका बानी रस बिस घोरे।।

सखी आन राधा सें बोली जादा मत घबरा री।

मान मानिनी मान करौ नइं माधौ मिलें मना री।।1।।

तालफलादपि गुरुमतिसरसम् ।

किं विफलीकुरुषे कुचकलशम् ।। माधवे० ।।२।।

मंगल कलस सजा कें धर लए काए अमंगल चाबैं।

सौंप सांवरे के हाँतन में जनम सुफल हो जाबै।।

ताड़फलन से कर्रे कुच कलसान और तरसा री।

मान मानिनी मान करौ नइं माधौ मिलें मना री।।2।।

कति न कथितमिदमनुपदमचिरम् ।

मा परिहर हरिमतिशयरुचिरम् ।। माधवे० ।।३।।

मैं टेर टेर जग हेर हेर कइ बेर बेर पैलें ती।

नइं करौ सांवरे सें बिरोध चल सोध, तकत गैलें तीं।।

जौ बसंत आनंद छोड़ कें राधा घर ना जा री।

मान मानिनी मान करौ नइं माधौ मिलें मना री।।3।।

किमिति विषीदसि रोदिषि विकला ।

विहसति युवतिसभा तव सकला ।। माधवे० ।।४।।

फरो फरो चुन गईं चिरइयां पछताएं का हो रओ।

देख सुनत सब हँसत मनइ मन को की के सँग रो रओ।।

जोस होंस नइं राखो मौका छोड़ रोस नइं ल्या री।

मान मानिनी मान करौ नइं माधौ मिलें मना री।।4।।

मृदु नलिनीदलशीतलशयने ।

हरिमवयलोकय सफलय नयने ।। माधवे० ।।५।।

नैंन चौंन दिन रैंन बनो रय मन में नइं इतरा री।

धन्न नैंन हो जायं ऐंन हरि के ऐंगर बतरा री।।

पलक पांवड़े नैन बिछौना पै मन खों पौंड़ा री।

मान मानिनी मान करौ नइं माधौ मिलें मना री।।5।।

जनयसि मनसि किमिति गुरुखेदम् ।

शृणु मम वचनमनीहितभेदम् ।। माधवे० ।।६।।

चित्त चितै कें चेत जात जो जानौ चतुर चितेरौ।

हितुआ करत हेत हित की कत जितै हतीं मइं हेरौ।।

हरसाँसें का लेत राधका मन न बिखाद बढ़ा री।

मान मानिनी मान करौ नइं माधौ मिलें मना री।।6।।

हरिरुपयातु वदतु बहुमधुरम् ।

किमिति करोषि ह्रदयमतिविधुरम् ।।माधवे० ।। ७।।

ठेल ठेल नइं ठिलौ उठौ हिल मिलौ मेल मिल मिल लो।

फटो जात दिल कुलबुलात खेलौ खुलकें खिल दिल लो।।

दिल सें दिल मिल मिलें 'मधुप' हरि ऐसी बनक बना री।

मान मानिनी मान करौ नइं माधौ मिलें मना री।।7।।

श्रीजयदेवभणितमतिललितम् ।

सुखयतु रसिकजनं हरिचरितं ।। माधवे० ।।८।।

जौंन स्याम रँग रँगे घाम का जड़कारे बसकारे।
बस कारे की निगा तरें तौ काल कहैं बस का रे।।
बसकारे हो जाय जै बनी बानी सरस सुना री।
मान मानिनी मान करौ नइं माधौ मिलें मना री।।8।।

स्निग्धे यत्परुषासि यत्प्रणमति स्तब्धासि यद्रागिणि
द्वेषस्थासि यदुन्मुखे विमुखतां यातासि तस्मिन्प्रिये ।
तद्युक्तं विपरीतकारिणि तव श्रीखंडचर्चा विषं
शीतांशुस्तपनो हिमं हुतवहः क्रीडामुदो यातनाः।।१।।

राधा तुम जो हरि सें बोलत इत्ती तीखी बानी।
तुम चुपचाप हरी बतरा रए इतनइ बात नसानी।।
चंदन बिस चंदा सूरज सौ उर हिमार अंगारौ।
खेल खील सी खटकत दुख रओ गुरा गुरा पसड़ारौ।।
दूर करौ दिल की सब दुबधा मन बिन मैल बना री।
मान मानिनी मान करौ नइं माधौ मिलें मना री।।1।।

अंतर्मोहनमौलिघूर्णनचलन्मंदारविभ्रंशनः
स्तंभाकर्षणदृष्टिहर्षणमहामंत्रः कुरंगीदृशाम् ।
दृप्यद्दानवदूयमानदिविषद्दुर्वारदुःखापदां

भ्रंशः कंसरिपोर्व्यपोहयतु वः श्रेयांसि वंशीरिवः ।।२।।

मोहन मुकुट मुकुल मूंगा के मन मोहत में खिसकत।
मरे डरे जिन में जिउ पारत जो देखत मन हरसत।।
हिन्नी सुनत होत चौकन्नी दइतन के दिल दरकत।
दुख भगजात देवतन के सुन वन बाँसुरी बजत रत।।
'मधुप' चौन की बंसी सबके घरै बजै अवढारी।
मान मानिनी मान करौ नइं माधौ मिलें मना री।।2।।

मन में मोद मिलै मन रम गओ मन के मुग्ध मुकंद में।
राधा माधव की छवि देखौ 'मधुप' गीत गोबिंद में।।नौ।।

इति श्रीगीतगोविंदे कलहांतरितावर्णने मुग्धमुकुंदो नाम नवम् सर्गः

दशम् सर्ग

दशम सर्ग– चतुर चतुर्भुज

अत्रांतरे मसृणरोषवशामपार–

निःश्वासनिःसहमुखीं समुपेत्य राधाम् ।

सव्रीडमीक्षितसखीवदनां दिनांते

सानंदगदगदमिदं हरिरित्युवाच ।।१।।

मन में भारी रोस भरें लामी हरसाँसें छोड़त।

दिन पहार सौ कड़ गओ राधा अपनी जिद्द न टोरत।।

कै रइ सखी न मानत निठुअइं ऐसी कैसी गुइयां।

हरि आकें इत्ते में बोले सरम उतर गइ मुइयां।।

राधा! करकें कृपा रोस तज मौं रसपान करा दो।

जिद्द छोड़ अधरन के इमरत सें मन तपन बुझा दो।।

देशवराराडिरागे अष्टताले अष्टपदी– 19

वदसि यदि किंचिदपि दंतरुचिकौमुदी

हरति दरतिमिरमतिघोरम् ।

स्फुरदधरसीधवे तव वदनचंद्रमा

रोचयतु लोचनचकोरम् ।।

प्रिये चारुशीले प्रिये चारुशीले

मुंच मयि मानमयिदानम् ।

सपदि मदनानलो दहति मम मानसं

देहि मुखकमलमधुपानम् ।।ध्रुव०।।१।।

हँसत दाँत चमकत देखे सें डर भग गओ अवढारौ।

जे नैना चकोर बन हेरे मौं चंदा उजयारौ।।

अपने नुंअन बान सें बेधौ बाँदौ चाय भुजन में।

काटौ फाँसौ चाव जो कर लो करों न एक उजर में।।

राधा! करकें कृपा रोस तज मौं रसपान करा दो।

जिद्द छोड़ अधरन के इमरत सें मन तपन बुझा दो।।1।।

सत्यमेवासि यदि सुदति ! मयि कोपिनी

देहि खरनखशरघातम् ।

घटय भुजबंधनं जनय रदखंडनं

येन वा भवति सुखजातम् ।।

प्रिये चारुशीले०।।२।।

मोरे जिउ को जिउ तुम राधे इन प्रानन कौ गानों।

चलें तुमाए इसारे पै हम मानों चाय न मानों।।

राधा! करकें कृपा रोस तज मौं रसपान करा दो।

जिद्द छोड़ अधरन के इमरत सें मन तपन बुझा दो।।2।।

त्वमसि मम भूषणं त्वमसि मम जीवनं

त्वमसि मम भवजलधिरत्नम् ।

भवतु भवतीह मयि सततमनुरोधिनी

तत्र मम ह्रदयमतियत्नम् ।।

प्रिये चारुशीले०।।३।।

लाल लाल भए नैंन रोस सें लाल लाल मन कर दो।

नैंन कटारी बान मार सब लाल लाल तन कर दो।।

कीर्ति भाल तुम नंदलाल हम तिलक भाल भर कर दो।

बाबुलाल कौ कर खयाल मन लाल, लाल भर कर दो।।

राधा! करकें कृपा रोस तज मौं रसपान करा दो।

जिद्द छोड़ अधरन के इमरत सें मन तपन बुझा दो।।3।।

नीलनलिनाभमपि तन्वि ! तव लोचनं

धार ति कोकनदरूपम् ।

कुसुमशरबाणभावेन यदि रंजयसि

कृष्णमिदमेतदनुरूपम् ।।

प्रिये चारुशीले०।।४।।

कुच कलसन रतनन की माला हामी भरत हला दो।

मान लेयं अग्या दै दइ झन झन करधनी झुला दो।।

राधा! करकें कृपा रोस तज मौं रसपान करा दो।

जिद्द छोड़ अधरन के इमरत सें मन तपन बुझा दो।।4।।

स्फुरतु कुचकुंभयोरुपरि मणिमंजरी

रंजयतु तव ह्रदयेशम् ।

रसतु रसनापि तव घनजघनमंडले

घोषयतु मन्मथनिदेशम् ।। प्रिये चारुशीले०।।५।।

धरती जमे कमल से लग रए चरनन सोभा का कउं।

ऐसे लग रओ अग्या दै दो तौ मैं माउर लगा दउं।।

राधा! करकें कृपा रोस तज मौं रसपान करा दो।

जिद्द छोड़ अधरन के इमरत सें मन तपन बुझा दो।।5।।

स्थगकमलगंजनं मम ह्रदयरंजनं

जनितरतिरंगपरभागम् ।

भण मसृणवाणि करवाणि चरणद्वयं

सरसलसदलक्तकरागम् ।।प्रिये चारुशीले०।।६।।

संसारी बिस उतर जात जिन चरनन के सुमरन सें।

पिगल जात पथरा से तन मन गति सुदरत दरसन सें।।

राधा! करकें कृपा रोस तज मौं रसपान करा दो।

जिद्द छोड़ अधरन के इमरत सें मन तपन बुझा दो।।6।।

स्मरगरलखंडनं ममम शिरसि मंडनं

देहि पद पल्लवमुदारम् ।

ज्वलति मयि दारुणो मदनकदनारुणो

हरतु तदुपाहितविकारम् ।।प्रिये चारुशीले०।।७।।

चतुरन की चतुराइ चलै का वा हरि चाल चला रए।

प्रेम पगे पद्मावति के पति कबि जैदेव बता दए।।

राधा! करकें कृपा रोस तज मौं रसपान करा दो।

जिद्द छोड़ अधरन के इमरत सें मन तपन बुझा दो।।7।।

इति चटुलचाटुपटुचारु मुवैरिणो

राधिकामधि वचनजातम् ।

जयति पद्मावतीरमणजयदेवकवि–

भारतीभणितमिति गीतम् ।। प्रिये चारुशीले०।।८।।

संका छोड़! काम गति देखत कउं नइं करत चिनारी।

तुमें छोड़ कें मोरे मन में और न ठैरत नारी।।

राधा! करकें कृपा रोस तज मौं रसपान करा दो।

जिद्द छोड़ अधरन के इमरत सें मन तपन बुझा दो।।8।।

परिहरि कृतातंके शंका त्वया सततं घन–

स्तनजघनयाक्रांते स्वांते परानवकाशिनी ।

विशति वितनोरन्यो धन्यो न कोपि ममांतरं

स्तनभरपरीरंभारंभे विधेहि विधेयताम् ।।१।।

दया करौ, निरदादी रओ सब सैबे आँग फड़क रए।

हे चंडी चंडाल बान सें मोरे प्रान तड़प रए।।

राधा! करकें कृपा रोस तज मौं रसपान करा दो।

जिद्द छोड़ अधरन के इमरत सें मन तपन बुझा दो।।1।।

मुग्धे ! विधेहि मयि निर्दयदंतदंशं

दोर्वल्लबंधनिबिडस्तनपीडनानि ।

चंडि ! त्वमेव मुदमुद्वह पंचबाण–

चांडालकांडदलनादसवः प्रयांति ।।२।।

तिरछी नाग सरी सीं भौंहें जब जीखों डस लेबैं।

राधा अधर सुदारस इमरत बानी जीवन देबैं।।

राधा! करकें कृपा रोस तज मौं रसपान करा दो।

जिद्द छोड़ अधरन के इमरत सें मन तपन बुझा दो।।2।।

शशिमुखि ! तव भाति भंगुरभ्रू–

र्युवजनमोहकरालकालसर्पी ।

तदुदितभयभंजनाय यूनां

त्वदधरसीधुसुधैव सिद्धमंत्रः ।।३।।

मौंगो मौंगो मौन तुमओ मन खों मारत जा रओ।
बोलौ पाँचव सुर कोहल सी सुनबे मन ललचा रओ।।
राधा! करकें कृपा रोस तज मौं रसपान करा दो।
जिद्द छोड़ अधरन के इमरत सें मन तपन बुझा दो।।3।।

व्यथयति वृथा मौनं तन्वि ! प्रपंचय पंचमं
तरुणि ! मधुरालपैस्तापं विनोदय दृष्टिभिः ।
सुमुखि ! विमुखीभावं तावद्विमुंच न मुंचमां
स्वयमतिशयस्निग्धो मुग्धे ! प्रियोयमुपस्थितः ।।४।।

गाल चीकनें मउअंन जैसे नाक तिली कौ फूला।
नैंन कमल से लगत दुपरिया फूल ओंठ में भूला।।
दाँत कुंदरू के फूलन से पाँचइ बान संवारत।
ऐसें लगत राधका के मौं काम साक्छात बिराजत।।
राधा! करकें कृपा रोस तज मौं रसपान करा दो।
जिद्द छोड़ अधरन के इमरत सें मन तपन बुझा दो।।4।।

बंधूकद्युतिबांधवोयमधरः स्नग्धो मधूकच्छवि–
र्गंडश्चंडि ! चकास्ति नीलनलिनश्रीमोचनं लोचनम् ।
नासाभ्येति तिलप्रसूनपदवीं कुंदाभदंति प्रिये !

प्रायस्त्वन्मुखसेवया विजयते विश्वं स पुष्पायुधः ।।५।।

मनहर चाल निहारन नीकी नैंन ऐंन गरबीले।
मौं चंदा केरन सी जाँघें भौंयं तकत मन ढीले।।
रग रग भरी कला की किस्में सरस सुरस सरसा रइं।
जैसें सरग लोक सें कौनउं उतर अफसरा आ रइ।।
राधा! करकें कृपा रोस तज मौं रसपान करा दो।
जिद्द छोड़ अधरन के इमरत सें मन तपन बुझा दो।।5।।

दृशौ तव मदालसे वदनमिंदुसंदीपनं
गतिर्जनमनोरमा विधुतरंभमूरुद्वयम् ।
रतिस्तव कलावती रुचिरचित्रलेखे भ्रवा–
वहो बिबुधयौवनं वहसि तन्वि ! पृथ्वीगता ।।६।।
स प्रीतिं तनुतां हरिः कुवलयापीडेन सार्धं रणे
राधापीनपयोधरस्मरणकृत्कुंभेन् संभेदवान् ।
पत्रे बिभ्यति मीलति क्षणमपि क्षिप्रं तदालोकनाद्
व्यामोहेन जितं जितं जितमिति व्यालोलकोलाहलः ।।७।।

कुवलापीड़ कंस कौ हाती मरतन हल्ला मच रओ।
ऊसउ राधा रूप देख कें हरि कौ हियौ हुलस रओ।।
चतुर चतुरभुज कुच कलसन लख कुवलय ध्यान करत हैं।
'मधुप' सुनत भगतन के सब दुख माधौ दूर करत हैं।।

राधा! करकें कृपा रोस तज मौं रसपान करा दो।

जिद्द छोड़ अधरन के इमरत सें मन तपन बुझा दो।।6।।

चतुर चतुरभुज नारायन मन रबै नंद के नंद में।

राधा माधव की छवि देखौ 'मधुप' गीत गोबिंद में।।दस।।

इति श्रीगीतगोविंदे मानिनीवर्णने चतुश्चतुर्भुजो नाम दशमः सर्गः

एकादशम् सर्ग

एकादश सर्ग– सानंद गोविंद

सुचिरमनुनयेन प्रीणयित्वा मृगाक्षीं
गतवति कृतवेशे केशवे कुंजशय्याम् ।
रचितरुचिरभूषां दृष्टिमोषे प्रदोषे
स्फुरति निरवसादां कापि राधां जगाद् ।।१।।

कभउं हँसी मसखरी होत हरि करत प्रेम बतकाव।
करबे सैंन कुंज में पौंचे इँदयारौ घिर आओ।।
सिंगरी रूठी राधा सें इक सखी कअत कइ कर लो।
'मधुप' उठो माधौ नों पौंचो मन के दरसन कर लो।।

वसंतरागे रूपकताले अष्टपदी– 20

विरचितचाटुवचनरचनं चरणे रचितप्रणपातम् ।
संप्रति मंजुलवंजुलसीमनि केलिशयनमनुयातम् ।
मुग्धे मधुमथनमनुगतमनुसर राधिके ।।ध्रुव०।।१।।

बेंतन के बौलन के घर में असली खेल खिलइया।

सजी सैंन खों सेज सजे बैठे मीठे बुलवइया।।

कितने करे निहोरे राधा अब तुम चरन पकर लो।

'मधुप' उठो माधौ नों पौंचो मन के दरसन कर लो।।1।।

घनजघनस्तनभारभरे दरमंथरचरणविहारम् ।

मुखरितमणिंजीरमुपैहि विधेहि मरालविकारम् ।।

मुग्धे ० ।।२।।

जा जाँघन सें जाँघनवारी करें करया वारी।

हरां हरां डग धर पैजनियां रतनन जड़ी बजा री।।

हंस चाल चल कें मोहन खों अपने बस में कर लो।

'मधुप' उठो माधौ नों पौंचो मन के दरसन कर लो।।2।।

शृणु रमणीयतरं तरुणीजनमोहनमधुरिपुरावम् ।

कुसुमसरासनशासनवंदिनि पिकनिकरे भज भावम् ।।मुग्धे ० ।।३।।

ज्वानी जोस जगाउत बिहारी की जां बजत बँसुरिया।

ढिलया जात बोल के सुनतन तन के गुरिया गुरिया।।

कामदेव की भाट कुहलिया से सुर में सुर भर लो।

'मधुप' उठो माधौ नों पौंचो मन के दरसन कर लो।।3।।

अनिलतरलकिसलयनिकरेण करेण लतानिकरंबम्।

प्रेरणमिव करभोरु ! करोति गतिं प्रति मुंच विलंबम् ।। मुग्धे ० ।।४।।

पवन झकोरन बौलन कोंपें हलरइं हौलें हौलें।

हला हला कें हाँत टेर रइं जैसे ठांड़ी डोलें।।

बेर बेर रइं टेर देर नइं करौ पीर मन हर लो।

'मधुप' उठो माधौ नों पौंचो मन के दरसन कर लो।।4।।

स्फुरितमनंगतरंगवशादिव सूचितहरिपरिरंभम् ।

पृच्छ मनोहरहारविमलजलधारममुं कुचकुंभम् ।।मुग्धे ० ।।५।।

काम हिलोरें पौंन झकोरें झौंरन झोंका जानो।

आँगन धरे जल भरे घैला उन दोइन की मानो।।

छलकत फरकत जानें का कत, कत सो बा कइ कर लो।

'मधुप' उठो माधौ नों पौंचो मन के दरसन कर लो।।5।।

अधिगतमखिलसखीभिरिदं तव वपुरपि रतिरणसज्जम् ।

चंडि रसितरशनारवडिंडिममभिसर सरसमलज्जम् ।।मुग्धे ० ।।६।।

लाज छोड़ करया करदौनी की लर बजत उवांड़ी।

जा जानत सबरी सखियन कै लरबे हो गइ ठांड़ी।।

मन में छिपे बिकार मिटा कें मन में हरि खों धर लो।

'मधुप' उठो माधौ नों पौंचो मन के दरसन कर लो।।6।।

स्मरशरसुभगनखेन सखीमवलंब्य करेण सलीलम् ।

चल वलयक्वणितैरवबोधय हरिमपि निजगतिशीलम् ।।मुग्धे ० ।।७।।

हाँतन के नों लाल काम के बानन घाइं नुकीले।

कस कें हाँत पकर कें चलियौ पांव न धरियौ ढीले।।

घुँगरू की धुन सें हरि कौ मन अपने मन में भर लो।

'मधुप' उठो माधौ नों पौंचो मन के दरसन कर लो।।7।।

श्रीजयदेवभणितमधरीकृतहारमुदासितवामम् ।

हरिविनिहितमनसामधितिष्ठतु कंठतटीमविरामम् ।।मुग्धे ० ।।८।।

कबि जैदेव लिखी जो कबता, माला है मनियन की।

उदासीन जनियंन के लाने गरे हार गुनियन की।।

पड़ सुन सीख गीत गोबिंद के पने कंठ में धर लो।

'मधुप' उठो माधौ नों पौंचो मन के दरसन कर लो।।8।।

सा मां द्रक्ष्यति वक्ष्यति स्मरकथां प्रत्यंगमालिंगनैरू

प्रीतिं यास्यति रंस्यते सखि समागत्येति चिंताकुलः ।

स त्वां पश्यति वेपते पुलकयत्यानंदति स्विद्यति

प्रत्युद्गच्छति मूर्छति स्थिरतमः पुंजे निकुंजे प्रियः ।।१।।

इँदयारी कुंजन में माधौ जाने का का घोकत।
राधा आ रइं, तक बतया रइं खेलन कत जा सोसत।।
कँप कँप जात ध्यान में बैठी चिंता जाकें हर लो।
'मधुप' उठो माधौ नों पौंचो मन के दरसन कर लो।।१।।

अक्ष्णोर्निक्षिपकज्जलं श्रवणयोस्तापिच्छगुच्छावलीं
मूर्ध्नि श्यामसरोजदामकुचयोः कस्तूरिकापत्रकम् ।
धूर्तानामभिसारसत्वरहृदां विष्वंनिकुंजे सखि !
ध्वांतं नीलनिचोलचारुसदृशां प्रत्यंगमालिंगति ।।२।।

गरें कमल की माला कानन भारक आंखन काजर।
करिया उन्नन सौ इँदयारौ ढाँकत आँग उजागर।।
कस्तूरी तिलकन की सुगंद सें अपनौ हिरदै भर लो।
'मधुप' उठो माधौ नों पौंचो मन के दरसन कर लो।।2।।

काश्मीर – गौरवपुषामभिसारिकाणा–
माबद्धरेखमभितो मणिमंजरीभिः ।
एतत्तमालदलनीलतमं तमिस्रं
तत्प्रेमहेमनिकषोपलतां तनोति ।।३।।

केसरिया रँ रँगी रँगीली मनि मंजरियंन धार।
सोनें खों कस पै कसबे ज्यों करत उपाव सूनार।।

इँदयारे में प्रेम परख लो हिए कसौटी कस लो।

'मधुप' उठो माधौ नों पौंचो मन के दरसन कर लो।।3।।

हारावलीतरलकांचनकांचिदाम –

केयूरकंकणमणिद्युतिदीपितस्य ।

द्वारे निकुंजनिलयस्य हरिं निरीक्ष्य

व्रीडावतीमथ सखी निजगाद् राधाम् ।।४।।

चूमत सोनें की करदौनी ककना कानन कोर।

पैर गरे में माला राधा ठांड़ी कुंजन दोर।।

एक सखी राधा नों आकें कै रइ जल्दी कर लो।

'मधुप' उठो माधौ नों पौंचो मन के दरसन कर लो।।4।।

वराटिरागे अडवताले अष्टपदी – 21

मंजुतरकुंजतलकेलिसदने ।

विलस रतिरभसहसितवदने ।।

प्रविश राधे ! माधवसमीपमिह ।।ध्रुव०।।१।।

जौवन जंग उमंग राधका अँग रँग रग रग रँग रइ।

ढूंड़त ढँग कौ संग मिलै कुंजें हरि रँग में पग रइ।।

बँग रइ जौन करौ जा पूरी पूजै आस तुमारी।

हेरें बाट निकुंज बिराजे राधा रमन बिहारी।।1।।

नवभवदशोकदलशयनसारे ।

विलस कुचकलशतरलहारे ।। प्रविश ०।।२।।

मन छल छल मन जात, कलस मइं चंचल माला मलकत।

हुलसत फुलकत बिलसत कुलकत मन की मन, मन झलकत।।

मिटा सोक, असोक के पत्तन, रोक न मन खों प्यारी।

हेरें बाट निकुंज बिराजे राधा रमन बिहारी।।2।।

कुसुमचयरचितशुचवासगेहे ।

विलस कुसुमसुकुमारदेहे ।।प्रविश ०।।३।।

फूलन तुलत फूल सौ जौ तन फूलन सेजें हरसत।

खिलें खिलखिला मन के फूला नाहक मन में हड़सत।।

हिलौ मिलौ हरि के मन फूला, फूल, फूल बन जा री।

हेरें बाट निकुंज बिराजे राधा रमन बिहारी।।3।।

मृदु चलमलयपवनसुरभिशीते ।

विलस रसलविललितगीते ।।प्रविश ०।।४।।

हरां हरां हौलें हौलें मलयाचल हवा सुरक रइ।

मंद सुगंद झोंक के लगतन मन की कली तरक रइ।।
हास बिलास बिगास प्रकासौ गाओ राग सिंगारी।
हेरें बाट निकुंज बिराजे राधा रमन बिहारी।।4।।

विततबहुवल्लिनवपल्लवघने ।
विलस चिरमिलितपीनजघने ।।प्रविश ०।।५।।

नां कौ मां कौ का कां कां कौ मिलै प्रेम रस बांकौ।
नए नए पत्तन कुंज हरीरी मिलें हरी री झांकौ।।
अँग अँग मिले मिलन से मिल जा प्रभू प्रेम पा जा री।
हेरें बाट निकुंज बिराजे राधा रमन बिहारी।।5।।

मधुमुदितमधुपकुलकलितरावे ।
विलस दशनरभसरसभावे ।।प्रविश ०।।६।।

फूले फूलन कौ रस, बतरस, उतइ कामरस भारी।
रसिकन कौ रस सरस प्रेम रस मिलें मिलन रसधारी।।
'मधुप' भाव रस लुट रओ रस–रस लूटौ रस, रसवारी।
हेरें बाट निकुंज बिराजे राधा रमन बिहारी।।6।।

मधुरतरपिकनिकरनिनदमुखरे ।
विलस दशनरुचिरुचिरशिखरे ।।प्रविश ०।।७।।

दाँत पाँत चमकात दमक रइ दाँत पाँ दुतिकारी।
भाँत भाँत आनंद पाँत दमकात बात रस झारी।।
'मधुप' गूँज कानन में गूँजत कोहल बानी प्यारी।
हेरें बाट निकुंज बिराजे राधा रमन बिहारी।।7।।

विहितपद्मावतीसुखसमाजे ।
कुरु मुरारे ! मंगलशतानि ।।
भणितजयदेवकविराजराजे ।। प्रविश ०।।८।।

पदमावती प्रेम रस पुलकत कबि जैदेव उचारत।
राधा–माधौ, माधौ–राधा, राधा रमन पुकारत।।
मंगल करत 'मधुप' के मंगल मंगल मंगलकारी।
हेरें बाट निकुंज बिराजे राधा रमन बिहारी।।8।।

त्वां चित्तेन चिरं वहन्नयमतिश्रांतो भृशं तापितः
कंदर्पेण च पातुमिच्छति सुधा संबाधबिंबाधरम् ।
अस्यांकं तदलंकुरु क्षणमिह भ्रूक्षेपलक्ष्म्यास्तव–
क्रीते दास इवोपसेवितपदांभोजे कुतः संभ्रमः ।।१।।

राधा चित्त चोर चित धरिकें स्याम काम के शर कें।
दोइ थके कुँदरू से औंठन जाओ सुदा रस भर कें।।

चितवन के चाकर खों ना कर औरन 'मधुप' भुवां री।

हेरें बाट निकुंज बिराजे राधा रमन बिहारी।।1।।

सा ससाध्वससानंदं गोविंदे लोललोचना ।

सिंजानमंजुमंजीरं प्रविवेश निवेशनम् ।।२।।

मन की मनचल, तन की चंचल, उठ चल, चल–चल नइं छल।

सुनत चलीं चलतन मनि झनकत, हिलमिल, तिलमिल, झिलमिल।।

पल पल गिनत हाँत मल मल हरि दिल अलि कुल किलकारी।

हेरें बाट निकुंज बिराजे राधा रमन बिहारी।।2।।

वराडीरागे रूपकताले अष्टपदी– 22

राधावदनविलोकनविकसितविविधविकारविभंगम् ।

जलनिधिमिव विधुमंडलदर्शनतरलिततुंगतरंगम् ।।

हरिमेकरसं चिरमभिलषितविलासम् ।

सा ददर्श गुरुहर्षवशंवदवदनमनंगनिवासम् ।।ध्रुव०।।१।।

स्याम तकत राधा चकोर खों राधानँद नंदन खों।

राजा संपति राम मगन भए देख जुगल चंदन खों।।

जैसें समुँद हिलोरें हँसबें देखत चंद्रकलन खों।

समरस अंग अनंग मन भरो देख मदन मोहन खों।।1।।

हारममलतरतारमुरसि दधतं पररम्य विदूरम् ।

स्फुटतरफेनकदंबकरंबितमिव यमुनाजलपूरम् ।।

हरि०।।२।।

ऐंन फसूकर मिलो जमुन जल जैसो गजरा पैरें।

चमकत हार दिखात हेरतन तनकउ निगा न ठैरें।।

गो कें अपने हाँतन गजरा पैरा दए अपने मोहन खों।

समरस अंग अनंग मन भरो देख मदन मोहन खों।।2।।

श्यामलमृदुलकलेवरमंडलमधिगतगौरदुकूलम् ।

नीलनलिनमिव पीतपरागपटलभरवलयितमूलम् ।।

हरि०।।३।।

लीले कमल फूल पै जैसें कन पराग लएं पीरौ।

फर्र फर्र फर्रात स्याम पीतंबर धीरौ धीरौ।।

राधा दाँत उँगरिया दाबें 'मधुप' न कछू कहन खों।

समरस अंग अनंग मन भरो देख मदन मोहन खों।।3।।

तरलदृगंचलचलनमनोहर – मदनजनितजनरागम् ।

स्फुटकमलोदरखेलितखंजन – युगमिव शरदि तडागम् ।।

हरि०।।४।।

जिनकी तक नैनन की कोरें जुवतिन के मन फूलत।
स्याम कल कुख पै कौंड़ीरा से दोउ नैना झूलत।।
'मधुप' सरद रितु खिले फूल उर भरे ताल कमलन कौ।
समरस अंग अनंग मन भरो देख मदन मोहन खों।।4।।

वदनकमकपरिशीलन मीलितमिहिरसमकुंडलशोभम् ।
स्मितरुचिरुचिरसमुल्लसिताधरपल्लवकृतरतिलोभम् ।।
हरि०।।५।।

कमल दलन बखसीस बाँटबे मिल सूरज मुस्का रए।
राधा रमनी रमन बिहारी, दिनकर दिन से लग रए।।
कानन कुंडल राग बड़ा रए रबि रथ मग भूलन खों।
समरस अंग अनंग मन भरो देख मदन मोहन खों।।5।।

शशिकिरणच्छुरितोदरजलधरसुंदरकुसुमसुकेशम् ।
तिमिरोदितविधुमंडलनिर्मलमलयजतिलकनिवेशम् ।।
हरि०।।६।।

स्याम मेघ तन गजरा पैरें हेरें हरि मुस्का कें।
लगत मलयगिरि बीच चंद्रमा चंदन खौर लगा कें।।
'मधुप' दुक्ख मिटबे कछु कैबे सुरबुरात औंठन खों।

समरस अंग अनंग मन भरो देख मदन मोहन खों।।6।।

विपुलपुलकभरदंतुरितं रतिकेलिकलाभिरधीरम् ।

मणिगणकिरणसमूहसमुज्ज्वलभूषणसुभगशरीरम् ।।

हरि०।।७।।

तन कँप रओं किड़किड़ा दाँत रए चड़ो कामजुर जाड़ौ।

रति की कला अधीर राधका रोंम रोंम भओ ठांड़ौ।।

मनिकंचन संजोग 'मधुप' ज्यों मिल रओ बरन बरन कौ।

समरस अंग अनंग मन भरो देख मदन मोहन खों।।7।।

श्रीजयदेवभणितविभवद्विगुणीकृतभूषणभारम् ।

प्रणमत ह्दि विनिधाय हरिं सुचिरं सुकृतोदयसारम् ।।

हरि०।।८।।

कबि जैदेव करी जा बिनती अलंकार रस सानी।

पढ़ो एक, दो पुन्न मिले लिख दए भगतन हित मानी।।

'मधुप' जुगुल रस चित्त धरौ बस और न कछू करन खों।

समरस अंग अनंग मन भरो देख मदन मोहन खों।।8।।

अतिक्रम्यापांगं श्रवणपथपर्यंतगमन–

प्रयासैनेवाक्ष्णोस्तरलतरतारं गमितयोः ।

इदानीं राधायाःि प्रयतमसमायातसमये

पपात स्वेदांबुप्रसर इव हर्षाश्रुनिकरः ।।१।।

राधा करत स्याम के दरसन तक–तक तक रइं थक गइं।

बा थकान आंखन हो कड़कें कानन ढड़कत रुक गइं।।

'मधुप' थकान पसीना बन गओ कोउ मानत अँसुअन खों।

समरस अंग अनंग मन भरो देख मदन मोहन खों।।1।।

भजन्त्यास्तलपांतं कृतकपटकंडूतिपिहित–

स्मितं याते गेहाद्बहिरवहितालीपरिजने ।

प्रियास्यं पश्यंत्याः स्मरशरवशाकूतसुभगं

सलज्जाया लज्जा व्यगमदिव दूरं मृगदृशः ।।२।।

मन मुस्कान रोक कें सखियां जब निकुंज बाहर भइं।

राधा की लज्जा लज्जा खों देखत लाज लजा गइं।।

'मधुप' चौगनी लज्जा लज्जित भगी देख मोहन खों।

समरस अंग अनंग मन भरो देख मदन मोहन खों।।2।।

जयश्रीविन्यस्तैर्महित इव मंदारकुसुमैः

स्वयं सिंदूरेण द्विपरणमुदा मुद्रित इव ।

भुजापीडक्रीडाहतकुवलयापीडकरिणः

प्रकीर्णासृग्बिंदुर्जयति भुजदंडो मुरजितः ।।३।।

जिन हाँतन कें पीड़ कुवलिया मरो कंस कौ हाती।
रकत बिंदु सिंदूर रँगे हरि हाँत बने रएं साथी।।
कलपबिरछ के फूल 'मधुप' माँगें देबें भगतन खों।
समरस अंग अनंग मन भरो देख मदन मोहन खों।।3।।

मंद मंद मुस्कात नंद सुत आनँदघन मन भर कें।
राधा–माधौ माधौ–राधा देख अंग सँग करकें।।
प्रीत योग की पीरा कौ सुख निरखत हरि हाँतन खों।
समरस अंग अनंग मन भरो देख मदन मोहन खों।।4।।

रती काम कौ रूप धरें राधा खों माधौ तक रए।
रँगरेली अठखेली लीला भाँत भाँत की कर रए।।
मानस हंसा करत किलोलें 'मधुप' प्रनाम मुकुंद खों।
समरस अंग अनंग मन भरो देख मदन मोहन खों।।5।।

मनसानँद गोबिंद सरन ले मगन रहौ आनंद में।
राधा माधव की छवि देखौ 'मधुप' गीत गोबिंद में।।ग्यारह।।

इति श्रीगीतगोविंदे सानंदगोविंदोनाम एकादशः सर्गः

द्वादशम् सर्ग

द्वादश सर्ग– सुप्रीत पीतांबर

गतवति सखिवृंतेअमंदत्रपाभरनिर्भर–

स्मरशरवशाकूतस्फीतस्मितस्नपिताधराम् ।

सरसमनसं दृष्ट्वा राधां मुहुर्नवपल्लव–

प्रसवशयने निक्षिप्ताक्षीमुवाच हरिः प्रियाम् ।।१।।

हरि राधा मौं देखें लज्जा ओंठन पै मुस्का रइ।

फूल बिछौना डरो जितै राधा की नजरें जा रइं।।

नचत मान्स माया के कए में देखौ ई माया खों।

एक महाजोगी जोगेसुर तक जोगमाया खों।।

हरि बोले छिन भर जे नजरें जो मोरी हो जाबें।

दुइ की दुनियां मिटनइ है जब नर नारायन बन जाबै।।१।।

विभासरागे एकतालीताले अष्टपदी– 23

किसलयशयनतले कुरु कामिनि चरणनलिनविनिवेशम् ।

तव पदपल्लववैरिपराभवमिदमनुभवतु सुवेशम् ।।

क्षणमधुना नारायणमनुगतमनुसर मां राधिके ! ध्रुवपद।।१।।

कौंरे होत फूल पात जा सेजन भरी ठसक है।

चरन कमल राधा के कौमल उनसें कठन महक है।।

धर दो चरन सेज पै राधा उए पतौ पर जाबै।

दुइ की दुनियां मिटनइ है जब नर नारायन बन जाबै।।1।।

करकमलेन करोमि चरणमहमागमितासि विदूरम् ।

क्षणमुपकुरु शयनोपरि मामिव नूपुरमनुगतिशूरम् ।।

क्षण०।।२।।

पूजत अपनें परम पूज्ज खों खबर पुरानी करकें।

पांव पलोटत पारवती कत ध्यान धरें संकर कें।।

हारइ हार हार गइ राधा निगतन पांव पिरा रए।

आओ मिटांव हार पांवन की हम निज हाँत दबा दएं।।

पैजनियां उतार कें धर दो तब मन की सुन पाबें।

दुइ की दुनियां मिटनइ है जब नर नारायन बन जाबै।।2।।

वदनसुधानिधिगलितममृतमिव रचय वचनमनुकूलम् ।

विरहमिवापनयामि पयोधररोधकमुरसि दुकूलम् ।।

क्षण०।।३।।

इमरत कथा सुने बिन मोरे मन की तपन न जाबै।

कैबे वारे की जा कइ सुन सुनत जात मुसकाबैं।।

चंदन से मौं वारी राधा इमरत बचन सुना दो।

मन में जो झंडाल बरत बा मन की तपन बुझा दो।।

कै दो, ऊपर के परदा हमे अपने हाँत हटाबें।

दुइ की दुनियां मिटनइ है जब नर नारायन बन जाबै।।3।।

प्रियपरिरंभणरभसवलितमिव पुलकितमन्यदुरवापम् ।

मदुरसि कुचकलशं विनिवेशय शोषय मनसिजतापम् ।।

क्षण०।।४।।

पिया और पीतम कौ मन जो मन सें मिल–मिल जाबै।

भगत और भगवान बीच में फिर को आड़ें आबै।।

हरि के चित सें चित्त मिलाकें, 'मधुप' चेत चित पाबें।

दुइ की दुनियां मिटनइ है जब नर नारायन बन जाबै।।4।।

अधरसुधारसमुपनय भामिनि ! जीवय मृतमिव दासम् ।

त्वयि विनिहितमनसं विरहानलदग्धवपुषमविलासम् ।। क्षण०।।५।।

अवलासी अबला अबिलासी खों बनात सबिलासी।

बा अबला साँसी है सबला नातर निपट बला सी।।

बिरह ज्वाल जर मरे डरे खों जो जीवन मिल पाबै।

दुइ की दुनियां मिटनइ है जब नर नारायन बन जाबै।।5।।

शशिमुखि मुखर मणिरशनागुणमनुगुणकंठनिनादम् ।

श्रुतियुगले पिकरवविकले मम शमय चिरादवसादम् ।।क्षण०।।६।।

कर की धनी करधनी मनि सी सुभ कर मधुर सुना दो।
कोइल बोल सुना सिंसारी कान थकान मिटा दो।।
कर नीके कर नीकी करनी 'मधुप' धन्न हो जाबें।
दुइ की दुनियां मिटनइ है जब नर नारायन बन जाबै।।6।।

मामतिविफलरुषा विकलीकृतमवलोकितुमधुनेदम् ।
लज्जितमिव नयनं तव विरमति सृजसि वृथारतिखेदम् ।।क्षण०।।७।।

करौ सोस नइं रोस दोस जे नैना देख लजा रए।
धौरत भगत जगत जा गत भइ, मन रति खेद बड़ा रए।।
करौ 'मधुप' बिशराम तजौ सब जनम सफल हो जाबै।
दुइ की दुनियां मिटनइ है जब नर नारायन बन जाबै।।7।।

श्रीजयदेवभणितमिदमनुपदनिगदितमधुरिपुमोदम् ।
जनयचु रसिकजनेषु मनोरमरतिरसभावविनोदम् ।।क्षण०।।८।।

पग–पग रस पग जगमग–जगमग मग–मग जग जब गाबै।
डगमग मग की डगमग–डगमग पग–पग पगत पगाबै।।
कबि जैदेव गीत गोबिंद मन 'मधुप' मोद सरसाबै।
दुइ की दुनियां मिटनइ है जब नर नारायन बन जाबै।।8।।

प्रत्यूहः पुलकांकुरेण निबिडाश्लेषे निमिषेण च

क्रीडाकूलविलोकितेअधरसुधापाने कथाकेलिभिरू ।

आनंदाधिगमेन मन्मथकलायुद्धेपि यस्मिन्नभू–

दुद्भूतः स तयोर्बभूव सुरतारंभः प्रियं भावुकः ।।१।।

रती–रती रत–रत बतरस–रस जुरो सुरत संग्राम कौ।

रआत–रआत दिन–रात रआत रए और काम की काम कौ।।

अधर पान रस, पान मिलन रस, तकत सो स्यामा–स्याम कौ।

पलकें पलक गिराबौ भूली कंठ रसे रस नाम कौ।।

नेह तले तिल–तिल मिल झिलमिल जो दरसन मन पाबै।

दुइ की दुनियां मिटनइ है जब नर नारायन बन जाबै।।1।।

दोर्भ्यां संयमितः पयोधरभरेणापीडितः पाणिजै–

राविद्धो दशनैः क्षताधरपुटः श्रोणीतटेनाहतः ।

हस्तेनानमितः कचेअधरमधुस्यंदेन सम्मोहितः

कांतः कामपि तृप्तिमाप तदहो कामस्य वामा गतिः ।।२।।

राधा के हाँतन में बँद गए कुचन भार सें दब गए।

ँदाँतन नुंअन चौंटियन गड़रा गालन सब तन भर गए।।

ओंठन कौ रस पियत गाल गुल लीले–लीले पर गए।

काम कला की देख चपलता मन कुटिलाई टर गए।।

उलटा पुलटा कुलटा कुल सी बन रति रस सुख पाबैं।
दुइ की दुनियां मिटनइ है जब नर नारायन बन जाबै।।2।।

मारांके रतिकेलिसंकुलरणारंभे तया साहस–
प्रायं कांतजयाय किंचिदुपरि प्रारंभि यत्संभ्रमात् ।
निष्पंदा जघनस्थली शिथिलिता दोर्वल्लिरुत्कंपितं
वक्षो मिलितमक्षि पौरुषरसः स्त्रीणां कुतः सिद्धयति ।।३।।

रत–रत रीत–रीत रति मन बिपरीत रीति बिपरीते।
काम कला बिपरीत रीत घन सी जाँघन रस रीते।।
छाती धड़कत आंखें मींचत हाँत पांव भए ढीले।
आँग पसीना सें तर हो रओ, तन सपरे से गीले।।
पुरसन सौ पौरस पा रस कां से कामिन तन आबें।
दुइ की दुनियां मिटनइ है जब नर नारायन बन जाबै।।3।।

तस्याः पाटलपाणिजांकितमुरो निद्राकषाये दृशौ
निर्धूता धरशोणिमा विलुलितस्रस्तस्रजो मूर्द्धजाः ।
कांचीदाम दरश्लथांचलमिति प्रातर्निखातैर्दृशो–
रेभिः कामशरैस्तदद्भुतमहोपत्युर्मनः कीलितम् ।।४।।

नुअंन बना दए छाती चीनें लाल–लाल भइं आंखें।
लाली हिरा गई ओंठन की कसर न कौनउं राखें।।

उकल गए जुल्फन के गजरा करदौनी भइ ढीली।
राधाजू माधौ खों तक रइं माधौ तकत छबीली।।
स्याम रँगीले रँगीली स्यामा जान सबइ सुख पाबै।
दुइ की दुनियां मिटनइ है जब नर नारायन बन जाबै।।4।।

त्वामप्राप्य मयि स्वयंवरपरां क्षीरोदतीरोदरे
शंके सुंदरि ! कालकूटमपिबन्मूढो मृडानीपतिः ।
इत्थं पूर्वकथाभिरन्यमनसा विक्षिप्यवामांचलं
राधायाः स्तनकोरकोपरिचलन्नेत्रे हरिः पातु वः।।५।।

ऐसे लगत छीरसागर में तुमने मोखों बर लओ।
तुम नइं मिल पाईं ई के दुख संकर ने बिस पी लओ।।
ध्यान खिचौ औरउ बजाउं राधा कौ आँग उगारत।
लगा टकटकी पलकें रोकत कलसन चिची निहारत।।
स्यामा स्याम काम रति जैसी नैनन छबि रस पाबैं।
दुइ की दुनियां मिटनइ है जब नर नारायन बन जाबै।।5।।

व्यालोलः केशपाशस्तरलितमलकैः स्वेदलोलौ कपोलौ
स्पष्टा बिंबाधरश्रीः कुचकलशरुचा हारिता हारयष्टिः ।
कांचीकांचीद्गताशांस्तनजघनपदं पाणिनाच्छाद्य सद्यः
पश्यंती चात्मरूपं तदपि विलुलितं स्नग्धरेयं धुनोति ।।६।।

लटें बिथुल गइं जूरौ छूटौ भींजे गाल पसीना सें।
भरे धरे मुतियन के कलसा ऊपर जड़े नगीना सें।।
हाँतन आँग दुकाउत जात जब खुली खील करदौनी की।
स्यामा तन की सूकी माला माली खों लग रहनी की।।
अपनों रस नीकौ अपनइ नों और कितउं नइं रस पाबै।
दुइ की दुनियां मिटनइ है जब नर नारायन बन जाबै।।6।।

ईषन्मीलितदृष्टि मुग्धहसितं सीत्कारधारावशा–
दव्यक्ताकुलकेलिकाकुविकसद्दंतांशुधौताधरम् ।
श्वासोत्कंपिपयोधरोपरि परिष्वंगात्कुरंगीदृशो
हर्षोत्कर्षविमुक्तनिःसहतनोर्धन्यो धयत्याननम् ।।७।।

साँस चलत अपने सें मिलबे छाती कलस हिलोरें लेत।
ढीलौ आँग मीच रइं आंखें हिन्नी हियौ बिलोरे देत।।
सी–सी करत जबइ मौं खुल रओ दाँतन पाँत दिखाई देत।
बड़े भाग ऊके कइए जब मिलै भाग सें ऐसौ हेत।।
ऐसौ हेत रहत जी घर में स्यामा स्याम उतइ जाबैं।
दुइ की दुनियां मिटनइ है जब नर नारायन बन जाबै।।7।।

अथ सा निर्गतबाधा राधा स्वाधीनभर्तृका ।
निजगाद् रतिक्लांतं कांतं मंडनवांछया ।।८।।

खिल–खिल करत खेल खुल–खुल कें अखिल खेल के खेल खिलइया।
खास–खास का खास–खूस सबकी राखत ज्यों खबर कनइया।।
रत पति के आधीन राधका थकत स्याम सों कै रइं बोलत।
चंदा खों चितउत चकई चित चौरस अंतस के पट खोलत।।
भईं भूल भगवान भुलाबें 'मधुप' भाग बन जाबें।
दुइ की दुनियां मिटनइ है जब नर नारायन बन जाबै।।8।।

इति सहसा सुप्रीतं सुरतांते सा नितांतखिनांगी ।
राधा जगाद सादरमिदमानंदेन गोविंदम् ।।१।।

जो भगवान योग मायापति मन्मथ मन मथ डारें।
आत्माराम अनमनें कौ मन कैसें काम बिगारें।।
आत्मा में जो रमत रात दिन उदासीन जग सें रत।
ब्रिम्ह स्याम है काम जगत भ्रम प्रदमुन लरका बन रओ।।
जो–जो जाने सो मानत रएं 'मधुप' चरन रज पाबै।
दुइ की दुनियां मिटनइ है जब नर नारायन बन जाबै।।1।।

रामकरीरागे रूपकताले अष्टपदी– 24

कुरु यदुनंदन चंदनशिशिरतरेण करेण पयोधरे ।
मृगमदपत्रकमत्र मनोभवमंगलकलशसहोदरे ।।
निजगाद् सा यदुनंदने क्रीडति ह्रदयानंदने ।।ध्रुवपद०।।१।।

बिरमाजू ने सकल कला लै कलसा पाँच बना लए।
एक–एक तीनइ लोकन, दो कामदेव खों दै दए।।
उठा काम जनियंन खों दए उननें निज छाती धर लए।
तन के तन इस्तन कुच कलसन दूद पियत जग पल रए।।
कस्तूरी सें लिखौ चतोरी हिम चंदन की रज दो।
हे ब्रजचंद काम कलसा जे अपने हाँतन सज दो।।1।।

अलिकुलगंजमंजनकं रतिनायकसायकमोचने ।
त्वदधरचुंबनलंबितकज्जल उज्जवलय प्रियलोचने ।।
निज०।।२।।

पीतंबर सें उचटता फूला काम बान से लग रए।
चूमत ओंठ आंख के काजर निकर बायरें भग रए।।
लगा देव अंखियंन में काजर मन निठुराई तज दो।
हे ब्रजचंद काम कलसा जे अपने हाँतन सज दो।।2।।

नयनकुरंगतरंगविलासनिरोधकरे श्रुतिमंडले ।
मनसिजपाशविलासधरे शुभवेश निवेशय कुंडले ।।
निज०।।३।।

नैना हिन्नी बने मचल रए जानें का का कै रए।

कानन कुंडल कामदेव के ज्योरन बँदबे फिर रए।।

करो बिलास हुलास भरौ मन जो चाहौ बौ कर दो।

हे ब्रजचंद काम कलसा जे अपने हाँतन सज दो।।3।।

भ्रमरचयं रचयंतमुपरि रुचिरं सुचिरं मम सम्मुखे ।

जितकमले विमले परिकर्मय नर्मजनकमलकं मुखे ।।

निज०४।।

भलौ भेस भगवान कमल सौ भैं–भैं भौंरा भर रए।

अपने हाँत भाल जौ मोरौ काए संवार न कर रए।।

हे हरि हाँत सहारौ दैबे हमखों हामी भर दो।

हे ब्रजचंद काम कलसा जे अपने हाँतन सज दो।।4।।

मृगमदरसवलितं ललितं कुरु तिलकमलिकरजनीकरे ।

विहितकलंककलं कमलानन विश्रमितश्रमशीकरे ।।

निज०।।५।।

आदे चंदा जैसो मोरौ फूटौ भाग जगा दो।

चंदन में कस्तूरी मथ कें माथें तिलक लगा दो।।

'मधुप' सरन जब आन परो है निज चरनन की रज दो।

हे ब्रजचंद काम कलसा जे अपने हाँतन सज दो।।5।।

मम रुचिरे चिकुरे कुरु मानद मनसिजध्वजचामरे ।

रतिगलिते ललिते कुसुमानि शिखंडिशिखंडकडामरे ।।

निज०।।६।।

मोर भारकन जैसे नौंने जूरा हो गए ढीले।

कमल कनइया फूला गो दो लाल गुलाबी पीले।।

तन सज जाबै मन सज जाबै मन सें मनसिज जाबै।

मन हँस जाबै, गजबज जाबै, जग जस धुज फअराबैं।।

काम लता कुमलात धुजा फेहरा मन पूरी कर दो।

हे ब्रजचंद काम कलसा जे अपने हाँतन सज दो।।6।।

सरसघने जघने मम शंबरदारणवारणकंदरे ।

मणिरशनावसनाभरणानि शुभाशय वासय सुंदरे ।।

निज०।।७।।

प्राननाथ! कामी मन गज के ऊपर परदा डारौ।

गुफा छोड़ चरनन नों आ गओ मारौ चाय उबारौ।।

कर की धनी करधनी नीके करनी के आभूसन।

मन निरमल हो जाय आप खों अपनन जौ तन मन धन।।

नीके मन करबे के नीके गानें गुरिया कर दो।

हे ब्रजचंद काम कलसा जे अपने हाँतन सज दो।।7।।

श्रीजयदेववचसि शुभदे सदयं ह्रदयं कुरु मंडने ।

हरिचरणस्मरणामृतनिर्मितकलिकलुषज्वरखंडने ।।

निज०।।८।।

कबि जैदेव गीत गोबिंद के गीत कंठ जो धर लए।

भाव कुभाव न बन जाबें ऐसे सुभाव मन भर लए।।

किसन ध्यान कौ इमरत जीनें साँसे मन सें पी लओ।

जौ रसमय जीवन फिर ऊनें ढँग सें बिलकुल जी लओ।।

मन चंगौ हो जाय स्याम भज और काम सब तज दो।

हे ब्रजचंद काम कलसा जे अपने हाँतन सज दो।।8।।

रचय कुचयः पत्रं चित्रं कुरुष्व कपोलयो–

र्घटय जघने कांचीं मुग्धस्रजा कबरीभरम् ।

कलय वलयश्रेणीं पाणौ पदे मणिनूपुरा–

विति निगदितरू प्रीतः पीतांबरोपि तथाकरोत् ।।१।।

राधा बोली– माधौ मैं भइ पूरी तरा तुमारी।

उन्नन कें तन ढाँकौ चाव सो राखो मोय उगारी।।

तन के गानें गुरिया सज दो गोरी करौ कै कारी।

जो तुम चाओ मोइ बा मन्सा सुन पीतंबर धारी।।

पार करौ भौंजाल माथ पै हाँत धरौ फिर तज दो।

हे ब्रजचंद काम कलसा जे अपने हाँतन सज दो।।1।।

पर्यंकीकृतनागनायकफणाश्रेणीमणीनां गणे

संक्रांतप्रतिबिंबसंकलनया बिभ्रद्वपुर्विक्रियाम् ।

पादांभोरुहधारिवारिधिसुता मक्ष्णां दिदृक्षुः शतैः

कायव्यूहविचारयन्नुपचिता कूतो हरिः पातु वः ।।२।।

चरनन की सेवा में नित रत ऊखों अपनों लेखत।

पलका बने सेस के फन की मनियंन में हो देखत।।

लक्छमीजू की नाइं नाथ मोखों नजरन तर राखौ।

चरन चाकरी करत रात दिन रूप माधुरी चाखौं।।

भाव मोल बिन, भाव–भाव के भाव 'मधुप' मन भर दो।

हे ब्रजचंद काम कलसा जे अपने हाँतन सज दो।।2।।

यद्गांधर्वकलासु कौशलमनुध्यानं च यद्वैष्णवं

यच्छृंगारविवेकतत्वरचनाकाव्येषु लीलायितम् ।

तत्सर्व़ंजयदेवपंडितकवेः कृष्णैकतामात्मनः

सानंदाः परिशोधयंतु सुधियः श्रीगीतगोविंदतः ।।३।।

चाबें गीत गान विद्या के हम गायक बन जाबें।

नौरस जे साहित्त भेद कैबे लायक बन जाबें।।

नालायक लायक बनकें सब के नायक बन जाबें।

कबि जैदेव गीत गोबिंद के फलदायक फल गाबें।।

'मधुप' स्यामता मन की जाबै स्याम रंग मन रँग दो।

हे ब्रजचंद काम कलसा जे अपने हाँतन सज दो।।3।।

साध्वी माध्वीकचिंता न भवति भवतः शर्करे कर्कशासि

द्राक्षे द्रक्ष्यंति के त्वाममृत़मृतमसि क्षीरनीरं रसस्ते ।

माकंद ! क्रंद कांताधर धरणितलं गच्छ यच्छांति भावं

यावच्छृंगारसारस्वतमिहयजयदेवस्यविष्वग्वचांसि ।।४।।

मउअन की मिठास भइ फीकी करक रात मौं सक्कर।

इमरत दाख बराइ मधुर फल स्वाद होत मन चक्कर।।

जौंन नाइका के अधरन के रस नइं रस मिल पा रए।

कबि जैदेव मान नइं मानों मीठे रस सरसा रए।।

जौ रस बनो बना रस कौ रस 'मधुप' सबइ रस तज दो।

हे ब्रजचंद काम कलसा जे अपने हाँतन सज दो।।4।।

श्रीभोजदेवप्रभवस्य राधादेवीसुतश्रीजयदेवकस्य ।

पराशरादिप्रियवर्गकंठे श्रीगीतगोविंदकवित्वमस्तु ।।५।।

इति श्रीगीतगोविंदे महाकाव्ये जयदेवपंडितकृतौ सुप्रीतपीतांबरो नाम द्वादशः सर्गः

भोजदेव की पत्नी राधा की कूँखन जो भए ते।

नौंने गीत गीतगोबिंद जो कबि जैदेव ने कए ते।।

अलंकार रस कूट–कूट कें छंदन में भर दए ते।

बाँचत सुनत रसइ रस भींजत रसिक सरस रस लए ते।।

पैलउं के कबि कंठन में सब 'मधुप' समरपन कर दो।

हे ब्रजचंद काम कलसा जे अपने हाँतन सज दो।।5।।

जो सुप्रीत पीतांबर अंबर रस पी रआत आनंद में।

राधा माधौ की छवि देखौ 'मधुप' गीत गोबिंद में।।बारह।।

पं० बाबूलाल द्विवेदी

जन्म- एक जुलाई छियालीस

उपाधि-
मानस मधुप, आयुर्वेद रत्न, साहित्य रत्न

प्रकाशित पुस्तकें

बुंदेली गीत गोविंद (अनुवाद) ई बुक
भइया अपने गांव में (बुंदेली काव्य)
बानपुर विविधा(प्रधान संपा),
पराशर संहिता(अनुवाद), विशुद्ध विवाह पद्धति (संपा),

पत्रिकाओं में - कल्याण, मनन, तुलसी चेतना, धन्वंतरि,
'बुंदेली इतिहास एवं संस्कृति' एवं अन्य में आलेख।
आकाशवाणी एवं दूरदर्शन से वार्ता एवं कविताएं प्रसारित

पुरस्कार :
1- वैदिक विद्त् परिषद् ललितपुर द्वारा 2000
2- ब्राह्मण महामंडल मंडावरा द्वारा 2003
3- अ भा बुंदेली साहित्य एवं संस्कृति पुरस्कार भोपाल 2008
4- भारतीय जैन मिलन शाखा टीकमगढ द्वारा 2009
5- काशीराम वर्मा स्मृति पुरस्कार उरई 2012
6- महाकवि अवधेश पुरस्कार झांसी 2012
7- सारस्वत सम्मान, उरई 2013 एवं अन्य

निवास- ग्राम छिल्ला (बानपुर), जिला ललितपुर
मोबाइल 9838303690